

  
**सिर्वेतत्प्रभुराम**  
शैख बासयद पांहुसुहीन अम्बुल काली निलाजी कु.सि.ए.  
**दनाम**

# राजा का राजा

सरकार गोस पाक की तालीम बयान करती,  
हर इन्सान और मुरीद की जिंदगी। बदलने के लिये देहद जली किताब



इन कितने और बिल्ली किस के ?

वज्री शैख - उत्ती शैख क्या है ?

तस्खुफ, निक के तरीके

शैखरे इलाही, जुल्मानी, नूमी पढ़े

काकीनी, असली चाकी

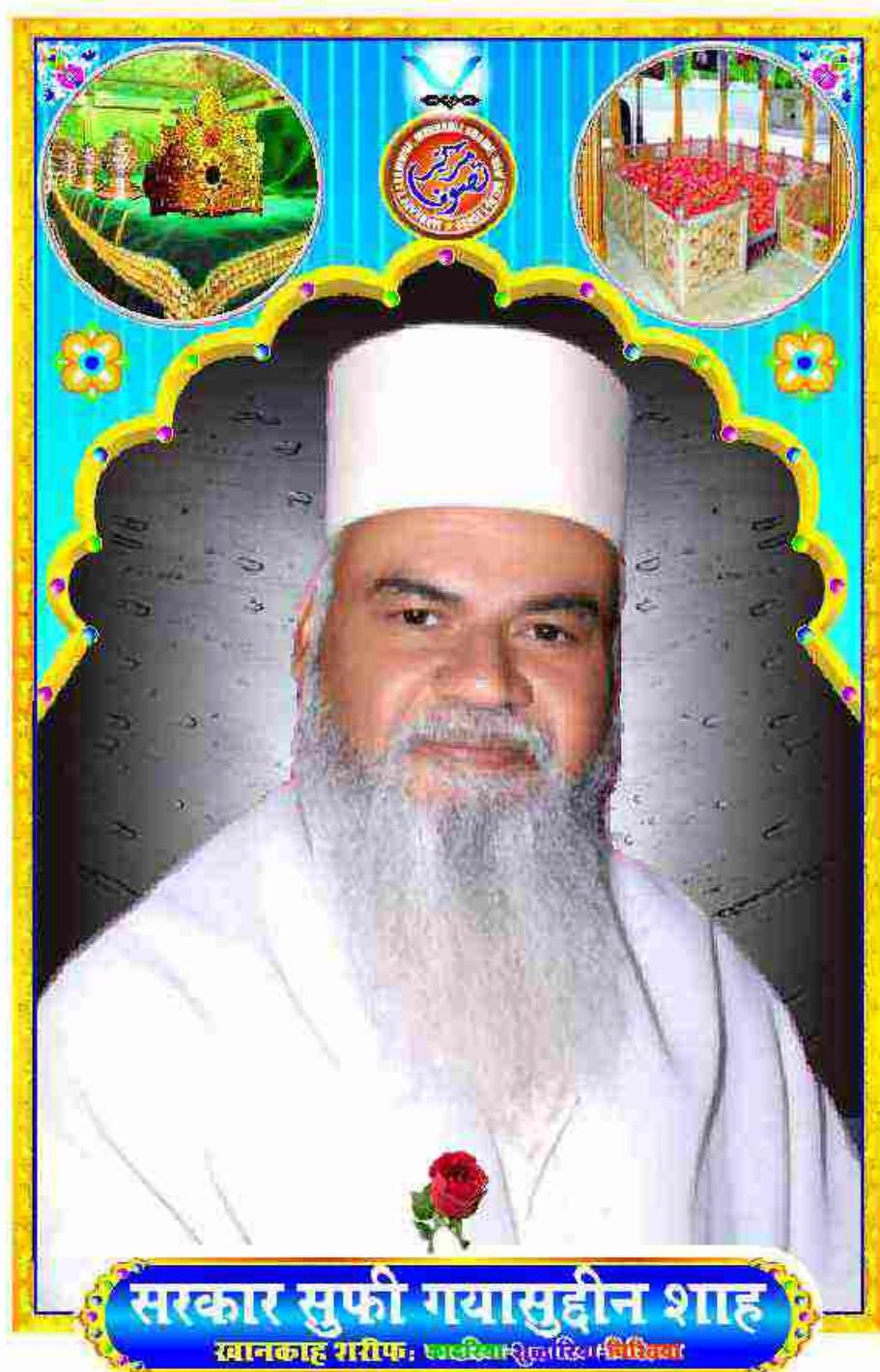
बज-तहार-आव-गीत का वर्णन

तरीकत की शपथ - योग-हव चक्रात आजल में भा।

मुतर्जिम लालिमे तस्खुफ : सरकार यक्षी नवासुहीव श्यह

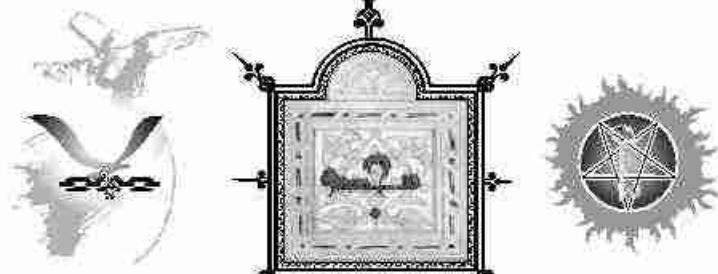
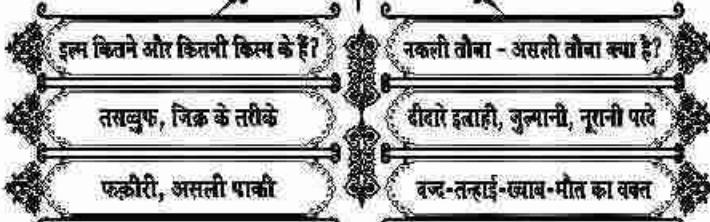
**खानकाह शरीफ:** कादरिया-थुलारिया-चिरितया  
दरगाह सरकार इवाना कृतवृद्धीन वा-इत्यावर काली (कु.सि.ए.)  
1011-E-Firat, दरगाह शरीफ, गहरीली, नई दिल्ली-110030





सरकार सुफी गयासुदैन शाह

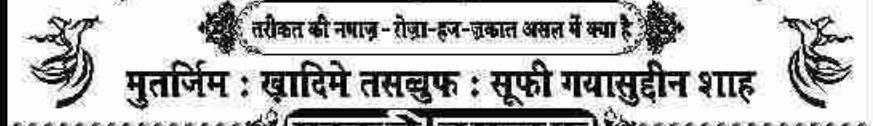
खानकाह गरिफ़: लखनऊ उत्तर प्रदेश

  
 **रिंडवाम्पात्र**  
श्रेष्ठ ग्रन्थ सौहस्रलोक अद्वितीय लिखित कुसिंह  
  
**राजा का राजा**  
सरकार गौस पाक की तातोंम दण्डन करती, हर इन्सान और मुरीद की जिंदगी बदलने के लिये बेहद जरूरी किताब  
  


इस किताबे और कितानी कित्य के हैं? नकारी तौबा - असली तौबा क्या है?

तस्वुफ़, जिक्र के तरीके दीवारे इताही, जुलानी, नूरनी पादे

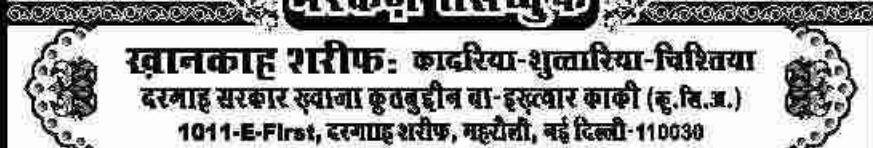
फ़कीरी, असली पाकी दर्ज-तरह-ई-खाब-मीत का वक्त



तरीकत की नगाह - रोज़ा-हव-ज़कात असल में क्या है?

**मुतर्जिम : खादिमे तस्वुफ़ : सूफी गयासुदीन शाह**

**मरकज़ो तस्वुफ़**



**खानकाह शरीफ़ :** कादरिया-भुलारिया-चिरितया  
दरबाह सरकार खानगा कुतुब्हीन बा-इस्लाम काली (ह.वि.अ.)  
1011-E-First, दरबाह शरीफ़, महोरी, नई दिल्ली-110030



2

**MARKAZE TASAWWUF ★ MARKAZE TASAWWUF ★**

SUFI SYED AMEERBUDDIN 9899943607	SUFI KHURSHEED 9654930537	SUFI ASHRAF 9711116516
SUFI SHABBIR 08080436438	SUFI MAQSOOD ALI 9350081556	SUFI AKASH 9910567808
SUFI MEHTAB 9958020975	SUFI SHAMIM 9716084184	SUFI RUSTY 9716016611
SUFI AFZAL 7503733786	SUFI MANDJ 8447570036	SUFI BEKAL 09873859056
SUFI MUSTAQEEM 09811454523	SUFI MANISH 9811630051	SUFI TOWHEED 8745976059

## फ़ेहरिस्त मज़ामीन

नम्बर	मज़ामूल	पेज नम्बर
1.	दिल से	4
2.	फिर दिल से	8
3.	पहला हिस्सा	41
4.	दुसरा हिस्सा	47
5.	तीसरा हिस्सा	50
6.	चौथा हिस्सा	60
7.	पाँचवा हिस्सा	69
8.	छठा हिस्सा	84
9.	सातवाँ हिस्सा	92
10.	आठवाँ हिस्सा	96
11.	नवाँ हिस्सा	100
12.	दसवाँ हिस्सा	107
13.	न्यारहवाँ हिस्सा	111
14.	बाहरवाँ हिस्सा	118
15.	तेहरवाँ हिस्सा	127
16.	चौठवाँ हिस्सा	130
17.	पञ्चरहवाँ हिस्सा	135
18.	सोहलवाँ हिस्सा	139
19.	सठतरवाँ हिस्सा	142
20.	अच्छाहरवाँ हिस्सा	145
21.	उन्नीसवाँ हिस्सा	151
22.	बीसवाँ हिस्सा	156
23.	इक्कीसवाँ हिस्सा	163
24.	बाईसवाँ हिस्सा	167
25.	तेईसवाँ हिस्सा	180
26.	चौबीसवाँ हिस्सा	182
27.	कुछ अशाआर	184

**दिल से \* दिल से \* दिल से**

शुरू उस के नाम से जो कड़वे और मीठे पानी के  
दरम्यान मौजूद है !

ये इस गुलाम की खुशनसीबी और करम है  
के इस गुलाम को सरकार गौस पाक ने, सरकारे दो आलम  
के अन्दर के इल्म की जो तालीम फरमाई उसका तर्जुमा  
करने का मौका अता हुआ !

“सिर्फ उल असरार” यानि “राजों का राज़”  
सरकार गौस पाक की मशहूर किताब है जिसको पढ़ना -  
समझना - अमल करना, इस गुलाम के ख्याल से हर इन्सान  
और ख़ास तौर पर हर मुरीद के लिये जरूरी है क्योंकि इस  
किताब के नाम के मुताबिक इसमें वो राज़ बयान फरमाये  
गये हैं जो पढ़ने, समझकर अमल करने पर जिंदगी बदल देने  
का असर रखते हैं ! बाकी अल्लाह तौफीक देने वाला है !

आज के दौर में जबकि हर इन्सान अपनी  
ख़ाहिशों - जरूरतों और जीने के तरीके की वजह से परेशान

4

है एसे वक्त में इस किताब का और बाकी अन्दर के इलम की और किताबों का आम लोगों तक पहुँचना बेहतर है जिससे हमें जिंदगी जीने का सही तरीका आ जाये इसीलिये मरकजे तसव्युफ पिछले काफी वक्त से, आम लोगों तक तसव्युफ की किताबें पहुँचाने की कोशिश में हैं और ये काम लगातार चल रहा है !

**किताबें छापना** – बेचना और उनसे मुनाफा कमाना यानि किताबों की तिज़ारत करना ये मरकजे तसव्युफ का काम नहीं है ये तो आम किताबें छापने वालों का काम है जो ये बिन समझे और सोचे किताबें छापते हैं के इन किताबों के पढ़ने से आम लोगों पर क्या असर होगा, गुमराही बढ़ेगी, अकल का अन्धापन बढ़ेगा या सीधी राह पर चलने का हौसला मिलेगा उन्हें तो बस अपने मुनाफे से मतलब है तो अब हम सबकी जिम्मेदारी है के हम सोच समझ कर वो ही किताबें ले – समझें जो हमें सीधी राह पर चलाये और कायम रखें !

अल – हम्दो – लिल्लाह – मरकजे तसव्युफ इस हकीकत को जानता है इसीलिये ये, वो ही किताबें आपके सामने पेश करता है जो जिंदगी को अन्दर – बाहर से पाक करके बेहतरीन बना सके !

किताब “सिर्झ उल असरार” यानि “राज़ों का राज़” का शायद हिन्दी ज़बान में ये पहला

तर्जुमा है चुंकि आजकल हिन्दी ज्यादा पढ़ी जाती है इसलिये ऐसा किया गया जब इस किताब का उर्दू से हिन्दी में तर्जुमा करने का इरादा किया गया तो सबसे पहले बहुत सारे नुस्खों में से बेहतरीन नुस्खे की तलाश की गयी, उर्दू में बेहतरीन तर्जुमा हासिल होने के बाद हिन्दी में तर्जुमा शुरू किया - जबान आम बोल चाल की चुनी गयी के सब लोगों को आसानी से समझ में आ सके और खास तौर पर इस बात का ख्याल रखा गया के सरकार गौस पाक ने जो तालीम फरमाई उसका मकसद वैसे का वैसा ही रहे !

गुजारिश ये भी है के पढ़ना होता ही समझ लेने के लिये है और समझना होता ही अमल में लाने के लिये है अगर पढ़ना सिर्फ पढ़ना रह जाये समझ और अमल में ना आये तो ऐसा पढ़ना दो कौड़ी का है बेकार है, कुरान शरीफ की आयत है !

“तुम उनकी तरह ना हो जाना जो कहते हैं हमने सुन लिया हालाँकि सुनते - सुनाते कुछ नहीं ”

इस आयत में इसी सुनने - पढ़ने की तरफ इशारा किया गया है आखिर में बासगाहे रब्बुल इज्जत में ये ही दुआ है !

❶ या रब्बुल आलामीन, हमें इस किताब को पढ़कर,  
समझकर, अमल करने की तौफीक अता फरमा ! आमीन

❷ हमें सरकारे दो आलम का, सरकार गौस पाक का  
अन्दर का इल्म अता फरमा ! आमीन

❸ हमें ऐसी जिन्दगी जीने, एसा इन्सान बनने का  
इरादा, तौफीक अता फरमा जैसी जिन्दगी और इन्सान को  
अल्लाह तआला पसन्द फरमाता है ! आमीन

❹ हमें अन्दर से पाक - साफ होने की तौफीक अता  
फरमा ! आमीन

❺ हमारी गलतियों को गुनाहों को मआफ फरमाकर  
हमें कुबूल फरमा ! आमीन

❻ हमें गुमराह करने वाली मालुमात से बचाकर,  
हकीकत का, अन्दर का इल्म अता फरमा ! आमीन

और अल्लाह तौफीक देने वाला, बेहतर  
जानने वाला है !

बे-इल्म भी हम लोग हैं गफलत भी है तारी  
अफसोस के अन्धे भी हैं और सो भी रहे हैं

शहजादे

**सव्यद अमीरुद्दीन**

1011-E- वार्ड नं.7

दरगाह शरीफ महरौली

नई दिल्ली - 110030

फोन : 09899943607

खादिमे तस्वुफ

**सूफी गयासुदीन शाह**

मरकजे तस्वुफ

दरगाह शरीफ महरौली

नई दिल्ली - 110030

फोन : 07838116286

The banner features a central emblem with the text "MARKAZE TASAWWUF" surrounded by stars and a decorative border. The banner is flanked by two stylized birds. Below the banner, the text "بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ" (Bismillah ar-Rahman ar-Rahim) is written in a decorative calligraphic style.

शुरू अल्लाह के नाम साथ-साथ जो रहमान  
भी है और रहीम भी !

सलामती, रहमत और बरकत अता हो,  
आमीन ! दिल का सुकून, तरक्की और इस दुनिया में जिंदगी  
गुजारने का सही तरीका हमारी समझ में आ जाये और हम उस  
तरीके पर अमल करके दुनिया की और रुहानी तरक्की  
हासिल कर सकें, ये इरादा, हिम्मत, और तौफीक अता हो !  
आमीन !

ए हमारे रब तू हमारे लिये इस दुनियाँ में से  
भलाइयाँ अता फरमा और आख़रत की दुनिया में भी भलाइयाँ  
अता फरमा ! आमीन -

मेरे अज़ीज, दिली दोस्त, पढ़ना, कुछ भी  
पढ़ना, होता ही समझने के लिये है वो पढ़ना दो कौड़ी का है  
जिसे समझा ना जाये बेकार है, वक्त की बरबादी है,

समझदारी नहीं है कुछ ना-समझ लोगों ने लम्बे वक्त तक पढ़ने, सिर्फ पढ़ने, सिर्फ ज़बान से पढ़ने को सवाब से जोड़ दिया और हम सब सवाब पाने के लालच के जाल में फ़ंस गये और रटने, दोहराने को ही सब कुछ समझने लगे ! याद रहे सिर्फ पढ़ने, दोहराने, रटने से कोई सवाब नहीं मिलता बेशक, समझने और अमल करने से हम अच्छे बदले के हकदार बनते हैं !

कुरान शारीफ और हदीसों के हुक्म को कुछ इस तरह से तोड़-मरोड़कर पेश किया के हम बस रटने वाले तोते बन कर रह गये !

एक लम्बे वक्त से कुरान शारीफ को सिर्फ रटने, दोहराने की रस्म बन गयी है जल्दी और तेज़ पढ़ने का फैशन हो गया है जबकि कुरान शारीफ में ही फरमाया गया है  
 (1) इसमें अकल वालों के लिये निशानियाँ हैं  
 (2) इसमें गौर और फिकर करने के लिये निशानियाँ हैं  
 (3) कुरान को ठहर-ठहर कर पढ़ा करो !

अब अगर हम समझ कर पढ़ेंगे तो गौर और फिकर भी करेंगे और गौर और फिकर करेंगे तो अकल, अच्छी अकल भी आयेगी और हम कुरान शारीफ के हुक्मों पर अमल करने के काबिल हो सकेंगे !

अगर हमने उपर दी गई कुरान की आयतों को समझ लिया है तो हम आसानी से ये भी समझ सकते हैं

के जो लोग कुरान शरीफ को बिना समझे, सिर्फ पढ़ते, दोहराते, रटते रहते हैं और जल्दी में तेज़ी से पढ़ते हैं तो वो हकीकत में कुरान शरीफ में दिये गये अल्लाह तआला के हुक्म की साफ-साफ नाफरमानी कर रहे हैं एसा क्यों हो रहा है ? ये साज़िश किसकी है ? जिसने हमें कुरआन शरीफ पढ़ने, दोहराने, रटने में तो लगा दिया लेकिन समझने और अमल करने से रोक दिया ! इसे शैतान का काम बताकर, खुद की लापरवाही को छुपाना समझदारी नहीं है !

कुरान शरीफ छापे जा रहे हैं उनके अलग-अलग तर्जुमे छापे जा रहे हैं हड्डीसों की किताबों के तर्जुमे छापे जा रहे हैं मज़्हबी किताबें लगातार नयी-नयी छप रही हैं बिक भी रही है लेकिन इन किताबों को लिखने वाले और छापने वाले इस बात से बिल्कुल बेख़बर और बे फ़िकर है के इन किताबों को आम लोग समझ भी पा रहे हैं या नहीं और समझ भी रहे हैं तो क्या समझ रहे हैं ! ये जिम्मेदारी किताब लिखने वाले और छापने वाले की है के वो इस हकीकत को अच्छी तरह जान ले के उसकी लिखी और छापी गयी किताब आम इन्सानों को किस तरफ ले जा रही है और हमारी जिम्मेदारी ये है के हम सोच समझकर अच्छी किताबों को ही पढ़ने, समझने के लिये चुनें - शुक्रिया

इसीलिये, क्योंकि अब सरकार गौस पाक

की लिखी हुई किताब “राज्ञों का राज्” आपके पास है इसे पुरा - पुरा समझने के लिये जरूरी है के हम इसमें इस्तेमाल किये हुए अलफाजों को और उनके मायनों को अच्छी तरह जान ले जिससे ये कीमती और नायाब किताब हमारे लिये फायदा देने वाली साबित हो सके ! आमीन !

ये भी जरूरी और समझने के लायक हकीकत है कि अलफाजों को खोल कर बयान किया गया है मायने भी लिखे गये हैं लेकिन अगर समझने में परेशानी हो तो जिन्दा किताब यानि अपने पीरो - मुशिद से भी समझें असली मकसद समझना है बस समझना है वरना सब बेकार है !

**अहंदियत** बनने वाली चीजों के होने का अहसास दिखना, छोड़कर अल्लाह तआला का एक सिर्फ एक होना !

**तौहीद** अल्लाह तआला की पहचान हासिल करके, उसको जान लेना, ये इस्लाम का पहला काम है इसको किये बिना इन्सान चाहे कितना भी नमाज़, रोज़ा, हज़, ज़कात करता रहे वो मुसलमान और मोमिन नहीं हो सकता !

**अस्माये तौहीद** तौहीद के नाम - अल्लाह तआला के असली नाम सात है इन सात नामों से और फिर छः नाम निकलते हैं इन सभी नामों को मिलाकर अस्माये तौहीद कहते हैं असली नाम ये हैं !

ला-एलाहा-इल-लल-लाहहू-हथ्यी-वाहिद-अज़ीज़-बुदूद  
इन से निकले हुए छः नाम ये हैं .....

हक	कहार	कथ्यूम	वहाब	मुहय्यन	बासित
----	------	--------	------	---------	-------

● **उनसियत(लगाव)** ● हकीकत के दिल के जरिये, देख लेने के बाद गवाह हो जाने से रूह को जो लुत्फ, चैन, करार मिलता है उसे उनसियत कहते हैं !

● **अहले सफ़ा** ● सरकारे दो आलम के बो खास असहाबी जो सब कुछ छोड़कर, पुरी तरह से सरकारे दो आलम के ही हो गये थे !

● **बसीरत** ● आम मायने देखने की ताकत लेकिन गहरे मायने : बो कुवत और ताकत जो अल्लाह के बलियों के दिल से निकलती है और पाक नूर से रोशन होती है इस से इन्सान हर चीज़ की हकीकत और उस चीज़ की हकीकत और उस चीज़ के अन्दर देखता है इसे पाक कुवत भी कहते हैं !

● **तजटीद** ● आम मायने : तन्हाई अकेला, गहरे मायने - इस ख्याल से के अल्लाह तआला का हक अदा करना जरूरी, बेहद जरूरी है इन्सान का अपने दिल को अभी और बाद की सभी - खूबियों और सलाह से पाक हो जाना !

● **तजल्ली** ● नूर के छुपे हुए राज़, जो सिर्फ हकीकत के दिल पर ज़ाहिर होते हैं!

● **तजल्ली ज़ात** ● अल्लाह तआला की तरफ से नाम और सिफात, गुण, ख़ासियत के वास्ते से अन्दर में, अन्दर के राज़ का खुल जाना!

● **तजल्ली सिफात** ● इन्सान का अल्लाह तआला की सिफात, गुण, ख़ासियत को अपने अन्दर कुबूल कर लेने के बाद की हालत!

● **जिस्म जिस्मानी** ● फरिश्तों की दुनिया में जो होता है वो जिस्म!

● **जिस्म जलाली** ● इससे मकसद वो जिस्म जो नज़र नहीं आता लेकिन बड़ा होना, ऊँचा होना, बुजुर्ग होना और रुहानी ताकतों को मिलाकर जो ख़ासियतें इकट्ठी हो जाती है उसे जलाली जिस्म कहते हैं!

● **हिजाबात खुलमानी** ● चाहने वाले और जिसे चाहा जा रहा है उनके बीच के परदे इसमें कोई भी हवस, जिस्म को मिलने वाली लज्जतें शामिल हैं!

**● हिजाबाते नुरानी ●**

इन्सान और अल्लाह तआला के बीच दो किस्म के परदे हैं पहली किस्म दुनिया के एश वा आराम, हवस , सोना , चाँदी , माल की चाहत के परदे हैं दुसरी किस्म के परदे नुरानी कहलाते हैं जनत का लालच, दोजख़ का डर, अकल , रुह , नूर ये सब भी इन्सान और अल्लाह तआला के बीच परदे ही हैं इन्हें हिजाबाते नुरानी कहा जाता है!

**● हक्कुल यकीन ●**

ईमान यानि यकीन का वो आखरी मकाम और हद जो अल्लाह तआला से मिल जाने वालों की आखरी हद है इस से मकसद सच्चे ईमान और यकीन से है इसकी गवाही वो लोग देते हैं जो ऊंचे और आली मकाम पर हैं ये फना - फिल - लाह यानि अल्लाह तआला में फना हो जाने का नाम है !

**● हकीकते मोहम्मदिया ●**

इसके मायने रुह की जिन्दगी और किसी भी चीज़ के जिन्दा रहने की वजह है ये ईमान वालों के दिलों की जिन्दगी है हकीकते मोहम्मदिया पैदा होने वाली चीजों के पैदा होने की वजह है !

**● रहे आज़म ●**

हकीकते मोहम्मदिया, एक नप्स जिसे सबसे पहले अल्लाह तआला ने पैदा फरमाया ख़्लीफा ऐ अकबर, इसी के लिये दुनिया में दिखने वाली चीज़े बनी इसी की बजह से, पहली अकल, ऊंची कलम, नूर, लोहे कलम जैसे नाम हैं !

● **ख़हे - रवानी** ● फरिश्तों की दुनिया में नुरानी रुहों का लिबास !

● **ख़हे सुलतानी** ● अल्लाह तआला का वो नूर जो इस ने दोनों आलम यानि आलमे लाहूत और आलमे जबरूत के बीच में रुहों को अता फरमाया !

● **ख़हे - कुदसी** ● आलमे लाहूत में नूर का लिबास !

● **रियाज़त** ● दिल को तबियत की चाहतों और ख्वाहिशात से पाक करने का तरीका !

● **सौदा अल बजा फिदु दारैन** ●

अल्लाह तआला में पुरा - पुरा फना हो जाना के कुछ भी बाकी ना रहे ना अन्दर - ना बाहर ये ही हकीकत में फक़र है !

● तरीकत ●

मुरीदों का वो रास्ता और सफर  
जो मुरीदों को अल्लाह तआला से मिलाता है और रुहानी  
तरक्की पाने का तरीका !

● तिप्पत्ति मआनी ●

आलमे लाहूत में रुह की  
पहली सुरत, जिस सुरत पर अल्लाह तआला ने इसे पैदा  
फरमाया इसे इन्साने हकीकी भी कहते हैं !

● आलम असली ●

वो आलम जिस में  
अल्लाह तआला ने नूर मोहम्मदी से सब रुहों को पैदा  
फरमाया इसे आलमे लाहूत भी कहते हैं !

● आलमे जबरूत ●

आलमे लाहूत से रुहें  
जिस दूसरे आलम में आयी उस दूसरे आलम को आलमे  
जबरूत कहते हैं आलमे जबरूत , आलमे लाहूत और  
आलमे मलकूत के बीच में है आलमे जबरूत में ही अल्लाह  
तआला के हुक्म के मुताबिक काम, होते हैं !

● आलमे हकीकत ●

ये आलमे लाहूत में नबियों  
और औलियाओं की जगह है इसके माध्यने ये हैं के ये वो  
जगह हैं जहाँ इन्सान अल्लाह तआला से मिल जाता है इसी

को अल्लाह तआला के करीब का आलम भी कहते हैं !

### ● आलमे लाहूत ●

रुहो का पहला बतन  
जहाँ वो पैदा की गयी इसी आलम में फना हुआ और दूबा  
जाता है इसी आलम में ही अल्लाह तआला से करीब हुआ  
जाता है इस आलम तक फरिश्ते नहीं पहुँच सकते हैं !

### ● आलम अल मलक ●

शाहिद होने, दिल की  
आँखों से देख लेने के बाद गवाही की दुनिया, जिस्मों की  
दुनिया, इसी आलम में रुहें जिस्मों में दाखिल होती है इसी  
का दुसरा नाम आलमे सिफली - नीचे की दुनिया भी है !

### ● इल्म अल बातिन ●

अन्दर का इल्म : दिल में  
जाहिर होने वाला, खुल जाने वाला, हकीकत का इल्म, कुछ  
लोगों का ख्याल है को बहुत सारी किताबें पढ़ लेने से जो याद  
हो जाता है वो इल्म है हकीकत में ऐसा नहीं है हकीकत में  
जिसे इल्म कहना चाहिये वो तो अन्दर दिल से जाहिर होता  
है सूफियों ने इसकी कई किस्में व्याख्या की है जैसे हकीकत  
का इल्म, अन्दर की हालत, खतरे, यकीन, खुलूस, नप्स के  
काम करने के तरीके की पहचान, तौबा की जरूरत, तौबा  
की जिम्मेदारियाँ, भरोसा, कोशिश, फना हो जाना, इल्मे  
लदुनी !

● **इलमे हकीकत** ●

अन्दर का वो इलम,  
जिससे बाहर का इलम हासिल हो जाये इसी को हासिल  
करना हर इन्सान पर फर्ज है इसी को इलमे तरीकत कहते हैं!

● **इलम अल इरफान** ●

ये इलम दिल का  
चिरग है इसी की रोशनी में इन्सान अच्छाई और बुराई को  
देख सकता है इन्सान जितना ज्यादा अल्लाह तआला की  
बादशाही, उसकी पैदा की गई दुनिया में गौर और फिकर  
करता है उतना ही ज्यादा इन्सान का जौक - शौक बढ़ता है  
और वो अल्लाह तआला की खूबसूरती को देखना चाहता है  
फिर वो अल्लाह तआला के नामों और सिफात में ज्यादा गौर  
करता है !

● **इलमे यकीन** ●

ये इलम अता होने वाला है और  
कामिल औलियाओं को और जो अल्लाह के करीब है उनको  
मिलता है इसमे इल्हाम का आना, तजल्ली का आना, नये  
राज़ों का खुलना और उन राज़ों का गवाह बन जाना शामिल  
है इस को इलमे लदुनी भी कहते हैं !

● **एन अल रुह** ●

रुह की हकीकत !

● एन उल यकीन ●

इमान - यकीन के मकामों में दूसरा मकाम, ये इल्म से जो यकीन आता है उस के बाद का मकाम है !

● फ़ानी ●

उस इन्सान को कहा जाता है जो, नफ्स जो खुशी देता है उसको देखने के बाद उसकी गवाही देने से भी, बाकी ना रहा हो !

● प़क़्क़र ●

ये तसब्बुफ में बहुत ऊँचा मकाम है जो लोग इस मकाम पर पहुँच जाते हैं वो दुनिया में रहते हुए भी, दुनिया और दुनिया की सभी चीजों से अलग हो जाते हैं और इन्हे अल्लाह के सिवा किसी की भी जरूरत नहीं रहती !

● फ़नाअ ●

इन्सान होने की सिफात को अल्लाह तआला की सिफात से बदल देना !

● कुर्दबत ●

नाम और सिफात के सहारे से इन्सान का इल्म और मआरफत - पहचान में अल्लाह तआला के नजदीक कायम हो जाना, इस तरह के कोई भी चीज़ इसके मकसूद यानि अल्लाह तआला से इसे दूर ना कर सके !

**कुवर्त** वो कुवर्त और ताकत जो हो सकने को, ना होने से, हो जाने में लाती है इसे अल्लाह तआला की सिफत भी कहते हैं !

**लिबासे अनसदी** रुहों का वो लिबास जो जिस्मों की दुनिया में अता हुआ है !

**कन्ज** गैब का खजाना : अल्लाह तआला का एक होने का मकामे अहदियत जो गैब के परदों में छुपी है !

**महत्विद्यत** इन्सान का अल्लाह तआला के सिवा हर वजूद - होने से : बे - ताअल्लुक हो जाना !

**मआरफत** उस हालत को कहा जाता है जब इन्सान अल्लाह तआला को उसके नामों और सिफात के जरिये पहचान लेता है और अल्लाह तआला उसके हर मामले में सच्चाई पैदा फरमा देता है और उस इन्सान को बुरी आदतों और उन बुरी आदतों के अन्जाम से बचा लेता है इसके बाद वो सिर्फ अल्लाह तआला का होकर रह जाता है वो "राज़ " में अल्लाह तआला से बात करता है और

हमेशा के लिये उसी हालत में रहता है इस हालत में वो सिर्फ एक को ही बयान करने वाला बन जाता है वो अल्लाह तआला के राज़ों का बयान करने वाला बन जाता है ऐसे इन्सान को अरिफ कहा जाता है !

**● मकाम ●** इन्सान की वो हालत और मरतबा जो वो तौबा, कोशिश, सबर और भरोसे जैसी इबादत से हासिल करता है रियाज़त के जरिये उसकी हालत ऊँची, और ऊँची होती जाती है जब तक वो एक हालात के जो हुक्म है उनको पुरा नहीं करता तब तक दुसरी हालत तक नहीं पहुँच पाता !

**● मुकाशफा ●** अल्लाह तआला से मिल जाने या ताअल्लुक हो जाने का नाम मुकाशफा है मुकाशफा से छुपे हुए राज़ खुल जाते हैं और इन्सान अन्दर की आँख से सब कुछ देखने लगता है !

**● नफ्से अम्मारा ●** नफ्स की वो हालत जो इन्सान को शहवत - हवस की तरफ ले जाये नफ्से अम्मारा कहलाती है याद रहे आम लोग घटिया किताबें पढ़कर कुल नफ्स को ही बुरा समझने लगते हैं ये समझदारी नहीं है समझने और कुल नफ्स को ही बुरा लिखने वाले ना समझ है नफ्स जब अम्मारा हालत में हो तब ही गुमराह करता है

अलावा सब हालतों में तारीफ के काबिल है सरासर नूर है सरकार सुलतान बाहु के अलफाजों में नफ्स की शिकायत नामद लोग किया करते हैं कुरान शरीफ में नफ्से अम्मारा का जिक्र सुरह यूसुफ में किया गया है !

**◆ नफ्से लव्वामा ◆** नफ्स की वो हालत जब इन्सान गलती करके - पछताये, शर्मिन्दा हो नफ्से लव्वामा कहलाती है !

**◆ नफ्से मुज़किकिया ◆** नफ्स की वो हालत जब इन्सान अपने को बेहतर बनाने के लिये कोशिश करे, अपने आप को रियाज़त - इबादत के जरिये धिसे, और बेहतरी पाने का हकदर बने नफ्से मुज़किया कहलाती है !

**◆ नफ्से मुलहमा ◆** नफ्स की वो हालत जब इन्सान इल्हाम पाकर (अल्लाह तआला की तरफ से इशारा पाकर) भलाई के काम करे ! नफ्से मुलहमा कहलाती है !

**◆ नफ्से मुतमईना ◆** नफ्स की वो हालत जब इन्सान को पुरा - पुरा इत्मीनान, सुकून और तसल्ली मिल जाये तब उसे नफ्से मुतमईना कहा जाता है कुरान शरीफ में नफ्स की इस हालत के लिये जनत की बशारत है!

● बूटे कुदरी ●

पाक नूर : वो नूर जिसका  
फायदा फरिश्तों के आलम में और आलमे जबरूत में मिलता  
है !

● वज्द ●

अल्लाह तआला के राज् को पाकर,  
रूह का खुशी, सुकून, इत्मीनान इख्लार करना और एसा भी  
है के जब इन्सान अल्लाह की याद में ढूब जाता है तो उसके  
दिल में इश्क की आग भड़क उठती है जिसे वो बरदाश्त  
नहीं कर पाता और बरदाश्त करने की कोशिश के बावजूद  
उसकी हालत ज़ाहिर हो जाने का नाम वज्द है !

● वजूद ●

हकीकत के बादशाह, अल्लाह तआला  
जब इन्सान पर पुरा - पुरा ग़ालिब हो जाता है और इन्सान  
का इन्सान होना फना हो जाता है उसे वजूद कहते हैं !

● विसाल ●

अल्लाह तआला से मिल जाने और  
दुनिया से जुदा हो जाने को कहा जाता है इसका कम और  
छोटा मकाम दिल की आँख से देख लेना है जब परदा उठ  
जाता है और तजल्ली पड़ती है तो सूफी को वासिल - मिल  
जाने वाला कहा जाता है !

यकीन

ईमान : हर किस्म के शक का खत्म हो जाना ये मआरफत और मुशाहदे के बिना नामुमकिन है इसकी तीन किस्में हैं :-

① इलमुल यकीन

② एनुल यकीन

③ हस्कुल यकीन



**1** फिर हमने वारिस बनाया अपने बन्दों में से चुनकर किताब का, बस इन में से कुछ अपनी जान पर जुल्म करने वाले हैं और कुछ दरम्याना रौ के हैं और कुछ नेक काम करने में आगे बढ़ जाने वाले हैं !

{ سرحد 35-फ़तिर  
आयत 32 }

◀ **तशरीह** ▶ वारिस के मायने होते हैं मालिक के मौजूद ना होने पर विरासत को संभालने वाला, बली लफज के तीन मायने होते हैं जिम्मेदार - बा-इख्त्यार और वारिस, किताब का वारिस बनाया यानि किताब के ज़ाहिरी और छुपे हुए दोनों मायनों को समझ लेने वाला और अमल करने वाला बनाया !

{ हदीस शरीف }

**2** उलमा, इल्म में नबियों के वारिस हैं आसमान वाले इन से मोहब्बत करते हैं और समन्दर की मछलियाँ कथामत तक इन के लिये दुआ करती रहेंगी !

◀ **तशरीह** ▶ उलमा आलिम से मकसद इल्मे ब्रातिन, अन्दर का इल्म रखने वालों से है और हकीकत में ये ही नबियों के वारिस हैं नबी लफज के मायने ही गैब की ख़बर रखने वाले के हैं तो नबी के वारिस अन्दर का इल्म रखने वाले ही हो सकते हैं !

3

सरकारे दो आलम ने फरमाया: क्यामत के दिन जब अल्लाह तआला अपने बन्दों को दोबारा जिन्दा करेगा तो आलिमों को बाकी लोगों से अलग कर लेगा और फरमायेगा - ऐ आलिमों मैंने अपना इल्म तुम्हारे सीनों में भरा क्योंकि मैं तुम्हें जानता था ये नूर तुम्हारे सीनों में इसलिये तो नहीं रखा गया के तुम्हें अज़ाब दिया जाये, जाओ तुम सब जन्ती हो मैंने तुम्हारे कुसूर माफ फरमा दिये।

**तशरीह** किताबों, रिवायतों से हासिल होने वाला इल्म, इल्मे सफीना या ज़ाहिरी इल्म होता है और अन्दर का, बातनी इल्म, इल्मे सीना कहलाता है तो क्योंकि हदीस शरीफ में सीने के इल्म का ही जिक्र है इससे अपने आप साबित होता है के सरकारे दो आलम के नजदीक, अन्दर का इल्म, इल्मे सीना रखने वाला ही असल में आलिम है !

तमाम तारीफे अल्लाह तआला के लिये है जिसने जन्त को इबादत करने वालों के लिये इनाम की जगह बनाया और अल्लाह तआला की पहचान हासिल कर लेने वालों के लिये अल्लाह तआला के करीब की जगह !

हदीसे कुदसी यानि अल्लाह तआला का फरमान है -

“ मैंने सब से पहले अपनी जात के नूर से मोहम्मद स.अ.व. को पैदा किया ”

और सरकारे दो आलम ने फरमाया –

“ सबसे पहले अल्लाह तआला ने मेरी रुह को पैदा फरमाया, सब से पहले अल्लाह तआला ने मेरे नूर को पैदा फरमाया, सब से पहले अल्लाह तआला ने कलम को पैदा फरमाया, सब से पहले अल्लाह तआला ने अक्ल को पैदा फरमाया ” !

इन सब चीजों का मतलब एक ही है यानि सब से पहले अल्लाह तआला ने हकीकते मोहम्मदिया को पैदा फरमाया !

इसे नूर कहा गया है क्योंकि ये जुल्मानियत से पाक है ! जैसा कि कुरआन शारीफ में अल्लाह तआला का फरमान है –

“ बेशक आया है तुम्हारे पास अल्लाह की तरफ से एक नूर और एक खुली किताब ”

{ سुरह मायदा 5  
आयत 15 }

हकीकते मोहम्मदिया को अक्ल कहा गया क्योंकि वो सबकी समझ रख सकती है ! इसे कलम कहा गया क्योंकि इसकी वजह से इल्म एक से दुसरे को पहुँचता है रुहे मोहम्मदी ही से दुनिया की शुरूआत और असल है जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया “ मैं अल्लाह से हूँ और मोमिन मुझ से है ”

आलमे लाहूत में तमाम रुहें नूरे मोहम्मदी  
से बेहतरीन बराबरी पर पैदा हुई आलमे लाहूत में इसी का  
नाम हुज्जतुल उन्स है और यही आलम इन्सान का असली  
बतन है !

जब जाते मोहम्मदी की तखलीक पर चार  
हजार साल बीत गये तो अल्लाह तआला ने मोहम्मद  
मुस्तफा स. अ. व. के पाक नूर से अर्श और बाकी तमाम  
चीजों को पैदा फरमाया और उसके बाद रुहों को  
(असफल) (नीचे) की तरफ लौटा दिया और इस आलम  
में ये रुहें जिस्मों में बदल गयी जैसा कि कुरान शरीफ में  
अल्लाह तआला का फरमान है !

“ फिर हमने लौटा दिया इसको निचली हालत की  
तरफ ”

{ سुरह تین ۹۵  
آیت ۵ }

यानि पहले इसे आलमे लाहूत से आलमे  
जबरूत की तरफ लौटाया और यहाँ इसे दोनों पाक जगहों  
के बीच जबरूत के नूर से एक लिबास पहनाया, इस  
लिबास का नाम रुहें सुलतानी है फिर रुह को इस लिबास  
के साथ आलमे मलकूत की तरफ लौटाया और यहाँ इसे  
नूरे मलकूत का लिबास पहना दिया गया इसी का नाम रुह  
रवानी है इस के बाद रुह आलमुल मुल्क की तरफ लौटी

आलमे मुल्क का लिबास पहनाया गया और यहाँ इस रुह का नाम रहे जिसमानी हो गया इस आलम में जिस बने जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला का फरमान है -

“इसी ज़मीन से हमने तुम्हें पैदा किया”

{ سُرह تاہا 20  
आयत 55 }

रुह अल्लाह तआला के हुक्म से जिस्मों में दाखिल हुई अल्लाह तआला ने फरमाया -

“और फूँक दी इस में अपनी रुह”

{ سُرह अल ۱۵  
आयत 29 }

बस जब जिस्मों से रुहों का ताअल्लुक कायम हो गया तो जो वादा करके आयी थी के “बेशक तू हमारा रब है” भूल गयी जो उन्होंने अल्लाह से जवाब में कहा था जब, तब के अल्लाह तआला ने फरमाया था -

“क्या मैं नहीं हूँ तुम्हारा रब”

{ سُرह अल ۷  
आयत 172 }

बस वो भूल जाने की बजह से यही की होकर रह गयी और अपने असली वतन को भुला दिया अल्लाह तआला जो के बेहद रहम फरमाने वाला है और इन्सान की मुश्किलों दूर करने वाला है उसने रहम वाला होने

के नाते अपनी तरफ से किताब नाज़िल की, उत्तारी, खोल दी, के इन्सान इस को पढ़कर और समझकर अपने जिंदगी के असली मकसद, हकीकत के वतन की याद कर ले ! जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया “ और याद दिलाओ इन्हें अल्लाह के दिन ” रुह को

{ سُرْحَدِ إِبْرَاهِيمَ ١٤  
آيات ٥ }

यानि वो दिन जब वो अल्लाह तआला से मिली हुई थी नबुवत और रिसालत का एक लम्बा सिलसिला चल निकला, बहुत सारे नबी, रसुल और किताबें अपने अपने वक्त पर आयीं इन सबका एक ही मकसद था के आदम की औलाद की रुह को उसका असली वतन याद आ जाये मगर बहुत कम इन्सानों को ये जौक-शौक पैदा हुआ के वो अपने असली वतन को जाये और अपने रब से मुलाकात करे नबुवत और रिसालत का ये सिलसिला हज़रत मोहम्मद मुस्तफा س.अ.व. पर खत्म हुआ आप सारे आलम को जगाने आये थे आप को हुक्म दिया गया था के दिलों को देखने का नूर दे और इन्सानों की गफ़्लत को दूर करे जैसा कि कुरान शारीफ में अल्लाह तआला का फरमान है !

“ आप फरमा दीजिये ये मेरा रास्ता है मैं तो बुलाता हूँ सिर्फ अल्लाह की तरफ, खुली हुई दलील पर हूँ ।

और वो भी, जो मेरी तरफ पैरवी करते हैं ”

देख सकना, देख लेना रुह की आँख है जो अल्लाह के बलियों के लिये मकामे नप्स – जान पर खुलती है ये रुह की आँख जाहिरी इल्म या किताबें पढ़ने से नहीं खुलती, रुह की आँख खुल जाये इसके लिये अन्दर का इल्म , इल्मे बातिन, इल्मे लदूनी चाहिये अल्लाह तआला ने कुरआन शारीफ में फरमाया “ हमने सिखाया इसे अपने पास से खास इल्म ”

{ ‘ सुहृ अल कहफ 18  
आयत 65

इन्सान के लिये जरूरी है के वो दिल की आँख रखने वाले कामिल सूफी या मुशिद जो आलमे लाहूत से बा-खबर हो इस ख़ास इल्म को हासिल करे !

ए दिली दोस्तो, होश मे आओ, तौबा करो,  
और अपने रब की बख़््रीश की तरफ चलो, तरीकत में  
दाखिल हो जाओ, इसे कूबूल करो, और रुहानी तरक्की  
करने वाले काफिले में शामिल हो जाओ अल्लाह तआला  
की ही तरफ लौटना है जल्द ही हकीकत का दरवाजा बन्द  
हो सकता है हम हमेशा के लिये इस दुनिया में नहीं आये हमें  
नप्से अम्मारा की पैरवी नहीं करनी है देखो सरकारे दो  
आलम ने क्या फरमाया –

“ मैं अपनी उम्मत के उन लोगों के लिये ग़म  
में हूँ जो आखरी जमाने में होंगे ” !

जो इल्म हमें बारगाहे खुदावन्दी से  
अता फरमाया गया उसकी दो किस्में हैं एक तो इल्मे  
ज़ाहिर यानि बाहर का इल्म है इसे शारीयत कहते हैं  
शारीयत के असली मायने हैं कि जो सरकारे दो  
आलम ने किया या करने को फरमाया या जो होते  
देखा और उसे मना नहीं फरमाया, असली शारीयत ये  
है ! लेकिन एक लम्बे वक्त में, हक्कुमत के दबाव में  
कुछ ज़ाहिरी आलिमों के अपने लालच और समझ से  
अब शारीयत नाम से एक अजीब खिचड़ी सी बन  
गयी है खुद ही शारीयत का नाम लेकर कुछ भी  
हुक्म या फतवा दे दिया जाता है अब शारीयत के  
मायने हो गये हैं के भोले-भाले मुसलमानों के  
दिमाग पर शारीयत के नाम से हुक्मत करना, उनके  
दिमागों से सोचने, फिकर करने और गौर करने की  
ताकत को ख़त्म करके उन्हें रस्मों में उलझा कर  
उनका दिमाग् कुन्द कर देना !

दुसरी किस्म का इल्म, इल्मे बातिन या  
अन्दर का इल्म कहलाता है ये ही हकीकत का इल्म  
है इसे तरीकत कहा जाता है याद रहे तरीकत जाने

विना शरीयत, असली शरीयत पुरी ही नहीं हो सकती ये वो इल्म है जिससे अल्लाह तआला की पहचान हासिल होती है और इन्सान की जिंदगी अन्दर और बाहर से बदल जाती है हर इन्सान पर ये ही इल्म हासिल करके अल्लाह तआला की पहचान हासिल करना फर्ज है इल्मे तरीकत की मंजिल ही अल्लाह तआला की पहचान हासिल करना है ! इसी इल्म की तरफ इशारा करते हुये अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमाया -

हम ने दो दरिया जारी किये  
जो मिल कर बहते हैं इनके बीच आड़ है के आपस  
में एक नहीं हो सकते !

{ سुरह رہمناں ۵۵  
آیات ۱۹-۲۰

सिर्फ किताबें पढ़ लेने से या बाहर की मालूमात इकट्ठी कर लेने से इन्सान हकीकत तक नहीं पहुँच सकता इन्सान की इबादत असली इबादत हो जाये इसके लिये अन्दर का इल्म हासिल करना जरूरी है अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ में फरमाया -

“ मैंने जिन्नात और इन्सानों को सिर्फ अपनी  
इबादत के लिये पैदा फरमाया ”

{ सुख अल जर्यात ५१  
आयत ५६ }

“ अपनी इबादत के लिये पैदा फरमाया ” आयत  
के मायने हैं के अल्लाह तआला की पहचान हासिल करें  
क्योंकि अल्लाह तआला की पहचान हासिल किये बिना  
असली इबादत हो ही नहीं सकती अल्लाह तआला की  
पहचान हासिल करने का सिर्फ एक ही तरीका है के  
इन्सान किसी भी तरह अपने आपको, अन्दर से पाक कर  
ले फिर इन्सान के हकीकत के दिल में अल्लाह तआला  
की पहचान हो जाती है ! जैसा हदीसे कुदसी यानि  
अल्लाह ने फरमाया -

“ मैं एक छुपा हुआ खजाना था मैंने  
चाहा के मैं पहचाना जाऊँ इसलिये मैंने मखलूक को  
पैदा किया के मेरी पहचान हो जाये ”!

जब अल्लाह तआला ने खुद ही फरमा  
दिया के इन्सान को अल्लाह तआला ने अपनी पहचान

के लिये पैदा फरमाया तो फिर लाज़िम है, जरूरी है के इन्सान इसी जिंदगी में अल्लाह तआला की पहचान हासिल करे ! आमीन

अल्लाह तआला की पहचान की भी दो किस्में हैं सिफात की पहचान और ज़ात की पहचान – सिफात की पहचान इस दुनिया में जिस्म के लिये बेहतर और फज़्ल है और ज़ात की पहचान आख़रत में पाक रूह के लिये नेमत साबित होती है जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमाया –

“ और हम ने तकवियत दी – ताकत दी, इसे रूह उल कुदुस से ”

{ سُورہ بکریہ ۲  
آیات ۸۷ }

पहचान जाने वाले पाक रूह से हिदायत, ताईद पाये होते हैं अल्लाह तआला की पहचान की ये दोनों किस्में सिर्फ उसी बक्त हासिल हो सकती है के इन्सान अन्दर का इल्म हासिल करने के बाद बाहर की जिंदगी बदले ! सरकारे दो आलम ने फरमाया –

“ इल्म की दो किस्में हैं एक है इल्मे लिसानी ( ज़बान का इल्म ) और ये इन्सान पर अल्लाह तआला की हुज्जत है और दुसरी किस्म इल्मे

जनानी ( दिल का इल्म ) और ये दूसरी किस्म का इल्म ही नफा और फायदा देने वाला है यानि दिल का इल्म, अन्दर का इल्म !"

अल्लाह तआला को पहचान लेने के इल्म को जान लेने का तरीका ये है बेकार रस्मों को छोड़ा जाये, दिखावे से बचा जाये, और सिर्फ अल्लाह तआला की प्रसन्द का ख्याल रखा जाये हकीकत की असली इबादत और रियाज़त कुबूल की जाये अल्लाह तआला ने कुरआन शारीफ में फरमाया -

" बस जो शख्स उम्मीद रखता है अपने रब से मिलने की तो उसे चाहिये के वो नेक अमल करे और ना शारीक करे अपने रब की इबादत में किसी को !"

{ सुरह अल कहफ ١٨  
आयत ١١٠ }

आलमे मआरफत यानि वो दुनिया जिसमें अल्लाह तआला की पहचान होती है यानि आलमे लाहूत इन्सान का असली बतन है इस दुनिया में ही पाक रूह की बेहतरीन बराबरी पर रूह पैदा होती है पाक रूह से मकसद हकीकत का कामिल इन्सान है ये तब ही ज़ाहिर हो सकता है जब हकीकत की ना टूट जाने वाली तौबा की जाये और तसव्युफ की जो

तालीम है उस पर अमल किया जाये !

कलमा “ ला एलाह इल्लल्लाह ” का लाज़िम, जरूर - हो जाना हकीकत के कामिल इन्सान के बुजूद को जाहिर कर सकता है शर्त ये है के पहले ये जिक ज़बान से, फिर हकीकत के दिल की जिंदगी से और फिर दिल से किया जाये हकीकत के कामिल इन्सान या पाक रूह का दुसरा नाम तिफ्ल मआनी यानि इनायत करने वाला पाक मासूम बच्चा भी है क्योंकि इसका ताल्लुक पाक इनायत से है इसे तिफ्ल कहने की और भी कई वजह है !

**1** पहली वजह तो ये है के पाक रूह हकीकत के दिल, कल्ब से पैदा हुई है जैसे बच्चा माँ के पेट से पैदा होता है माँ की तरह इसकी परवरिश कल्ब यानि हकीकत का दिल करता है फिर बच्चे की तरह पाक रूह परवरिश पाकर बालिग होने की उमर तक पहुँच जाती है !

**2** दुसरी वजह ये है के तालीम का सिलसिला बचपन से शुरू होता है बच्चों की तरह पाक रूह को भी अल्लाह तआला की पहचान की तालीम दी जाती है !

**3** जिस तरह बच्चा गुनाह से पाक होता है उसी तरह पाक रूह भी शिर्क, ग़फलत, दुनिया में रहने की बेहोशी से पाक होती है !

**4** जिस तरह बच्चा पाकीज़ा सुरत है इसी तरह रुह भी पाकीज़ा सुरत है यही वजह है के खाब में फरिश्ते या दुसरी पाक चीज़े बच्चे की मिसाली सूरत में नज़र आती है !

**5** अल्लाह तआला ने जन्नत बनाने की वजह को बच्चों की तरह पाक और मासूम होने की खासियत से मख्सुस किया है ! जैसा कि कुरान शरीफ में फरमाया गया है -

“ गर्दिश करते होगे इनके इर्द - गिर्द नोखैज़ लड़के जो हमेशा एक जैसे रहेंगे ”

{ सुरह वाक्या 56  
आयत 17 }

“ इन के गुलाम बच्चे अपनी खुबसूरती की वजह से ऐसे मालूम होंगे जैसे बो छुपे हुए मोती हो ”

{ सुरह तूर 52  
आयत 24 }

**6** पाक रुह को ये नाम पाकीज़ा होने और लताफत, महसुस होने लेकिन ना दिखने, की वजह से दिया गया है !

**7** पाक रुह या तिप्ले मआनी कामिल और हकीकी इन्सान है क्योंकि इसे अल्लाह तआला के साथ खास लगाव है ! जैसा के सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ बारगाहे खुदाबन्दी में मुझे एक एसा बक्त भी हासिल होता है के जिस में ना तो किसी करीबी फरिश्ते की गुंजायश होती है और ना नबी मुरसल की ! ”

नबी मुरसल से मकसद नबी करीम स.

अ.व. की बशरियत और करीबी फरिश्ते से मकसद हुजूर स.अ.व. की रुहानियत है जो कि नूर जबरूत से तख़्लीक हुई है बनी है ! जैसे फरिश्ते नूरे जबरूत से हैं इसीलिये ये फरिश्ते नूरे लाहूत में दाखिल नहीं हो सकते रसुले करीम स.अ.व. ने फरमाया !

“ बेशक अल्लाह तआला के यहाँ एक ऐसी जनत भी है जिस में ना तो कोई हूर या महल है ना बाग् बहार, ना शहद की नहरे हैं ना दुध के झरने वहाँ सिर्फ अल्लाह तआला को देख लेने की नैमत है !”

अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ कई चेहरे उस रोज़ बा-रैनक और तरो ताज़ा होंगे और अपने रब के नुर और खुबसूरती की तरफ देख रहे होंगे !”

{‘सुरह क्यामत 75  
आयत 22-23’}

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ जल्द ही तुम अपने रब को इसी तरह ज़ाहिर देखोगे जिस तरह चौहंदवीं रात के इस चाँद को देख रहे हो ”

अल्लाह तआला का फरमान है -

" अगर फरिश्ता और जिस्मानियत, जिस का होना, इस आलम में दाखिल हो तो जल जाये " और हज़रत जिब्राईल अ.स. ने फरमाया अगर मैं उंगली के पोरे के बराबर भी आगे बढ़ूँगा तो जल जाऊँगा !

ये किताब कलमा " ला - एलाह इल्लल - लाह, मोहम्मदुर रसुलुल्लाह " के हरफों की गिनती के बराबर चौबीस हिस्सों में है रात और दिन में भी चौबीस घण्टे होते हैं इसी ताल्लुक से किताब के हिस्से भी चौबीस हैं !

20 अगस्त



## पहला हिस्सा

### इन्सान की उसके असली वतन की तरफ वापसी

इन्सान दो किस्म के होते हैं - जिस्मानी  
और रुहानी !

जिस्मानी इन्सान आम है और रुहानी ख़ास,  
रुहानी इन्सान तो अन्दर का, हकीकत का, तसव्युफ का  
इल्म हासिल कर रहा है अमल कर रहा है और अपने  
असली वतन, यानि अल्लाह तआला के करीब होने की  
कोशिश कर रहा है !

जिस्मानी इन्सान की वापसी का बस एक  
तरीका है के वो तरीकत और मआरफत की राह पर चले  
जिससे ऊँचा दरजा मिल सके क्योंकि दरजों के तीन तबके हैं  
❶ आलम अल मुल्क में जनत ..... और ये  
जनते मावा है !

❷ आलमे मलकूत की जनत ..... इसे  
जनते नईम कहते हैं !

❸ आलमे जबरूत की जनत ..... इसे  
जनतुल फिरदोस कहते हैं !

ये नेमत और इनाम जिस्म के लिये है और आलिम कहे जाने वाले लोगों को ये नेमत जब तक हासिल नहीं हो सकती जब तक वो अन्दर का इलम, इलमे तरीकत के जरिये मआरफत यानि अल्लाह तआला की पहचान हासिल ना कर ले !

जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ पुरी समझदारी तो अल्लाह तआला की पहचान हासिल करना है और उस पहचान के मुताबिक अमल, अन्दर की पहचान है !”

इसी तरह सरकारे दो आलम का एक और फरमान है -

ए अल्लाह हमारे सामने हक को साफ-साफ रख दे और हक पर चलने और हक की पैरवी करने की तौफीक अता फरमा और गलत को गलत ही दिखा और इस से बचने की तौफीक अता फरमा - आमीन !

इसी तरह सरकारे दो आलम का एक और फरमान है -

“ जिसने अपने नफ्से अम्मारा को पहचान लिया और इस की मुख़ालफत की, तो यकीनन उसने अपने रब को पहचान लिया और उसकी फरमा बरदारी की !”

इसी तरह सरकारे दो आलम का एक और फरमान है -

“ जिस ने अपने नफ्स को जान लिया उसने रब को जान लिया ”

हकीकत में जो इन्सान है, वो अन्दर के इलम और इलमे तरीकत के बिना अल्लाह तआला के करीब हो ही नहीं सकता, इसे ही हकीकत का इलम कहा जाना चाहिये ये

ही हकीकत का इल्म, आलमे लाहूत में तौहीद है दुनिया में  
अल्लाह के एक होने का भरोसा और यकीन है !

और ये यकीन सोते - जागते, हर वक्त अल्लाह  
तआला को याद रखने से होता है जिस्म को जब नीद आ  
जाती है तो दिल को ज्यादा फुरसत मिलती है और वो अपने  
असली बतन की तरफ तवज्जोह करता है ये तवज्जोह या तो  
पुरी होती है या आधी अधुरी !

जैसा अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ में  
फरमाया -

“ अल्लाह तआला कब्ज करता है जानों को मौत के  
वक्त और जिन की मौत का वक्त अभी नहीं आया उन की  
रुहें नीद की हालत में रोक लेता है उन रुहों को जिनकी मौत  
का फैसला करता है और वापस भेज देता है दुसरी रुहों को  
एक खास वक्त तक के लिए, बेशक इसमें निशानियाँ हैं उन  
के लिए जो गौर और फिकर करते हैं ”(29:42)

जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया, “ आलिम का  
सोना, ज़ाहिल की इबादत से बेहतर है । ”

आलिम ? कौन सा आलिम ?

सिर्फ वो आलिम जिसका दिल अल्लाह तआला के एक होने  
की पहचान के नूर से जिन्दा हो चुका हो और अल्लाह  
तआला की पहचान हो जाने से उसके अन्दर बिना लफज वा  
बिना आवाज़ का जिक्र और याद हमेशा के लिए कायम हो  
चुका हो ! जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ इन्सान मेरा राज़ है और मैं इसका राज़  
हूँ ” दुसरी जगह फरमाया -

“बेशक इल्मे बातिन, अन्दर का इल्म है ये मेरे राज़ों  
में से एक राज़ है मैंने इस राज़ को अपने बन्दे के दिल में रख  
दिया है इसको मेरे सिवा कोई नहीं जान सकता”

इत्पान की जिन्दगी का मकसद ही है  
अल्लाह तआला के लिये गौर और फिकर करने का इल्म  
हासिल करना । जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया –

“एक पल का गौर और फिक्र सत्तर साल की  
इबादत से बेहतर है”

अल्लाह तआला के लिये गौर और फिकर  
करना, सही और गलत के बीच फर्क करना सिखाता है जिसे  
तौहीद कहते हैं इसकी वजह से पहचान हासिल होकर,  
अल्लाह तआला की नजदीकी हासिल होती है बस पहचान  
लेने वाला अल्लाह तआला के करीब हो जाता है और  
इबादत, आम इबादत करने वाला तो जन्त की तरफ जा  
रहा है !

अल्लाह तआला की पहचान हासिल कर  
लेने वालों की तो दिल की आँख होती है ये दिल की आँख  
वो सब कुछ देख लेती है जो ये बाहर की आँखें नहीं देख  
पाती, इन अल्लाह वालों के पर होते हैं लेकिन ये पर परिस्त्रों  
जैसे नहीं होते ये अल्लाह वाले अपने परों से अल्लाह तआला  
की तरफ उड़ान भरते हैं ये उड़ान पहचान कर लेने वालों के  
दिलों में हमेशा रहती है हकीकत में पहचान हासिल हो जाने

के बाद ही इन्सान हकीकत में इन्सान है ! फिर तो वो अल्लाह तआला का महबूब भी है राज़दार भी और दुल्हन भी !

जैसा कि सरकार बा-यजीद बस्तामी ने फरमाया - “ औलिया - अल्लाह - अल्लाह तआला की दुल्हनें हैं दुल्हनों को सिर्फ वो ही देख सकता है जिसको इजाज़त हो ! ” अल्लाह के बलियों को दुनिया में ज़ाहिरी आँख से कोई नहीं देख सकता हाँ सिर्फ एक आँख और अन्दर की आँख !

जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ मेरे औलिया मेरी कबा ( लबादा ) के नीचे है इन्हें मेरे सिवा कोई नहीं जानता ”

याहिया बिन मआज़र. अ. फरमाते हैं -

“ अल्लाह के बली वारिस, जमीन पर अल्लाह तआला की खुशबू है इन्हे सिर्फ अन्दर से सच्चे पहचान सकते हैं ये खुशबू अन्दर के सच्चों के दिलों तक पहुँचती है ” इसलिये उनका लगाव और इश्क अपने सच्चे मालिक और बनाने वाले की तरफ रहता है ये दिखने वाली दुनिया और मौत के बाद की हकीकत की दुनिया, इन दोनों में फासले की बजह से इनका अल्लाह तआला के लिये जिक्र, फिकर और याद बढ़ती जाती है जैसे - जैसे इनके ये काम बढ़ते हैं वैसे - वैसे ये फना में और गहरे ढूबते जाते हैं क्योंकि फना हो जाने

वाला, जितना हमेशा के बाकी रहने वालों के करीब होता जाता है उतना ज्यादा फना होता जाता है । अल्लाह का बली वो है जो अपनी तरफ से ख़त्म हो चुका हो और बस अल्लाह तआला का दीदार करके उसकी गवाही देने में ज़िन्दा हो उसे अपने पर, अपनी ज़ात पर कोई इख़्त्यार - हक ना हो ।

अल्लाह का बली वो है जो देने में खुशी हासिल करे लेकिन ये काम उसकी निगाहों में दिखावे के लिये ना हो, और ना ही वो खुद को ज़ाहिर और मशहूर करने का इरादा रखता हो क्योंकि अल्लाह तआला के राजू को ज़ाहिर करना कुफ़ है उस पर जो इस राजू को बरदाशत करने के काबिल ना हो ! जो इस राजू को बरदाशत कर सकता हो उससे ये राजू छुपाना उस पर जुल्म करना है ! जैसा के फरमाया गया है के असहायियों की करामात परदे के पीछे छुपी है अल्लाह के बलियों के लिये करामात हैज़ ( औरतों की 5-6 दिनों के लिये नापाकी ) की तरह है अल्लाह के बारिस के लिये हज़ारों मकाम है पहला मकाम करामत है जो इस से गुज़र गया तमाम मकामात को पाने में कामयाब हो गया ।

# दुसरा हिस्सा

इन्सान का सबसे निचली हालत की तरफ लौटना!

जब अल्लाह तआला ने आलमे लाहूत में पाक रूह को बेहतरीन बराबरी पर पैदा फरमाया तो चाहा के इसे निचली हालत पर लौटाए ताकि वो लगाव और करीब होने में तरक्की करे जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमाया -

“बड़ी पसन्द आने वाली जगह में, बड़ी कुदरत वाले बादशाह के पास ”

{ سुरह کمر 54  
आयत 55 }

पहले इन्सान आलमे लाहूत से आलमे जबरूत में आया इसके पास तौहीद - “ अल्लाह का एक होना, जान लेना ” का बीज था इसने यहाँ अपनी नुरानियत का बीज बोया और पाक रूह को जबरूती लिबास पहनाया गया इसके बाद इसे फरिश्तों की दुनिया में और फिर इस दुनिया में भेजा गया इसे लिबासे अनसरी - आग, हवा, पानी और मिट्टी का लिबास दिया गया ताकि वो इस दुनिया को जला ना दे लिबासे अनसरी से मकसद ना दिखने वाला लेकिन महसूस होने वाला जिस्म है जबरूती लिबास की वजह से इसे रूहे सुलतानी, मलकूती लिबास की वजह से इसे रूहे रोशनी, रूहे रब्बानी और इस दुनिया के लिबास जिस्म की वजह से इसे रूहे जिस्मानी कहते हैं

पाक रूह का निचली हालत की तरफ तब्जोह देने से मकसद, जिस्म और दिल के वास्ते से ज्यादा, दरजा और करीबी हासिल करना है ये ज़मीनी रूह हकीकत के दिल में तौहीद, अल्लाह के एक होने का बीज लगाती है इससे तौहीद का दरख़्त पैदा होता है जिसका तना अन्दर की गहराई में दाखिल होता है और इस दरख़्त पर अल्लाह तआला की रज़ा के लिये तौहीद का फूल लगता है इसी तरह हकीकी शरीयत जो है वो बीज़ जिस्म की ज़मीन बोती है जिससे हकीकत की शरीयत का दरख़्त उगता है और इस से सवाब का फल हासिल होता है ।

अल्लाह तआला ने तमाम रूहों को हुक्म दिया कि इन जिस्मों में दाखिल हो जाओ और हर एक रूह के लिये, जिस्म में एक ख़ास जगह तय कर दी ।

रूहें जिस्मानी का मकाम खुन और गोश्त के बीच जगह करार पाई, रूहे रवानी को कल्ब में रखा गया, रूहे सुलतानी को जान में, और पाक रूह का मकाम अन्दर ठहराया गया, हर एक रूह की सल्तनत, जिस्म के अन्दर उकान है हर एक तिजारत का सामान रखे, मुनाफा कमा रहा है ये कारोबार हर तरह के नुकसान के ख़तरे से पाक है ।

हर इन्सान के लिये ये बेहद जरूरी है के वो अपने अन्दर जारी और मौजूद हर चीज़ को समझे क्योंकि यहाँ अपने अच्छे अमल और अल्लाह तआला की पहचान

करने की कोशिश के जरिये वो जो कुछ हासिल करेगा  
वो ही उसकी गरदन में लिखा हुआ लटका होगा जैसा कि  
अल्लाह तआला ने कुरआन में फरमाया –

“ क्या वो उस वक्त को नहीं जानता जब  
निकाल लिया जायेगा जो कुछ कबरों में है और ज़ाहिर  
कर दिया जायेगा जो सीनों में छुपा है । ”

{ سُرहَّ الْأَدْيَاتِ ١٠٠  
آيَتٍ ٩-١٠ }

इसी तरह एक और آयत में फरमाया –

“ हर इन्सान की किस्मत का लिखा हुआ उसके  
गले में हमने लटका रखा है । ”

{ سُرہُ بَنَی إِسْرَائِيلَ ١٧  
آيَتٍ ١٣ }



# तीसरा हिस्सा

## जिस्मों में रुहों की दुकाने

❶ रुहे जिस्मानी की दुकान पुरा जिस्म, दिखने वाले हिस्सों के साथ है इसका कारोबार का सामान बाद में बनी हुई शरीयत नहीं, हकीकत की शरीयत है और इसका कारोबार अल्लाह के साथ किसी को शरीक करने से बचते हुए, अल्लाह तआला के हुक्मों को मानना है जैसा अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ में फरमाया -

“ना शरीक करे अपने रब की इबादत में किसी को”

{ سुहू अल कहफ 18  
आयत 110

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ अल्लाह तआला पाक है और सिर्फ पाक ही को कुबूल करता है ”

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ अल्लाह तआला बनावट और दिखावे से पाक है और जो बनावट और दिखावे से पाक है उसी को कुबूल फरमाता है ”

२

रुहे जिस्मानी का नफा और फायदा  
 अल्लाह तआला का वारिस हो जाना, दिल की आँख से  
 अल्लाह तआला की पहचान हो जाना और कायनात के  
 सबसे निचले हिस्से से सबसे ऊपर के हिस्से को भी देखकर  
 उसकी गवाही देना है इसकी मिसाल दुनिया में ऐसी है जैसे  
 किसी के अन्दर की बात को जान लेना, दूर से सुन लेना, दूर  
 का देख लेना, और आखरत की बेहतरी ।

३

रुहे रवानी की दुकान कल्ब यानि हकीकत  
 का दिल है ये नहीं जो हमारे सीने में बायी तरफ धड़कता है  
 इसका सामान इल्म है और इसका कारोबार अल्लाह तआला  
 के बारह उसुली नामों में से पहले चार नामों में ढूब जाना है  
 जैसा अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमाया -

“ और अल्लाह ही के लिये है नाम अच्छे - अच्छे  
 इसलिये पुकारो इसे इन्हीं नामों से ” {  
 सुरह अल आराफ 7  
 आयत 180}

और ये आयत इशारा कर रही है के नाम  
 ढूब जाने की जगह है ( नाम ढूब जाने की जगह है इन  
 लफजों की हकीकत सिर्फ कामिल पीरो - मुशिद से ही  
 दरयापत करे ) यहीं तो अन्दर का हकीकत का इल्म है  
 अल्लाह तआला की पहचान हो जाना, अल्लाह तआला के

नामों के मायने और हकीकत खुल जाने का ही तो नतीजा है  
जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया –

“ बेशक अल्लाह तआला के निन्यानवे नाम है  
जिसने इनका विर्द किया वो जन्नत में दाखिल हुआ । ”

विर्द किया यानि इतना पढ़ा, इतना समझा,  
इतना इन नामों में ढूब गया के बाकी कुछ ना बचा और इन  
नामों का असर अपने अन्दर समाकर अल्लाह तआला की  
सिफात को अपने अन्दर समा लेना है ये बारह नाम अल्लाह  
तआला के बाकी तमाम नामों के उसूल और बुनियाद हैं ।

जिनके अदद कलमा “ ला इलाह इल्लल लाह ” के  
हरफों के बराबर हैं बस अल्लाह तआला ने हकीकत के दिल  
की गहराईयों में हर एक हरफ के लिये एक नाम को तहरीर  
फरमा दिया है हर एक आलिम के लिये, उसके इल्ल की  
किस्म के मुताबिक और उसकी अन्दर की सच्चाई के  
मुताबिक तीन नाम है अल्लाह तआला इन्हीं नामों के जरिये  
नेक काम करने वालों के दिलों में सच्चा यकीन हकीकत का  
इमान बख्ता देता है और इनके दिलों में हकीकत साबित कर  
देता है । जैसा कि अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में  
फरमाया –

“ सही और साबित कदम रखता है अल्लाह तआला हकीकत के इन्सान वालों को पक्की सही, सच्ची बात की बजह से दुनिया में भी, और आखरत में भी ”

{ سुरह इब्राहीम 14  
आयत 27 }

अल्लाह तआला ऐसे लोगों पर अपने ख़ास लगाव की बजह से एक ख़ास हालत और और कैफियत उतारता है जिसे सकीना कहा जाता है इस से तौहीद - “ अल्लाह तआला का एक होना जान लेना ” का पेड़ बढ़ता है जिसकी जड़े सातवीं ज़मीन में है और टहनियाँ सातवें आसमान में हैं बल्कि अर्श तक पहुँची हुई हैं । जैसा कुरान शरीफ में फरमाया गया है -

“ पाक कलमा पाक दरख़ा की तरह है जिसकी जड़े बड़ी मज़बूत हैं और शाखे आसमान तक पहुँची हुई है ” ।

{ سुरह इब्राहीम 14  
आयत 24 }

रुहे रवानी को जो इस कारोबार से नफा होता है वो दिल की जिन्दगी है फरिश्तों की दुनिया को वो अपने दिल की आँख से साफ - साफ ज़ाहिर देखता है जनत, जन्त वाले, जनत के बाग् उसे साफ दिखाई देने लगते हैं जब वो अन्दर के नामों, हरफों को देखकर गवाही देता है तो अन्दर बात करता है इस बात में ना आवाज़ होती है ना अलफाज़ है । इस कारोबार की बजह से उसका ठिकाना दूसरी जनत यानि जनते नईम बन जाता है ।

④ रुहे सुलतानी की दुकान जान है इसके कारोबार का सामान अल्लाह तआला की पढ़चान हासिल करना है और कारोबार बारह हरफ में से बीच के चार हरफों का विर्द करना है दिल की जबान से, जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

इल्म दो किस्म का होता है :

- ① हुल्में लिसानी - जबान का इल्म
- ② हुल्में जनानी - हकीकत के दिल का इल्म

जन्तों का इल्म

इल्मे निसानी अल्लाह तआला की आदम की औलाद पर दलील है और हकीकत में तो इल्मे जनानी ही इल्मे नाफा यानि नफा देने वाला है। क्योंकि इल्म के तमाम फायदे इस दायरे में हैं सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ कुरान का एक ज़ाहिर है और एक बातिन यानि अन्दर की छुपी हुई गहराई, और हर बातिन का एक और बातिन है इसी तरह कुरान शरीफ की सात छुपी हुई गहराईयाँ हैं यानि छुपे हुए सात गहराईयों के मायने हैं। ”

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ बेशक अल्लाह तआला ने कुरान को दस अन्दर की गहराईयों पर नाज़िल किया बस हर अन्दर की गहराई पहले की अन्दर की गहराई से ज्यादा नफा और फायदा देने वाली है क्योंकि इस में पहले से ज्यादा अजीब और हैरान

कर देने वाले मायने हैं ।

ये हरफ उन बारह चश्मों की तरह है जो हज़रत मूसा अ. स. के आँसा यानि हाथ में थामी लम्बी लकड़ी, की बजह से फूटे थे जैसा कुरआन शरीफ में फरमान है ।

“ याद करो जब पानी की दुआ माँगी मूसा ने, अपनी कौम के लिए तो हम ने फरमाया, मारो अपना आँसा, चट्टान पर तो फैरन बह निकले बारह चश्मे उस चट्टान से, पहचान लिया हर गिरोह ने अपना – अपना घाट ।

{ सुरह अल बकरी २  
आयत ६० }

बाहर का इल्म उस पाक पानी की तरह है जो आरज़ी यानि नकली हो जबकि अन्दर का इल्म असली पानी जैसा है जो कभी खत्म नहीं होता है अन्दर का इल्म ही नफा और फायदा देने वाला है और ये हमेशा रहने वाला है कभी नहीं सूखता ।

जैसा अल्लाह तआला ने कुरआन शरीफ में फरमाया “ और एक निशानी इन के लिये ये मुरदा ज़मीन है हम ने इसे जिन्दा कर दिया हम ने निकाला इससे ग़ल्ला, बस वो इस से खाते हैं ” ।

{ सुरह यासीन ३६  
आयत ३३ }

अल्लाह तआला ने ज़मीन से एक दाना  
निकाला जो हैवानाते नफ्सानिया की खुराक है नफ्स की  
ज़मीन से एक दाना पैदा किया जो रुहानी रुहों की खुराक है  
जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ जिस ने चालीस सुबह अल्लाह के खुलूस और  
याद में की तो अल्लाह तआला ने उस के दिल से हिक्मत के  
चश्मे जारी कर दिये ”

बाकी रहा रुहे सुल्तानी का नफा तो इन्सान  
इस से अल्लाह तआला की खूबसूरती का अक्स देखता है  
जैसा अल्लाह तआला ने कुरान में फरमाया -

“ ना झुठलाया दिल ने जो देखा ”

{ سुरह अल नज़م 53  
आयत 11 }

इसी तरह सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ एक मौमिन दुसरे मौमिन का आईना है ”

पहले मौमिन से मकसद इन्सान का दिल है  
और दुसरे से मकसद अल्लाह तआला की ज़ात बा बरकात  
है जैसा कि कुरान शारीफ में अल्लाह तआला का सिफाती  
नाम “ मौमिन ” आया है ।

“ अमान बख्शाने वाला, निगहबान, इज्जत वाला टूटे  
दिलों को जोड़ने वाला ”

{ سुरह अल ह़शर 59  
आयत 23 }

इस कारोबार से उसका ठिकाना तीसरी  
जनत यानि जनते फिरदोस है ।

५ पाक रूह की दुकान बातिन यानि इन्सान  
का “अन्दर” है जैसा हृदय से कुदसी यानि अल्लाह तआला  
का फरमान है -

“ इन्सान मेरा राज़ है और मैं उसका राज़ हूँ ”

पाक रूह के कारोबार का सामान  
हकीकत का इलम है इसे अल्लाह तआला के एक होने को  
जानना यानि इलमे तौहीद भी कहते हैं पाक रूह का  
कारोबार तौहीद के हरफों का विर्द्ध है यानि आख़री चार  
हरफों का विर्द्ध मगर ये विर्द्ध बाहर की जबान से नहीं अन्दर  
की जबान से बिना बात या अलफाज़ के करना होता है!

नोट ज़ाहिरी मौलवी या आलिम से नहीं  
कामिल पीरो मुशिद से ही इसका तरीका और हकीकत  
पता लग सकती है ।

इसके लिये बकत मुकर्रर नहीं, हमेशा है  
जैसे अल्लाह तआला का फरमान है -

“ अगर तू बुलन्द आवाज़ से बात करे तो तेरी  
मरज़ी वो तो बिला शुबहा जानता है राजों को भी और  
दिल के भेदों को भी ”

इस कारोबार का फायदा ये है के तिफले  
मआनी ज़ाहिर हो जाता है और वो बातिन की ओँख से  
अल्लाह तआला की बुजुर्गी और खुबसुरती को बिना किसी  
परदे के सामने देखता है। जैसा अल्लाह तआला का फरमान  
है -

“ कई चेहरे उस रोज़ तरो ताज़ा होंगे और अपने रब  
की तरफ देख रहे होंगे ”

{‘सुख अल क्यामत 75  
आयत 22-23

ये दीदार बिना कैफ, कैफियत और  
बेमिसाल होगा जैसा कि अल्लाह तआला का फरमान है -

“ नहीं है उस जैसा कोई और वो ही सब कुछ सुनने  
वाला, देखने वाला है ”।

{‘सुख अल शौरा 42  
आयत 11

जब इन्सान अपनी जिन्दगी के हकीकी  
मकसद को पा लेता है तो अकले सोच के लिये बेकार हो  
जाती है दिल हैरानी की दुनिया में दाखिल होता है और जबान  
गुंगी हो जाती है यहाँ तक के वो इन्सान खुद भी कोई ख़बर  
नहीं दे सकता वो कहे भी तो क्या कहे, आगर अन्दर के  
आलिमों तक ये बात पहुँचे तो उन्हें चाहिये के हकीकत के  
दिल के इन मकामों को समझे और जो इन मकामों के हक हैं  
उनको जाने, और बिना किसी एतराज़ के ऊँची, ऊँचाई की  
तरफ तवज्जोह देने लगे इस तरह उन्हें बारगाहे खुदावन्दी की

तरफ से इल्मे लदुनी हासिल होगा और जाते अहंदियत  
तक पहचान की पहुँच होगी वो हरगिज़ - हरगिज़ इस  
मकाम पर एतराज़ ना करें और एतराज़ करने की आदत  
से बचें।

श्रीविगुल फुफ्फरा-बनदाये मिस्ट्रीक छजतभीन



## सरकार **सूफी गयासुदीन शाह**

कादरी, शुल्कारी, चिरथी, हाशमी हुसैनी, महबूबी

# चौथा हिस्सा

## इलमों की तादाद, गिनती

ज़ाहिर के इलम की बारह शाखे हैं इसी तरह अन्दर के इलम की भी बारह शाखे हैं इलम को आम लोग, ख़ास लोग और ख़ास में से भी ख़ास लोगों की तलब, चाहत, मकसद के मुताबिक बाँटा गया है कुल मिलाकर इलम को चार तरह की किस्मों में बाँटा गया है –

**(1) शरीयत का ज़ाहिरी इलम** मसलन जिन कामों को करने का हुक्म है वो करना, जिससे रोका गया है उससे रुकना और बाकी के हुक्म ।

**नोट** शरीयत से मकसद सरकारे दो आलम के बक्त की, उनकी फरमाई हुई शरीयत है ना कि इस बक्त की, के अलग-अलग फिरकों और गिरोहों ने अपने मन के मुताबिक ना जाने क्या-क्या जोड़कर कुछ नयी, खुद साखा शरीयत बना ली है !

② शरीयत के अन्दर का इलम } इसे तरीकत का इलम  
कहते हैं।

③ तरीकत के इलम का बातिन } इसे मआरफत, पहचान  
लेने का इलम कहते हैं।

④ अन्दर के इलम का भी अन्दर का इलम } इसे इलमे हकीकत  
का नाम दिया जाता है।

इन तमाम इलमों को हासिल करना जरूरी है  
जैसा के सरकारे दो आलम का फरमान है -

हकीकत की शरीयत एक दरख्त है तरीकत  
इसकी टहनियाँ है मआरफत इसके पत्ते हैं और हकीकत  
इसका फल है कुरआन दलीलों, इशारों और तावील इन सब  
को इकट्ठा करने वाला है।

अल जमअ के लिखने वाले फरमाते हैं के  
खोलकर बयान करना आम लोगों के लिये है और तावील  
ख़ास लोगों के लिये क्योंकि ख़ास लोग ही हकीकत के  
अन्दर के इलम के लिये चुने जाते हैं। क्योंकि रूसूख के  
मायने है इलम के साबित होने की हद तक पहुँचना, करार  
पाना, मज़बुती पाना जैसे के मज़बुत तने का ऊँचा दरख्त

जिसकी शाखे आसमान तक जा पहुँची हों इल्म की इस हद तक पहुँचना कलमा - ए - तव्यबा का नतीजा है जो दिल की ज़मीन पर बोया जाता है एक फरमान के मुताबिक रूसुख के मकाम को समझने और पाने की दलील सुरह अल इमरान में आयत नं. सात से साबित है ।

एक और फरमान है के अगर ये दरवाज़ा खुल जाये तो अन्दर के सब दरवाजे खुल जाते हैं ।

इन्सान अल्लाह तआला के हुक्मों का पाबन्द है उसे हुक्म है के वो नफ्से अम्मारा की ना माने क्योंकि सिर्फ नफ्से अम्मारा यानि नफ्स की एक हालत, हमेशा इन्सान को बुराई का हुक्म देती है ।

नफ्से अम्मारा दायरा - ए - शरीयत में, मुख़ालिफ काम करने का वसवसा डालता है दायरा - ए - तरीकत में मकर और फरेब का वसवसा डालता है मसलन नबुवत और बिलायत का दावा करना, और दायरा - ए - मआरफत में खुफिया, छुपे हुए शिर्क का वसवसा डालता है जिसे वो अपने लिये नुरानियत के दायरे की चीज़ समझ रहा होता है मसलन वो रबुबियत के दावे के लिये वसवसा अन्दाज़ी करता है जैसा अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ में फरमाया -

ज़रा उस की तरफ तो देखो जिस ने बना

लिया है अपना खुदा, अपनी ख़ाहिश को ।

{ سُرْحَ أَلْ خَارِيَا 45  
آيَت 23

रहा हकीकत का दायरा तो इसमें शैतान  
नफ्से अम्मारा और फरिश्ते दख़िल नहीं हो सकते क्योंकि  
इस दायरे में गैर जलकर ख़ाक हो जाता है । हजरत  
जिबराईल अमीन ने बारगाहे नबुवत में अर्ज की थी -

अगर मैं डंगली के पोरे के बराबर भी आगे  
बढ़ा तो जल जाऊँगा ।

इस मकाम पर पहुँचकर बन्दा - ए -  
मोमिन अपने दोनों दुश्मनों नफ्से अम्मारा और शैतान से  
छुटकारा हासिल कर लेता है और बिल्कुल ख़ालिस हो जाता  
है जैसा के अल्लाह तआला का फरमान है “ तेरी इज्जत की  
कसम मैं जरूर गुमराह करूँगा उन सब को, सिवाय तेरे उन  
बन्दों के जिन्हें इन में तूने चुन लिया है ।

{ سُرْحَ سَوَاد 38  
آيَت 82-83

और जो बन्दा हकीकत के दायरे तक नहीं  
पहुँच सकता वो ख़ालिस नहीं कहला सकता क्योंकि  
अल्लाह तआला की ज़ात की तजल्ली हुए बिना बशरी  
सिफात खत्म नहीं हो सकती जब इन्सान हकीकत के दायरे  
में पहुँच जाता है तो उसका जाहिल होना पुरी तरह से खत्म

हो जाता है क्योंकि वहाँ तो इन्सान को अल्लाह तआला इल्मे लदुनी अता फरमा देता है बगैर किसी बास्ते और जरिये के अपनी पहचान अता करता है और इन्सान हजरत ख़िजर अ. स. की तरह अल्लाह तआला की तालीम के मुताबिक उस की याद, जिक्र, फिक्र में डूब जाता है ।

यही जगह देखने के बाद गवाही देने की है जहाँ इन्सान पाक रूहों को देखता है अपने महबुब नबी करीम हजरत मोहम्मद मुस्तफा स. अ. व. को देखता है पहचानता है यहाँ उस की शुरूआत और इन्तहा बराबर मुआफिक हो जाती है और तमाम नबी उसे हमेशा के मिल जाने की खुशखबरी देते हैं जैसा अल्लाह तआला का फरमान है -

“ और क्या ही अच्छे हैं ये साथी ”

{ سुरह نیسا 4  
آیت ۶۹

और जो आलिम, इल्मे हकीकत तक नहीं पहुँचता हकीकत में वो आलिम ही नहीं है चाहे उसने हजारों किताबें पढ़ी हों -

जिसम जब ज़ाहिरी इल्म पर अमल करता है तो बदले में सिर्फ जनत मिलती है जहाँ पर वो अल्लाह तआला की सिफात की तजल्ली का अक्स पाता है लेकिन वो पाक चहार दीवारी और अल्लाह तआला के करीब होने के दायरे में दाखिल नहीं हो सकता क्योंकि ये ज़ाहिरी, बाहर

के इल्म का काम ही नहीं है पाक चहार दीवारी और अल्लाह तआला की नज़दीकी उड़ने का, उड़ान का आलम है परिस्त्रा बिना परों के नहीं उड़ सकता सिर्फ वो ही इन्सान वहाँ तक पहुँच सकता है जिसके पास अन्दर का हकीकत का इल्म और उसके मुताबिक अमल हो जैसा हृदीसे कुदसी में अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ ए मेरे बन्दे तू मेरी चहार दीवारी, करीब होने में दाखिल होने का इरादा करे तो इस दुनिया, फरिश्तों की दुनिया, और दुनिया -ए - जबरूत की तरफ तवज्ज्ञोह ना दे क्योंकि ये दुनिया ज़ाहिरी आलिम के लिये शैतान है जो इन में से किसी भी एक दुनिया में ठहर गया, राजी हो गया तो वो मेरे नजदीक मरदूद हो गया ”।

मकसद ये है के उसे करीबी और नजदीकी हासिल ना होगी, छोटी मंजिलों पर रुक जाने वाले अल्लाह तआला की करीबी हासिल नहीं कर सकते क्योंकि वो मकसद की पूरी लगन नहीं रखते जो मकसद की पूरी लगन रखते हैं उनके लिये तो ये जगह है -

“ जो ना किसी आँख ने देखा है ना किसी कान ने सुना है ना किसी इन्सान के दिल में इस का ख़्याल गुज़रा है”

वो करीब वालों के लिये जन्नत है इस जन्नत में ना तो हूर है ना ही कोई कुसूर है ना ही शहद और दुध की नहरे हैं ।

इन्सान को अपनी हैसियत पहचाननी

चाहिये किसी एसी चीज़ का दावा नहीं करना चाहिये जिस का उसे हक नहीं पहुँचता ।

अमीरूल मोमेनीन हज़रत अली क.व.क.  
बिन अबु तालिब र.अ. फरमाते हैं –

“ अल्लाह तआला ऐसे आदमी पर रहम फरमाये जिसने अपनी हैसियत का अन्दाज़ा लगाया और अपनी हैसियत से आगे ना बढ़ा अपनी ज़िबान की हिफाज़त की और अपनी उमर को बरबाद और बेकार नहीं किया । ”

आलिम को चाहिये के हकीकी इन्सान यानि तिफ्ले मआनी का मतलब समझे और अल्लाह तआला के एक होने के हरफों पर, काम में लगा रहकर उन हरफों को पाल पोस कर बढ़ा करे उसे जिस्मों की दुनिया से निकल कर रूहानियत की दुनिया में आना चाहिये, रूहानियत की दुनिया अन्दर की दुनिया है जहाँ अल्लाह तआला के अलावा कोई नहीं रहता ये दुनिया नुर ही नुर की दुनिया है इसकी कोई हृद नहीं और तिफ्ल मआनी, हकीकी इन्सान इसमें उड़ रहा है इसमें मौजूद अजीब – गरीब, हैरत अंगेज चीजों को देखता फिर रहा है मगर किसी को ख़बर देने का मौका नहीं है ।

ये उन अल्लाह को एक जान कर, पहचान कर मानने वालों की जगह है जो अपने आपको पुरी तरह अल्लाह तआला के एक होने में फना कर चुके हैं इनके अन्दर अल्लाह तआला की खुबसूरती का नुर होता है जिसे

बो देखते रहते हैं जैसे वो सिर्फ अल्लाह तआला ही को देखते हों ।

बस युँ समझना चाहिये के जिस तरह इन्सान सूरज को देखे तो दुसरी किसी चीज़ को नहीं देख सकता इसी तरह इन्सान जब अल्लाह तआला के दीदार में छूब जाता है तो अल्लाह तआला की खुबसूरती के मुकाबले में वो किसी और को कैसे देख सकता है क्योंकि ये वो मकाम है जहाँ इन्सान गुम होकर बस हैरत बन जाता है । जैसा के हज़रत सव्यदना ईसा इब्ने मरयम अ. स. ने फरमाया -

“ इन्सान आसमानों की बादशाही में उस वक्त तक दाखिल नहीं हो सकता जब तक वो दुसरी बार पैदा नहीं होता ॥ ”

यहाँ दुसरी बार पैदा होने से मकसद हकीकते इन्सान से है ये पैदायश रूहानी है और ये पैदायश इन्सान की हकीकी काबिलियत से होती है हकीकत का इन्सान तब ही होता है जब अन्दर का इल्म और उसके मुताबिक अमल मिलते हैं क्योंकि बच्चा बालदैन के नुत्फों के मिलने से पैदा होता है जैसा कि कुरान शरीफ में है -

“ हमने ही इन्सान को एक मिले जुले नुत्फे से बनाकर पैदा किया ॥ ”

{  
‘सुख अल दहर 76  
आयत 2

इस मायने के ज़ाहिर हो जाने के बाद इन्सान बनने की दुनिया से हुक्म की दुनिया की गहराइयों में पहुँच जाता है बल्कि जितनी भी दुनियाँ हैं और उनमें जो भी रूह है हकीकत के इन्सान के सामने ऐसी ही होती है जैसे कतरा या बुंद, समन्दर के सामने

इस हकीकत के ज़ाहिर होने के बाद इसे लड़नी, रुहानी का फैज और फायदा बिना अलफाज़ या आवाज़ के हमेशा पहुँचता रहता है।



## सूपी गत्यासुदीन शाह

काढ़ी, शुलारी, विश्वी, हाथगी हुसैनी, महबूबी

परेशानी तज़करा करते रहने से बढ़ जाती है  
ख़ामोश होने से कम हो जाती है  
सबर करने से ख़त्म हो जाती है  
और शुक्र करने से खुशी में बदल जाती है

# पाँचवा हिस्सा

## तौबा और तलकीन - समझना - समझाना

याद रहे, बताया गया और समझाया गया मकाम - मरतबा , सच्ची तौबा और कामिल मुर्शिद के समझाये बिना समझ नहीं आते, जैसा के अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ में फरमाया -

“ मोमिनों को तक़वे की बात पर जमाये रखा ”

{ سुहूल अल फतह 48  
आयत 26

इस से मक्कसद ये है के कलमा-ए-तव्यबा “ ला एलाह इल-लल-लाह ” किसी ऐसे कामिल पीर और मुर्शिद से ले जिस का दिल पाक साफ हो और उस के दिल में अल्लाह के सिवा कुछ ना हो और अपने मुरीद को, सही में मुरीद बन जाने पर, अल्लाह तआला की पहचान, मआरफत करा सके ।

इस से मक्कसद वो कलमा नहीं जो आम लोग पढ़ते हैं हालाँकि आम लोगों और अल्लाह के ख़ास लोगों के लिये कलमे के अलफाज़ तो एक जैसे हैं लेकिन

गहराई और मायनों में बड़ा फर्क है क्योंकि “ तौहीद ”  
 अल्लाह तआला का एक होना जानना, पहचान लेना का  
 बीज़ जब अपने अन्दर ज़्यज़ किया, समाया जाता है तो वो  
 भी जिन्दा हो जाता है और ऐसा बीज, जब पौधा और पेड़  
 बनता है तो आम मुसलमानों को हकीकत की खुशबू़ सुकून  
 का साया, हकीकत के इमान का फल बांटता है ख्याल रहे  
 अगर बीज को अच्छी, ज़मीन और माली ना मिले तो बीज  
 पौधा नहीं बन सकता, इसी तरह एक मुरीद को जो कि बीज  
 जैसा है उसे एक समझदार माली यानि कामिल मुर्शिद की  
 जरूरत होती है जो उसे अल्लाह तआला की पहचान करा  
 सके मुरीद को सदा हक का, पहचान का ही तलबगार होना  
 चाहिये इस बारे में ज़ाहिरी इल्म वालों के लिये कुरान शरीफ  
 में फरमाया गया -

“ जब इन्हें कहा जाता है के नहीं है कोई इबादत के  
 लायक अल्लाह के सिवा ”

{ सुहः अल साफः 37  
 آیت نं. 35 }

और दुसरी जगह हकीकत के अन्दर के  
 इल्म के साथ फरमाया गया ।

बस आप जान लें के नहीं कोई माबूद अल्लाह के  
 सिवा और दुआ माँगा करे के अल्लाह आपको गुनाहों से  
 महफूज़ रखे और मग़फिरत तलब करे मोमिन मर्दों और और  
 औरतों के लिये -

{ سُرْهُ مُهَمَّد 47 آیت نं. 19 }

ये आयत खास लोगों के लिये नाज़िल  
की गई क्योंकि इसमें "जान ले" लफज है समझदारों  
के लिये इसमें इशारा है।

इसीलिये सब से पहले, सरकारे दो  
आलम की खिदमत में जिस इन्सान ने अल्लाह तआला  
के करीब से करीब होने का बेहतरीन और आसान रास्ता  
पुछा वो हज़रत अली बिन अबू तालिब र.अ, है सरकारे  
दो आलम ने वही का इन्तज़ार फरमाया यहाँ तक के  
हज़रत जिबराईल अमीन हाजिर हुए और  
कलमा-ए-तथ्यबा

"ला-एलाह-इल-लल-लाह" तीन बार अलग-अलग  
गहराई के मायनों के एतबार से समझाया, सरकारे दो  
आलम ने इसे हर गहराई पर समझ कर दोहराया और  
फिर हज़रत अली मुरतुजा क.व.क. को यही, इसी तरीके  
से समझाया, इसके बाद सरकारे दो आलम अपने कुछ  
खास असहायियों के पास तशरीफ ले गये और उन्हें उनके  
मकाम के मुताबिक कलमा-ए-तथ्यबा की गहराई के  
मायने और उसकी - हकीकत समझाई - और फरमाया -

"हम छोटे जेहाद से बड़े जेहाद की तरफ लौट  
आये"

यहाँ बड़े जेहाद से मकसद नफ्से अम्मारा  
के खिलाफ कोशिश, जेहाद है।

एक और हदीस मे फरमाया गया है -

“ तेरा सबसे बड़ा दुश्मन नफ्से अम्मारा है जो तेरे पहलू मे है ”।

तू उस वक्त तक अल्लाह तआला की कामिल मोहब्बत हासिल नहीं कर सकता जब तक तू अपने अन्दर के बुरे नफ्स, नफ्से अम्मारा पर काबू नहीं पा लेता अगर तूने बुरे नफ्स पर काबू पा लिया तो तू - बुरी आदतों, ज्यादा खाना, ज्यादा सोना, बेकार की बातें करना, गुस्सा, गाली देना, लड़ना-झगड़ना वगैरह से पाक हो गया ।

जब इन्सान शैतानी आदतों, बड़ा दिखने की कोशिश, गुरुर, हसद, कीना वगैरह और इसके अलावा तमाम बुरी आदतों चाहे वो जिस्मानी हो या दिली से पाक हो जाता है तो उस वक्त वो हकीकत मे गुनाहों से पाक हो गया होता है और उसकी गिनती पाकों मे से पाक और हकीकत की तौबा करने वालों मे होने लगती है जैसा के अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ मे फरमाया -

“ बेशक अल्लाह तआला मोहब्बत करता है बहुत तौबा करने वालों से और बहुत पाक रहने वालों से ”

ख्याल रहे के अन्दर से तौबा करना और अन्दर से पाक होना ज्यादा कीमती है ।

जाहिरी गुनाहों से तौबा करने वाले इस आयत की तस्दीक करने वाले और गवाह नहीं है क्योंकि तौबा करना,

अन्दर का, नियत का काम है इसलिये इस आयत से मकसद अन्दर से तौबा और अन्दर से ही पाक होना है ।

ज़ाहिरी तौबा, बाहर से तौबा करने वाले की मिसाल ऐसी है जो धास को काट देता है जड़ से नहीं उखाड़ता, ज़ाहिर है धास दोबारा उगेगी और पहले से ज्यादा उगेगी ।

समझ, समझ जाना, समझ लेना एक ऐसी हालत है जो मुरीद के दिल को, अल्लाह से गैर को खत्म कर देता है क्योंकि कड़वा पेड़ जड़ से उखाड़ कर ही उसकी जगह मीठे फल का पेड़ लगाया जा सकता है ।

इस बात में गैर और फिकर करो और समझने की कोशिश करो जैसा के अल्लाह तआला ने कुरान शरीफ में फरमाया -

“ वो ही है जो तौबा को कुबूल करता है अपने बन्दों की ओर दर गुजर करता है उन की गलतियों से ”

{ سुरह شوئری 42  
आयत 25 }

एक और बात है -

वो जिसने तौबा की और इमान ले आया और नेक अमल किये तो ये वो लोग है के अल्लाह तआला इन की बुराईयों को नेकियों में बदल देगा ।

{ سुख अल फुरकान 25  
आयत 70 }

तौबा दो किस्म की होती है आम लोगों की तौबा तो ये है के इन्सान गुनाह छोड़कर मानने की तरफ आ जाये और बुरी आदतें छोड़कर अच्छी आदतें अपना लें, जहनुम की राह से हटकर, जनत के रस्ते पर चल दे लालच को छोड़कर ज़िकर, फिकर कोशिश और रियाज़त के जरिये नफसे अम्मारा पर काबू पा ले ये आम लोगों की तौबा है ख़ास लोगों की तौबा ये है के आम लोगों की तौबा हासिल कर लेने के बाद, अच्छाई से अल्लाह तआला की पहचान की तरफ, अल्लाह तआला की पहचान से अच्छे और ऊँचे दरजे की तरफ, अच्छे और ऊँचे दरजे से अल्लाह तआला के करीब होने की तरफ, और यहाँ से रुहानी लज्जत की तरफ लैटे, ख़ास लोगों की तौबा अल्लाह तआला के सिवा सब को छोड़ देना और मोहब्बत और लगाव के साथ यकीन की आँख से अल्लाह तआला की तरफ देखना है ।

ये तमाम चीज़े जिस्म की कोशिश से तआल्लुक रखती है और जिस्म से कोशिश करना गुनाह है जैसा कहा गया है के तेरा जिस्म और तेरा होना ही गुनाह है इस से बड़े गुनाह का ख्याल भी नहीं किया जा सकता- पहचान हो गयी जिनको वो कहते हैं के नेक लोगों की नेकियाँ और इबादत, अल्लाह तआला के जो नजदीक है उनके लिये बुराई है और जो अल्लाह तआला के करीब है उनकी बुराई, नेक लोगों की नेकी है इसी लिये सरकारे दो आलम रोज़ाना सौ बार अस्तग़फ़ार - तौबा किया करते थे जैसा के पाक सब ने फरमाया -

“ और तौबा किया करे के अल्लाह तआला आप को  
गुनाह से हिफाज़त में रखे ”

{ سُرह مُهَمَّد 47  
آیت ۱۹ }

यहाँ गुनाह से मकसद जिसम का गुनाह है  
इस आयत के मायने अल्लाह तआला की तरफ रुजू हो  
जाना है, अल्लाह तआला के सिवा को छोड़कर सिर्फ  
अल्लाह तआला का हो जाना, आख़रत में करीब होने के  
दायरे में शामिल हो जाना और अल्लाह तआला का दीदार  
हासिल करना है जैसा के सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ अल्लाह तआला के एसे बन्दे भी हैं जिनके जिस्म  
तो दुनिया में है लेकिन दिल अर्श पर होते हैं ”।

अल्लाह तआला का दीदार इस दुनिया में,  
कामिल मुर्शिद की तालीम समझकर, अपनी समझ को ही  
पुरा बदलकर, सिर्फ अन्दर की आँख से ही मुमकिन है  
अल्लाह तआला की सिफात को दिल के आँगन में देखा जा  
सकता है जैसा के फरमाया गया है -

“ मेरे दिल ने अपने रब का दीदार किया ”

और हज़रत अली क.व.क. ने फरमाया -

“ मैंने अपने रब के जरिये रब को देखा ”

ये देखना कामिल मुर्शिद की अता और  
सोहबत, ख़िदमत, से ही मुमकिन है मगर जरूरी ये है के  
मुर्शिद कामिल हक से मिला हुआ हो और इसका

सिलसिला-ए-तरीकत आखिर तक जुड़ा हुआ हो वो सरकारे दो आलम के बास्ते से और अल्लाह तआला के हुक्म से अधुरे इन्सानों को पुरा और सही, हकीकत का इन्सान बनाने के लिए मुकर्रर किया गया हो यानि खिलाफत अता हो चुकी हो ।

औलिया - ख़ास लोगों के लिये भेजे जाते हैं आम इन्सानों के लिये नहीं, यही फर्क है वली और नबी में, नबी आम और ख़ास हर एक के लिये लगातार भेजे जाते रहे हैं लेकिन वली, मुर्शिद कामिल सिर्फ ख़ास इन्सानों के लिये भेजे जाते हैं वली को हर हाल में अपने नबी की फरमा बरदारी करनी पढ़ती है सरकारे दो आलम ने अपनी उम्मत के आलिमों को सिर्फ अन्दर का इल्म रखने वाले आलिमों को बनी इसराईल के नबियों जैसा फरमाया है क्योंकि बनी इसराईल के अम्बिया हज़रत मुसा अ.स. की शरीयत मानते थे लेकिन उस उम्मत के अन्दर के आलिम उस शरीयत को बदले बिना उस में नयापन लाते थे इसी तरह इस उम्मत के आलिम जिन्हे विलायत का मकाम अता किया गया है ख़ास के लिये भेजे गये हैं ताकि वो दिल के पाक करने के तरीकों को उम्मत को बताकर इन्सानों का दिल पाक कर सके क्योंकि असली चीज़ दिल का पाक होना है दिल ही अल्लाह तआला की पहचान हो जाने का महल है ।

अल्लाह के बली सरकारे दो आलम के इल्म के जरिये ही खबर देते हैं जैसा के सरकारे दो आलम के ख़ास असहाबी (चबुतरे पर बैठने वाले सरकारे दो आलम के ख़ास वफ़ादार और जाँ-निसार) जिन्हें असहाबे सुप्फ़ा कहा जाता है मैराज से पहले ही मैराज के राज़ बताया करते थे सरकारे दो आलम की उम्मत का कामिल और ख़ास बली वो ही है जिस को ये हाल और मकाम हासिल हो ये हाल और मकाम, नबुवत का एक हिस्सा है और अल्लाह के बली के दिल में अल्लाह तआला की अमानत है आलिम वो नहीं है जिस के पास किताबों का ज़ाहिरी इल्म हो कामिल वारिस तो वो है जो बेटे की जगह हो बच्चा अपने वालिद का अन्दर और बाहर से राज़ होता है जैसा के सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ इल्म एक छुपी हुई चीज़ की तरह है जिसे सिर्फ अल्लाह तआला का इल्म रखने वाले आलिम ही जानते हैं जब वो इस इल्म को ज़ुबान पर लाते हैं तो ग़ाफ़िल लोगों के अलावा कोई इन्कार नहीं करता ”

यही वो राज़ है जो मैराज की रात अल्लाह तआला ने सरकारे दो आलम के हकीकत के दिल में उतारा था इल्म की जो तीस हज़ार गहराईयाँ हैं उनमें से ये आखरी गहराई है सरकारे दो आलम ने अपने ख़ास वारिस और ख़ास साथियों के अलावा किसी भी आम इन्सान को ये राज़ ज़ाहिर

नहीं किया क्योंकि हर इन्सान किसी बड़े राज् को बरदाशत करने की ताकत नहीं रखता अल्लाह तआला ने जिन्हें अपना राजदार बनाया उन करीब हुए वलियों की बरकत से हमें फायदा अता हो ये फायदा के हमें उनके राजदार और वली होने से हिस्सा अता हो ।

आमीन या रब्बुल आलामीन ! अन्दर का इल्म इसी राज् की तरफ राह दिखाता है बाकी सारे इल्म इस राज् का छिलका है ज़ाहिरी आलिम इसी राज् के छिलके को फैला रहे हैं तबलीग कर रहे हैं लेकिन जिन लोगों का ताल्लुक सरकारे दो आलम के अन्दर के इल्म के वारिस और विलायत के मालिक हज़रते अली क.व.क. से हैं सिर्फ वो ही इस राज् - इल्म का जो मगज् यानि असली चीज् है के वारिस हैं इन्हें इल्म के दरवाजे, हिक्मत के दरवाजे हज़रत अली क.व.क. से विरासत मिली है ये लोग हिक्मत और समझदारी के साथ अल्लाह तआला की तरफ दावत देते हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ ए महबुब बुलाईये लोगों को अपने रब की राह की तरफ हिक्मत से, और अच्छी नसीहत से, और इन से बहस किज़ीये इस अन्दाज् से, जो बड़ा पसन्द आने वाला बेहतर हो ” {  
सुरह अल ज़हल  
आयत 125}

बाहर के आलिमों और अन्दर के आलिमों की बात तो एक तरफ की होती है लेकिन हकीकत, मायनों और मकसद में फर्क होता है ये तीनों मायने सरकारे दो आलम में मौजूद हैं इन मायनों को तीन किस्मों में बाँटा गया है।

### ① पहली किस्म

इल्म का मगज़ है ये इन्सान की अन्दर की हालत का इल्म है ये इल्म सिर्फ अन्दर से पाक मरदों को अता होता है जिन की हिम्मत की तारीफ सरकारे दो आलम ने फरमाया है।

“मर्दों की हिम्मत पहाड़ों को उखाड़ फेंकती है”

यहाँ पहाड़ों से मकसद - काला दिल होना, सख्त दिल होना है जो अल्लाह तआला के ख़ास बन्दों की दुआ से साफ और मुलायम हो जाता है जैसा के अल्लाह तआला का फरमान है -

“जिसे अता की गयी अकलमन्दी तो यकीनन उसे दे दी गयी भलाई”

{  
सुख बकरा  
आयत 269}

### ② दुसरी किस्म

असली अन्दर के इल्म - मगज का छिलका, ये सिर्फ किताबों को पढ़कर सिर्फ उनके अलफाज पकड़ लेते हैं लफजों की हकीकत - मकसद और गहराई से इनका कोई वास्ता नहीं होता ये खुद भी अकल के

अन्धे होते हैं और तकरीरों के जरिये आम लोगों को भी अकल का अन्धा बनाते हैं और इन्सानों के सोचने समझने की ताकत को खत्म कर देते हैं। इनका सारा इल्म बाहर से ताल्लुक रखता है जैसा के सरकारे दो आलम का फरमान है—

“हकीकत का, अन्दर के इल्म का आलिम, इल्म और अदब से, मोहब्बत और हिक्मत और दलीलों के जरिये समझाता है जबकि ज़ाहिरी आलिम नाराज़गी और तकब्बुर से इल्म सिखाता है”।

### ③ दीदरी किस्म

ये छिलके का भी छिलका है ये बादशाहों को दिया जाता है ये हिस्सा ज़ाहिरी इन्साफ और सियासत है इसके लिये कुरआन में फरमाया गया है—

“आपका रब खूब जानता है उसको जो रास्ते से गुम हुआ”

{  
सुरह अलजहल  
आयत 125}

ये लोग अल्लाह तआला की सिफ्त “कहर नज़िल करने वाला” को ज़ाहिर करने वाले होते हैं। ये दीन का निज़ाम सही चलने की वजह बनते हैं जिस तरह सफेद छिलका अखरोट की हिफाज़त करता है, ज़ाहिरी आलिमों का मकाम सुर्ख और सफेद छिलके की तरह है और फ़कीर सुफियों और जिन्हें अल्लाह तआला की पहचान

हासिल हो गयी है बस वो ही मगज़्यानि असली आलिम है  
किसी दरख़्त लगाने का मक्सद फल हासिल करना होता है  
बस जिन्हे पहचान हासिल हो गयी वो ही फल है यही सारी  
बात का निचोड़ है ।

इसीलिये सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ उलमा ए हकीकी की महफिल में बैठो और इनको  
सुनो क्योंकि अल्लाह तआला नुरे हिकमत से मुर्दा दिलों को  
जिन्दगी बख्शता है जिस तरह मुर्दा ज़मीन को बारिश के पानी  
से जिन्दा कर देता है ” ।

एक और हदीस शरीफ है -

“ समझदारी की बात अक्लमन्द आदमी  
की जैसे खोई हुई चीज़ है वो इसे जहाँ मिलती है हासिल कर  
लेता है ” ।

लोगों की ज़बान पर जारी कलमा ( ला -  
एलाह - इल - लललाह , मोहम्मदुर रसुल्लाह ) लोह  
महफुज़ से नाज़िल हुआ है लोहे महफुज़ आलमे जबरूत के  
दरजात में से है और जो कलमा “ जो अल्लाह तआला से  
मिल गये ” की जबानों पर जारी है वो लोहे अकबर से बिना  
किसी वास्ते और जरिये के कुद्रत की ज़बान के जरिये  
नज़्दीकी में नाज़िल हुआ है हर चीज़ अपने असल की तरफ  
लौटती है इसी लिये कामिल पीरो - मुर्शिद की तलाश  
फर्ज़ है जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ इल्म का हासिल करना हर मुसलमान मर्द और औरत पर फर्ज है ”

यहाँ पर इल्म से मक्सद अन्दर का इल्म है - हदीसे पाक में इल्म से मक्सद वो इल्म जो अल्लाह तआला की पहचान करा दे और अल्लाह तआला के करीब कर दे बाकी ज़ाहिरी इल्म की बस इतनी जरूरत है कि इन्सान फर्ज पुरे कर सके जैसा सरकार इमाम गज़ाली ने फरमाया -

दिल की जिन्दगी हकीकत का, अन्दर का इल्म है इसे इकट्ठा कर ले और दिल की मौत जहालत है इस से दामन बचा ले तेरी बेहतरीन मुराद तकवा, परहेजगारी, हदों में रहना है इस को बढ़ा मेरी ये नसीहत काफी है बस इसे पल्ले बाँध ले ! जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ सफर का सामान तैयार रखो और सब से बेहतरीन सामान तो तकवा ही है ”

{  
‘सुरह अल बकरा  
आयत 197

अल्लाह तआला इस बात को पसंद फरमाता है कि इन्सान उसके नजदीक और करीब होने की तरफ सफर करे और सवाब की तरफ तवज्जोह ना दे जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ बेशक वो लोग जो ईमान लाये और इन्होंने नेक अमल किये ”!

{  
‘सुरह अल कहफ  
आयत 30

आप फरमा दीजिये मैं नहीं माँगता इस  
दावते हक पर कोई बदला, सिवाय कराबत ( जो करीब है -  
जो करीब हो गये ) की मोहब्बत के { सुरह अलशौरा  
आवत 23 }

यानि मैं जो तुम्हें हक की तरफ बुला रहा हूँ  
इसका कोई बदला नहीं माँगता हूँ बस जो अल्लाह तआला  
के करीब है - और करीब हो गये है उनसे मोहब्बत करो  
उनसे मोहब्बत रखो ! एक कौल के मुताबिक “ अल  
मवदता फि कुरबा ” के मानी आलमे - कुरबत के हैं ।



# छत्ता हिस्सा

## अहले तसव्वुफ के बयान में

तसव्वुफ से ताल्लुक रखने वालों के मशहूर होने की वजह या तो ये है कि वो अल्लाह तआला की पहचान और अल्लाह तआला का एक होना जान लेने से अपने आपको अन्दर से पाक करते हैं या ये कि वो असहाबे सफ़ा की तरह जिन्दगी गुज़ारते हैं या फिर ये कि वो सौफ़ (उन) का लिबास पहनते हैं नया शामिल होने वाला भेड़ की ऊन का, थोड़ा पुराना बकरी की ऊन का और आखरी हदों पर पहुँच जाने वाला रेशम का लिबास पहनता है साथ - साथ उनकी अन्दर की कैफियत भी बदलती जाती है और उनके और आम लोगों के खाने-पीने में भी फर्क होता है।

तफसीर मज़्मुआ उल बयान, लिखते हैं कि कोशिश करने वालों को चाहिये कि वो लिबास और खाने - पीने में सख़ा चीजों का इस्तेमाल करें और जिनको पहचान हासिल हो गयी उनके लिये बेहतर है कि नरम चीजों का इस्तेमाल करें अपने मरतबे और मंजिल से नीचे रहना सुन्नत है ताकि किसी भी तरह हद से बढ़ने वालों में ना हो जाये

तसव्वुफ से ताल्लुक रखने वालों के मशहूर होने की चौथी बजह ये हो सकती है के ये हज़रात अल्लाह तआला को पहचान लेने में सबसे आगे हैं।

तसव्वुफ लफज की बुनियाद चार हरफों पर

है -

**१ ते २ सुआद ३ वाव ० फे**

**① ते**

हरफ तौबा को ज़ाहिर करता है इस की दो किस्में हैं बाहर की तौबा और अन्दर की तौबा, बाहर की तौबा तो ये है के इन्सान अपने बाहर के हिस्सों के साथ गुनाह और बुरी आदतों को छोड़कर मान लेने और खुद को खुदा की मरज़ी का गुलाम बनाने की तरफ लौट आये और ना-राज़ी छोड़ कर राज़ी हो जाये।

अन्दर की तौबा ये है के इसान अपने अन्दर के तमाम तरीकों के साथ ना-राज़ी होने को छोड़कर अल्लाह तआला की मरज़ी में राज़ी होने को कुबूल करके, उस हालत की हिमायत में हो जाये और दिल को साफ कर ले जब बुरी आदतें छोड़ दी जाती हैं और अच्छी आदतें अपनी जिन्दगी में ले आयी जाती हैं तो ( ते ) पुरा हो जाता है एसे इन्सान को तायब - तौबा करने वाला कहते हैं।

**नोट**

याद रहे, सिर्फ जबान से तौबा कहना बिल्कुल बेकार है तौबा कहने का नहीं, करने का काम है खुद को अन्दर से बदलने का नाम असली तौबा है जब तक खुद को अन्दर से नहीं बदला, हकीकत की तौबा नहीं की, रुहानी तरक्की और जिन्दगी में सुकून नहीं आ सकता।

**② सुआद**

साफ होने, पाक होने को ज़ाहिर करता है इसकी दो किस्में हैं सफाये कल्बी यानि हकीकत का जो दिल है उसका पाक - साफ होना और सफाये सिर्फ यानि जो गलत जान लिया, मान लिया, है इलम, लेकिन भटकाने वाला उससे भी पाक साफ हो जाना।

हकीकत के दिल को पाक - साफ करना तो ये है के इन्सान अपने दिल को बुरी आदतों से पाक कर ले जैसे अबल चलाना - नशा - ज्यादा बोलना - ज्यादा सोना जैसी बुराइयों को अपनी जिन्दगी से निकाल दे इसके अलावा खाने की बहुत ज्यादा फिकर - औरत से बहुत ज्यादा मिलना बुराई की तरफ ले जाने वाली हर उस आदत से बचना, जिससे बचने का अल्लाह तआला ने हुक्म फरमाया है।

इन बुराइयों से दिल को साफ करना, बिना किसी कामिल पीर की खिदमत और गुलामी के बिना मुमकिन ही नहीं है शुरूआत में कामिल पीर अपने मुरीद को

अच्छाई और नेकी की याद और उसको अमल में लाने का हुक्म दे जिससे मुरीद का दिल नरम हो जाये जैसा पाक रब ने फरमाया -

“ सिर्फ वो ही सच्चे ईमानदार है के जब अल्लाह का ज़िक्र उनके सामने किया जाता है तो उनके दिल काँप उठते हैं । ”

{ سुरहِ اَلْ اَنْفَال ۸  
آیت ۲

यानि उनके दिलों में मोहब्बत भरा डर पैदा हो जाता है ज़ाहिर है के मोहब्बत वाला डर उसी हालत में आ सकता है जबकि दिल गुफलत की नींद से जाग जाये और बारीय तआला की याद की वजह से दुनिया का लालच उसके दिल से खत्म हो जाये। और इससे इन्सान हकीकत में ये जान जाता है के सही में अच्छा और बुरा क्या है ।

रही “ राजू और सफाई ” की बात तो उस का मतलब ये है के इन्सान जिस किसी चीज़ को भी देखे उसे पहले अल्लाह की याद आये बाद में उस चीज़ को होना याद आये - और इन्सान की ये हालत तब होती है जबकि वो अन्दर से हमेशा अल्लाह तआला के नामों का ज़िक्र करता रहे जब ये सफाई हासिल हो जाती है तो “ सुआद ” की मंजिल और मकाम पुरा हो जाता है ।

③ बाद

बाब विलायत को ज़ाहिर करता है  
जैसा के अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

“ आगाह हो जाओ - बेशक अल्लाह के बलियों को  
ना कोई खौफ है और ना वो गमगीन होगे । { सुरह घूब्रुस 10  
आयत 62 }

बली हो जाने पर इन्सान अल्लाह तआला  
के अखलाक और सिफात का नमुना बन जाता है जैसा के  
सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ अख़्लाके खुदावन्दी को अपना लो ”

यानि अल्लाह तआला की जो सिफात है  
उनको अपने अन्दर पुरा - पुरा भर लो बली हो जाने पर  
इन्सान, आदमी होने की जो ख़ासियत है वो छोड़ देने के बाद,  
अल्लाह तआला की सिफात को अपने अन्दर भर लेता है  
हीसे कुदसी के जरिये अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ जब मैं किसी बन्दे को अपना महबुब बना लेता हूँ  
तो उसके कान, आँख , हाथ और जबान बन जाता हूँ वो मेरी  
सुनने की कुवत के जरिये सुनता है ।

मेरी देखने की कुवत के जरिये देखता है  
मेरी ही ताकत से पकड़ता है, मेरी ही आवाज़ की ताकत से  
बोलता है और मेरी ही ताकत से चलता है । ”

जो इन्सान इस जगह पर पहुँच जाता है वो  
अल्लाह तआला के सिवा सब चीजों से ताल्लुक ख़त्म कर  
लेता है । जैसा के अल्लाह तआला ने अपनी किताब में  
फरमाया -

आप कह दीजिये आ गया है हक, और  
मिट गया है ( नाहक ) बेशक नाहक ( बातिल ) था ही  
मिटने वाला ।

{ سُرَدْ أَلْ أَسْرَا ۱۷  
آيَةٌ ۸۱ }

यहाँ वाव का मकाम पुरा हो जाता है ।

#### ④ **फाइ**

ये हरफ अल्लाह तआला में दूब  
जाने को, मिल जाने को, समा जाने को ज़ाहिर करता है जब  
बशर - आदमी का आदमी होना ख़त्म हो जाता है तो बस  
उसमें अल्लाह तआला की सिफात बाकी रह जाती है और  
अल्लाह की सिफात ना ख़त्म होती है ना फसाद का शिकार,  
और ना ही दूर होती है ।

बस सुनने वाला ख़त्म, बनाने और पालने  
वाला बाकी - बस इन्सान अल्लाह तआला की मर्जी के  
साथ, रज़ा के साथ हमेशा के लिये बाकी बन जाता है एसे  
बाकी रह गये इन्सान का दिल अल्लाह तआला के राज़ और  
उसकी नज़र के साथ बाकी हो जाता है जैसा के अल्लाह  
तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

“ हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवाय उसकी  
जात के ”

{ سुरह अल कसस 28  
आयत 88 }

यहाँ ये गुमान भी है कि इस से मकसद  
अल्लाह की रज़ा समझी जाये यानि सारी चीजें खत्म होने  
वाली हैं सिवाय उन आमाल और नेक कामों के जो सिर्फ  
और सिर्फ अल्लाह की रज़ा और उसको पसन्द आये  
सिर्फ इसलिये किये जाये - बस वो राज़ी बा रज़ा हो  
जाता है और ये ही तो बका है ।

अच्छे आमाल का नतीज़ा हकीकते  
इन्सान की जिन्दगी है जिसे तिफ्ल मआनी कहते हैं जैसा  
किताबे अल्लाह में है ।

“ उसी की तरफ पाक कलमात पढ़ते हैं और नेक  
आमाल पाकीज़ा कलाम को और बुलन्द करते हैं ”।

{ سुरह फत्तिर 35  
आयत 10 }

जब इन्सान अल्लाह में फना हो जाता है  
समा जाता है मिल जाता है तो वो अल्लाह के करीब रह  
जाने की जगह पर हमेशा के लिये कायम हो जाता है  
जैसा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

बड़ी पसन्द आने वाली जगह में अजीम  
कुदरत वाले बादशाह के पास बैठे होंगे

{ سُرहِ اَلْ كَمَر 54  
آیت 55 }

आलमे लाहूत में यही नबियों और  
औलियाओं के ठहरने की जगह है जैसा के अल्लाह तआला  
का इरशाद है -

“ हो जाओ सच्चों के साथ ”

{ سُرहِ تَوْبَة 9  
آیت 119 }

जब नया पुराने के साथ मिल जाता है तो  
नये का होना नहीं रह जाता इसी लिये कहा गया है अल्लाह  
तआला के सारे अफआल कदीमी है जो ख़त्म हो जाने से  
महफूज़ है जब फना पूरी हो जाये तो सूफी हक के साथ  
हमेशा के लिये बाकी रह जाता है ! जैसा किताबे अल्लाह में  
है -

“ यही जन्नती है और हमेशा इसी में रहने वाले हैं ”।

{ سُرहِ بَكَرَى 2  
آیت 82 }

यहाँ पर पहुँचकर तसव्वुफ का “ फाअ ”  
का मकाम खत्म हो जाता है ।

## ساتھی حیثیت

### فکر و احتجاج کے بارے میں

اللہ تعالیٰ جیکر کرنے والوں کو  
راہ دیکھاتے ہوئے فرماتا ہے ।

” جیکر کرو ڈسکا ڈس تراہ جس تراہ ڈس نے  
تومھے ہدایت دی ”

سุہن ال بکری 2  
آیت ۱۹۸

یعنی اللہ تعالیٰ کا ڈس تراہ جیکر  
کرو جس تراہ ڈس نے تاریکا بتایا - سرکارے دو آلام نے  
فرمایا بہترین کلمہ وہ ہے جسکو میں سمجھکر  
دوہراتا ہوں اور ڈس سے پہلے نبی سمجھ کر دوہراتے رہے ہے  
وہ کلمہ ” لَا إِلَهَ إِلَّا اللَّهُ لَا إِلَهَ ” ہے جیکر کے ہر  
مکام کا اک خیاس رکھتا ہے چاہے چुپا ہو آخوندی  
جیکر ہو یا جاہیری دیکھتا ہو آخوندی جیکر ہو پہلی مرتبا  
یہ ہے کہ اللہ تعالیٰ نے اپنے بندوں کو جذبانی جیکر  
کی ترف رہنوما ہے فرمائی فرمائی جیکر نفس ہے، فرمائی جیکر  
کلمہ، جیکرے روح، جیکرے سر ( راجح )، جیکرے خوفی،  
( خوندی، چھپا ہو آخوندی جیکر ) اور آخر میں چھپو ہوؤں میں

भी छुपा हुआ ( ज़िकरे अख़फा अल ख़फी ) का मरतबा है।

**लिसानी ( ज़बानी ज़िकर )**

यानि दिल को भुला हुआ सबक याद कराना है वो अल्लाह तआला का ज़िकर भुल चुका था इस ज़िकर के साथ उस को भुला हुआ सबक याद आ जायेगा ये बहुत ज्यादा कीमती नहीं है।

**ज़िकरे नफ्स**

ये ज़िकर सुनाई नहीं देता इस में हरफ वा सुरत पाये जाते हैं हाँ ये अन्दर में अन्दरूनी हवास के जरिये सुनाई देता है।

**ज़िकरे कल्बी**

इस का तरीका ये है के दिल अपने ही अन्दर अल्लाह तआला के जमाल और जलाल को लगातार देखता रहे।

**ज़िकरे रुही**

सिर्फ रुह ज़िकर करती है इस का नतीजा ये है के ज़िकर करने वाला अल्लाह तआला की तजल्ली और نور को देखकर गवाही देने वाला बन जाता है।

**ज़िकरे सिरी**

इस से मकसद ये है के अल्लाह तआला के राज़ों को जानने के लिये लगातार दिल की हो निगरानी करना।

**ज़िक्रे ख़फी**

सच्चे मकसद से ज़ाते अहंदियत ने अपने लिये जो सेज़ सजायी है उसके दीदार के लिये तकलीफ उठाना ।

**ज़िक्रे अख़फी अल ख़फी**

हव़कुल यकीन ( देख लेने के बाद यकीन - इमान का आ जाना कायम हो जाता ) की हकीकत पर नज़र रखना ज़िक्रे अख़फी अल ख़फी है । इस ज़िकर से सिवा अल्लाह तआला के कोई मुल्लाअ (खबरदार) नहीं हो सकता जैसा किताबे अल्लाह में है -

“ वो तो जानता है राज़ों को भी दिलों के धेदों को भी ”

{ سُرہ تَوْہَہ ۲۰  
آیت ۷ }

ज़िकर की ये सुरत तमाम आलमों तक पहुँचने वाली और तमाम मकसदों को लेने वाली है याद रहे एक और रूह भी है जिसे तिफ्ले मआनी कहा जाता है ये सबसे ज़्यादा लतीफ है ये अल्लाह तआला का ख़ास इनाम, अता किया हुआ है जो बन्दे को इन तरीकों से अल्लाह तआला की तरफ बुलाता है । जिनको अल्लाह की पहचान हो गयी वो फरमाते हैं के ये रूह हर एक को नहीं मिलती बल्कि सिर्फ ख़ास को दी जाती है जैसा अल्लाह तआला की किताब में है ।

“ नाज़िल फरमाता है वही अपने फज़्ल से अपने  
बन्दो में से जिस पर चाहता है । ”

{किताबे - अल्लाह}

ये रुह हमेशा आलमे कुदरत में रहती है  
और हकीकत की दुनिया को हमेशा इस तरह देखती है के  
इसकी नज़र कभी नहीं भटकती जैसा के सरकारे दो आलम  
ने फरमाया ।

“ ये दुनिया आखरत की फिकर करने वालों पर  
हराम है आखरत, दुनिया की फिकर करने वालों पर हराम है  
और ये दोनों ( दुनिया और आखरत ) अल्लाह वालों पर  
हराम है ”

अल्लाह तआला तक पहुँचने का अकेला  
रास्ता ये है के जिस्म हमेशा अल्लाह तआला के हुक्मों का  
पाबन्द रहे, सीधे रास्ते पर कायम रहे, हकीकत पसन्द करने  
वालों पर ये फर्ज़ है के वो हमेशा अल्लाह की याद में रहे  
जैसा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया ।

वो जो जिक्र करते रहते हैं अल्लाह तआला  
का, खड़े हुए, बैठे हुए और पहलुओं पर लेटे हुए और  
गौर करते रहते हैं ।

{सुरह अल इमरान 3  
आयत 191}

# आठवाँ हिस्सा

## ज़िक्र करने - याद करने की शर्तें

ज़िक्र करने वाले के लिये ये ज़रूरी हैं के सबसे पहले वो अपने अन्दर की पाचों हवास ( ज्ञानेन्द्रियों ) को पाक करे और उसके बाद अपनी बाहर की पाचों हवास को पाक करे, अपनी आवाज में रुहानी कुवत पैदा करे और “ नहीं ” “ नफी ” और “ असबात ” “ होना ” की सख्त जर्ब लगाये जिससे ज़िक्र का नुर उसके अन्दर कायम हो सके और उस नुर के जरिये उसका दिल आखरत और हमेशा की जिंदगी हासिल कर सके। जैसा किताबे अल्लाह में फरमाया गया है ।

“ ना चखेंगे वहाँ किसी और का ज़ायका सिवा इस पहली मौत के ”

{ ‘सुरह अल दरवान 44  
आयत 56

इसी तरह सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ अंबिया और औलिया अपनी कबरों में इसी तरह सलात कायम करते हैं जिस तरह पहले अपने घरों में सलात कायम करते थे । ”

यानि वो हमेशा अपने रब की याद में  
झूंबे रहते हैं ख्याल रहे, होशियार ! यहाँ ज़ाहिर की सलात  
मकसद नहीं है जिसमें कथाम - रुकू - सुजूद - कऊद होता  
है बल्कि यहाँ मकसद अल्लाह की याद कायम करना है  
जिसके बदले में अल्लाह तआला अपनी मआरफत -  
पहचान अता फरमाता है बस अल्लाह तआला की पहचान  
हासिल कर लेने वाले बली अपनी कबरों में अपने रब की  
तरफ सफर कर रहे होते हैं बस जिस तरह, हमेशा के लिये  
जिसका दिल जिन्दा हो गया वो सोता नहीं है इसी तरह वो  
मरता भी नहीं है ।

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ मेरी आखे सोती है और मेरा दिल नहीं सोता ”

और फरमाया -

“ जो इस्मे बातिन यानि अन्दर का इलम - तसव्वुफ  
का इलम हासिल करते हुए इन्तकाल पा जाये तो अल्लाह  
तआला उसकी कबर में दो रुहानी ताकतें भेजता है जो उसे  
अल्लाह तआला की पहचान का इलम अता करते हैं फिर वो  
शख्स अपनी कबर से अल्लाह तआला की पहचान के साथ  
उठेगा । ”

इन दो रुहानी ताकतों से मकसद सरकारे दो  
आलम और अल्लाह के वलियों की रुहानियत है क्योंकि  
फरिश्ते तो अल्लाह तआला की पहचान और दीदार के दायरे

में दाखिल ही नहीं हो सकते और ना वो इल्म दे सकते हैं ।

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ कितने ही एसे आदमी हैं जो ज़ाहिरी आलिमों और आम लोगों की नज़र में जाहिल मरेंगे लेकिन कथामत के दिन, अन्दर के इल्म के आलिम और अल्लाह तआला की पहचान के साथ उठेंगे और कितने ही ज़ाहिरी आलिम कथामत के दिन जाहिल और कंगाल होकर उठेंगे । ”

जैसा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

“ तुम ने खत्म कर दिया अपनी नेमतों का हिस्सा अपनी दुनिया की जिंदगी में और खुब लुत्फ उठाया तुमने इन से, आज तुम्हे रूसवार्इ का अजाब दिया जायेगा उस घमण्ड के बदले में जो तुम दुनिया में करते थे ”

सुरु अल अहकाफ 46  
आयत 20

फरमाया है -

“ अमल का दारोमदार नियत पर है ”

और सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ मोमिन की नियत उसके अमल से बेहतर है और अन्दर से झुठे की नियत उसके अमल से भी बुरी है ”

नियत आमाल की बुनियाद है अगर बुनियाद अच्छी तो इमारत भी मज़बूत और अच्छी और अगर बुनियाद गलत तो इमारत भी गलत !

### किताबे अल्लाह में है !

“ जो तलबगार हो आखरत की खेती का तो हम अपने फजलों करम से उसकी खेती को और बढ़ायेंगे और जो खाहिश रखता होगा इस दुनिया की खेती की, तो हम उसे दे देंगे इस से, लेकिन नहीं होगा उस के लिये आखरत में कोई हिस्सा ”

इन्सान के लिये जरूरी है के वो इस दुनिया में अपने पीरो - मुश्दि से हकीकत के दिल की जिन्दगी और आखरत की जिन्दगी तलब करे करीब है के बकत गुजर जाये ।

### सरकारे दो आलम ने फरमाया !

“ जिस ने आमाल तो आखरत के लिये किये लेकिन उन आमाल के जरिये दुनिया को चाहा उस का आखरत की नेमतों में कोई हिस्सा नहीं होगा । ”

ये दुनिया आखरत की खेती है जो यहाँ नहीं बोयेगा उसे वहाँ कुछ हासिल नहीं होगा यहाँ की खेती से मकसद, जिस्म और नियत के जरिये बिना किसी लालच के - सिर्फ और सिर्फ अल्लाह तआला के लिये किये गये नेक आमाल है ।

# ਨਵੰਹਿੰਸਾ

ਦੀਦਾਰੇ ਇਲਾਹੀ - ਅਲਲਾਹ ਤਆਲਾ ਕੋ ਦੇਖਨਾ

ਅਲਲਾਹ ਤਆਲਾ ਕੋ ਦੇਖਨੇ ਕੇ ਲਿਧੇ ਦੋ  
ਹਾਲਤੇ ਹੈ !

❶ ਆਖੂਰਤ ਮੇਂ ਹਕੀਕਤ ਕੇ ਦਿਲ ਕੇ ਆਇਨੇ ਮੈਂ ਕਿਸੀ  
ਜ਼ਰਿਯੇ ਔਰ ਵਾਸਤੇ ਕੇ ਬਿਨਾ ਅਲਲਾਹ ਤਆਲਾ ਕੇ ਜਮਾਲ ਕਾ  
ਦੀਦਾਰ ਕਰਨਾ

❷ ਦੁਨਿਆ ਮੇਂ ਰਹਤੇ ਹੁਏ ਹਕੀਕਤ ਕੇ ਦਿਲ ਕੇ ਆਇਨੇ ਮੈਂ  
ਅਲਲਾਹ ਤਆਲਾ ਕੀ ਸਿਫਾਰਤ ਕੋ ਦੇਖਨਾ

ਦੁਨਿਆ ਮੈਂ ਅਲਲਾਹ ਤਆਲਾ ਕਾ ਦੀਦਾਰ  
ਦਿਲ ਕੀ ਆੱਖ ਸੇ ਹੈ ਔਰ ਦੁਨਿਆ ਮੈਂ ਅਲਲਾਹ ਤਆਲਾ ਕੀ  
ਸਿਫਾਰਤ ਹਕੀਕਤ ਕੇ ਦਿਲ ਕੇ ਆਇਨੇ ਪਰ ਪਢਤਾ ਹੈ ਤੋ ਇਨਸਾਨ  
ਦਿਲ ਕੀ ਆੱਖ ਸੇ ਇਸ ਦੇਖਨੇ ਵਾਲੇ ਕੋ ਦੇਖਤਾ ਹੈ ਕਿਤਾਬੇ  
ਅਲਲਾਹ ਮੈਂ ਹੈ -

“ ਨਾ ਝੁਠਲਾਯਾ ਦਿਲ ਨੇ ਜੋ ਦੇਖਾ ”

{ ਸੁਰਖ ਨਜ਼ਮ 53  
ਆਵਤ 11 }

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

" मोमिन - मोमिन का आइना है " !

पहले मोमिन से मक्सद मोमिन बन्दे का  
दिल है और दुसरे मोमिन से मक्सद ज़ाते बारीय तआला है  
जैसा कि अल्लाह तआला ने फरमाया -

" सलामत रखने वाला अमान बख्शने वाला  
निगहबान "

{ سुह 59  
आयत 23 }

जिस ने दुनिया में अल्लाह तआला की  
सिफात, ख़ासियत का दीदार कर लिया वो बिना किसी  
खुमार और मस्ती के आख़रत में भी अल्लाह तआला के  
दीदार का इनाम पायेगा !

रहे वो दावे जो अल्लाह तआला को  
पहचान लेने, जान लेने वालों ने किये जैसे -  
हज़रत मौला अली मुश्किल कुशा ने फरमाया -

" मै ऐसे खुदा की इबादत नहीं करता जिसे मै देख  
ना हूँ ! "

एक और आरिफ ने फरमाया -

" मेरे दिल ने मेरे रब के नूर के जरिये अपने रब का  
दीदार किया "

किताबे अल्लाह में है -

“ जैसे एक ताक हो जिस में चिराग हो ”

{ सुरह अल बूर 24  
आयत 35 }

सूफी हज़रात के मुताबिक ताक से मक्सद मोमिन बन्दे का हक्कीकत का दिल है और चिराग अन्दर की आँख है यही रुहे सुलतानी है और शीशे से मक्सद जान है इसकी सिफ्त बारीकी है जो नूर को ज़ाहिर करती है फिर अल्लाह तआला इस नूर के निकलने, शुरू होने की जगह के बारे में फरमाता है –

“ जो रोशन किया गया है बरकत वाले जैतून के दरख़ा से ”

यहाँ दरख़ा से मक्सद उस अन्दर के इल्म से है जिस अन्दर के इल्म का छोटा बीज, कामिल मुर्शिद अपने मुरीद के सीने के अन्दर लगाता है अल्लाह तआला के एक होने को जान लेना, पहचान लेना – का ख़ास राज़ बिना किसी वास्ते के सिर्फ पाक ज़बान से बाहर निकलता है !

जिस तरह सरकारे दो आलम का कुरान करीम से असल तआल्लुक है फिर ये कुरान हज़रत जिबराईल अ. स. के वास्ते से थोड़ा – थोड़ा नाज़िल होता रहा – हज़रत जिबराईल अ. स. के जरिये दोबारा कुरान का नाज़िल होना आप इन्सानों के फायदे के लिये था और इसलिये भी के काफिर और मुनाफिक इसका इन्कार ना कर

सकें इस पर दलील अल्लाह तआला का ये पाक  
फरमान है –

“ बेशक आप को सिखाया जाता है कुरान बड़े  
इल्म वाले और बड़ी हिक्मत वाले की तरफ से ”

{ سुरह ۲۷  
آیت ۶

इसी लिये सरकारे दो आलम पहले एक  
कानून बनाते और उसके बाद हज़रत जिबराईल आमीन  
वही लेकर हाज़िर होते यहाँ तक के ये आयत नाज़िल  
हुईं !

“ ना जल्दी कीजिये कुरान के पढ़ने में इस से  
पहले के पुरी हो जाये आप की तरफ उस की वही ”

{ سुرह تہٰہ ۲۰  
آیت ۱۱۴

यही वजह भी के मेराज की रात  
हज़रत जिबराईल अमीन सीदरतुल मुन्तहा पर रूक गये  
और एक कदम भी आगे ना बढ़ा सके !

अल्लाह तआला ने दरख़्त की सिफ्त फरमाई !

“ जो ना मशरिक में है ना मग़रिब में ”

{ سुرह کوٰر ۲۴  
آیت ۳۵

इसे नया होना - ना हो जाना - उगना -  
 छूबना - बीमार होना - नहीं आते बल्कि ये दरख़्त हमेशा  
 से हैं और कभी खत्म ना होगा - जिस तरह अल्लाह  
 तआला वाजिब उल वुजूद है हमेशा से हमेशा तक है  
 क्योंकि ये सिफात अल्लाह तआला का नूर और तजल्ली  
 है और ये एक रिश्ता है जो उसकी जात से कायम है  
 नामुमकिन नहीं, के नपसे अम्मारा का परदा दिल से हट  
 जाये दिल नूर से रोशन हो जाये और रूह इस तक से  
 अल्लाह तआला की सिफात को देख सके क्योंकि ये  
 दुनिया बनाने का मकसद भी यही है के अल्लाह तआला  
 के दीदार का जो छुपा खजाना है वो ज़ाहिर हो जाये -  
 अल्लाह तआला का दीदार अन्दर की आँख से होता है  
 जैसा कि अल्लाह की किताब में है !

“कई चेहरे उस रोज़ तरो - ताज़ा होंगे और अपने  
 रब की तरफ देख रहे होंगे ” {‘सुरह अल क्यामत 75  
 आयत 22

सरकारे दो आलम ने फरमाया -  
 “ मैंने अपने रब का दीदार एक नौजवान की सुरत  
 में किया ”

शायद इस फरमान में नौजवान से मकसद  
 तिप्पते मानी हो और अल्लाह तआला ने इस सुरत में दिल  
 के आईना में बिना किसी वास्ते के तजल्ली फरमाई हो -

वरना अल्लाह तआला तो सुरत - मादा - जिस्म के ख़्बास से पाक है !

सुरत दिखाई देने वाले के लिये आईना है वो ना तो खुद शीशा है और ना खुद देखने वाला है बस इस नुक्ते को समझने की कोशिश कीजिये ये बहुत गहरा राज़ है सिफात का अक्स का अक्स आलमे सिफात में है आलमे ज़ात में नहीं क्योंकि आलमे ज़ात में तो सारे वास्ते जल जाते हैं और झूब जाते हैं वहाँ सिर्फ अल्लाह तआला की ज़ात समा सकती है कोई गैर नहीं जैसा के सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ मैंने अपने रब को अपने रब के जरिये पहचाना ”

यानि अपने रब के नूर के जरिये  
हकीकते इन्सान इस नूर के लिये जानकार है जैसा हदीसे कुदसी में फरमाया गया है -

“ इन्सान मेरा राज़ है और मैं इन्सान का राज़ हूँ ”

सरकरे दो आलम ने फरमाया -

“ मैं अल्लाह से हूँ और मोमिन मुझ से है ”

एक और हदीसे कुदसी है -

“ मैंने मोहम्मद स.अ.व. को अपनी ज़ात के नूर से पैदा किया ”

यहाँ मक्सद अल्लाह तआला की पाक ज़ात है जो सिफात रहमत में तजल्ली फरमाती है जैसा के

हदीसे कुद्सी में अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ मेरी रहमत मेरे गज़्ब पर सबकत ले गयी ”

अल्लाह तआला ने अपने नबी हज़रत  
मोहम्मद स.अ.व. से फरमाया -

“ नहीं भेजा हमने तुमको मगर सरापा रहमत बना कर  
सारे जहानों के लिये ”

{‘सुरह अल अम्बिया 21  
आयत 107’}

और एक जगह फरमाया -

“ बेशक तशरीफ लाया है तुम्हारे पास अल्लाह  
तआला की तरफ से एक नूर और एक किताब ज़ाहिर करने  
वाली ”

{‘सुरह अल मायदा 5  
आयत 15’}

अल्लाह तआला हदीसे कुद्सी में फरमाता है -

“ अगर आप को बनाना मकसद नहीं होता तो मैं  
कायनात ( अफलाक ) को पैदा नहीं करता ”

# दुसरा हिस्सा

## जुल्मानी और नुरानी परदे

अल्लाह तआला ने अपनी किताब में  
फرمाया -

“ जो शख्स इस दुनिया में अन्धा रहा वो आख़रत में  
भी अन्धा रहेगा और सीधे रास्ते से बड़ा दूर होगा ”

{ سुरुच अल असरा 17  
आयत 72 }

यहाँ अन्धा होने से मकसद दिल का अन्धा  
होना है जैसा एक दुसरी आयत में फरमाया गया है -

“ हकीकत तो ये है के आँखे अन्धी नहीं होती बल्कि  
वो दिल अन्धे हो जाते हैं जो सीनों में है ” { سुरुच अल हज 22  
आयत 46 }

दिल के अन्धा होने की वजह, अन्दर का  
अंधेरा, गुफलत - अन्दर के इल्म का ना मालूम होना रस्मे,  
अफवाहें, दीन में मिलावट, और रस्मी इस्लाम का मशहूर  
होना है क्योंकि अल्लाह तआला से किये वादे को एक  
लम्बा वक्त गुजर चुका है और ग़ाफिल होने की वजह

अल्लाह तआला के हुक्मों को ना जानना है  
और जहालत की वजह रसमी, ज़ाहिरी, मिलावटी, अलग -  
अलग फिरकों का इलम है और इन्सान तकब्बुर - कीना -  
हसद - बुख्ल - जुल्म - ग़ीबत - झुठ जैसी अन्दर की  
बीमारियों का बीमार है और ये सब ही इन्सान की बुरी हालत  
के लिये जिम्मेदार है !

### ગુજારિશ મુતર્જિમ

अगर इन्सान को अपनी हालत बेहतर और  
अच्छी करनी है तो इन्सान को इन बुरी आदतों को छोड़ना ही  
होगा !

इन बीमारियों से दूर होने का तरीका ये है के  
पहले मजबूत इरादा करके जौक - शौक पैदा करे और  
तौहीद ( अल्लाह तआला के एक होने को जानने - पहचानने  
के रास्ते पर लगे और अपने हकीकत के दिल को पाक साफ  
करे अगर इस तरीके को अपनाया जाये तो दिल नाम और  
सिफात के नुर से एक नयी जिन्दगी हासिल कर लेगा और  
उसे अपना असली वतन याद आ जायेगा फिर ये दिल अपने  
उस हकीकत के वतन में बेहतरी मिले इसके लिये कोशिश  
करने लगेगा और अल्लाह रहमान और रहीम के जरिये  
अपनी मंजिल तक पहुँचने में कामयाब हो जायेगा !

जुल्म के परदे हटने के बाद सिर्फ नुरनियत

बाकी रह जायेगी अब रूह की आँख देखने वाली बन जायेगी नाम और सिफात के नुर से अन्दर रोशनी फैल जायेगी फिर एक वक्त वो भी आयेगा के नुर के परदे भी उठ जायेंगे और दिल रोशन हो जायेगा ---- याद रहे के अन्दर मैं हकीकत के दिल की दो आँखें हैं एक छोटी आँख है और दुसरी बड़ी आँख -

### छोटी आँख

ये आँख नाम और सिफात के नुर से, सिफात के असर से, दुनियाँ की आख़री हद तक देखकर गवाह बनती है!

### बड़ी आँख

ये आँख इस दुनिया में ज़्यात के नुर की तजल्ली को देख कर गवाह बनती है इस से मकसद तौहीद के नुर के जरिये अल्लाह तआला के करीब होना है ये वो ही मकाम है जो इन्सान, जिस्मानी मौत से पहले इन्सान अपना इन्सान होने को खत्म करके हासिल करता है जैसे - जैसे इन्सान अपने इन्सान होने को खत्म करता जाता है, अपनी खुदी को खत्म करता जाता है, इन्सानी सिफात से ताल्लुक खत्म करता जाता है, कुरबत के मकाम के करीब होता जाता है!

अल्लाह तआला से मिल जाने का ये मतलब बिल्कुल नहीं है के इन्सान का जिस्म अल्लाह तक

पहुँच जाये जैसे एक जिस्म दुसरे जिस्म तक - इलम -  
 मालूम तक अक्ल - माकुल तक - वहम - मौहम तक  
 पहुँचता है बल्कि अल्लाह के करीब होने का मकसद ये है  
 के नजदीक और दुरी के बिना कुरबत हासिल की जाये  
 जितना बाकी चीजों से ताल्लुक खत्म होगा उतना ज्यादा  
 अल्लाह से मिलना होगा अल्लाह तआला पाक है जिस के  
 ज़ाहिर होने, छुपा होने में हिक्मत छुपी है !

जिसे ये मकाम दुनिया में मिल गया के  
 दोनों जहाँ से कामयाब हुआ वरना अज़ाबे कबर, हशर और  
 अज़ाबे हिसाब - मीजान और पुल सरात का सामना करना  
 होगा !

# ब्यारहवाँ हिस्सा

## सआदत और शकावत

सआदत - नेक काम करने का मौका, नेक बख़्ती - नेक काम करने की किस्मत -

शकावत - बुरे काम करने का मौका, बुरे काम करने की किस्मत - बदबख़्ती !

याद रहे के इन्सान इन दो हालतों से खाली नहीं है इसी तरह ये दोनों हालतें एक इन्सान में भी पायी जा सकती हैं जब इन्सान की नेकियाँ और सिर्फ अल्लाह तआला के लिये, किये गये काम असर करते हैं तो उसकी बदबख़्ती - नेकबख़्ती में बदल जाती है नफसानियत की जगह रूहानियत ले लेती है लेकिन जब इन्सान अपनी ख़बाहिशात के पीछे भागने लगता है तो मामला इससे उल्टा हो जाता है अगर नेकी और बुराई बराबर हो जाये तो अच्छाई की उम्मीद लगानी चाहिये क्योंकि अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ जो नेक काम करेंगे उनको दस गुना अच्छा बदला दिया जायेगा ”

{ سुहृ अल अनआم 6  
आयत 161 }

तराजु इसीलिये है क्योंकि जब बुराई पुरी तरह से भलाई में बदल जाती है तो तराजु की ज़रूरत नहीं पड़ती और इन्सान बिना किसी हिसाब के बारगाहे खुदा वन्द तआला में पेश हो जाता है और इस का ठिकाना जन्नत करार दे दिया जाता है इसी तरह जिस शख्स में सिर्फ बुराई और बदबूज़ी हो वो बिना हिसाब दोज़ख में भेज दिया जाता है तीसरी हालत ये है के इन्सान की बुराईयाँ और नेकियाँ दोनों आमाल में दर्ज हैं अगर नेकियाँ ज्यादा हैं तो एसा शख्स बिना अज़ाब जन्नत में जायेगा जैसा कुरान करीम में है !

“ बस जिसके नेकियों के पलड़े भारी होंगे तो वो दिल पसन्द एश और सुकून में होंगे ” {  
सुरह अल काहेआ 101  
आयत 6-7}

और जिस शख्स की बुराईयाँ ज्यादा होंगी तो उसे बुराईयों के मुताबिक अज़ाब दिया जायेगा नेकबूज़ी और बदबूज़ी से मकसद नेकियों और बुराईयों की एक दुसरे की जगह ले लेना है जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ नेकबूज़ा कभी बदबूज़ा बन जाता है और बदबूज़ा कभी नेकबूज़ा बन जाता है ”

जब नेकियाँ बढ़ जाती हैं तो इन्सान सआदत मन्द बन जाता है और जब बुराईयाँ बढ़ जाती हैं तो इन्सान बदबूज़ा कहलाने लगता है इन्सान अगर सच्ची

तौबा करे, हकीकत का इमान हासिल करे और हमेशा के लिये नेक और अच्छा बनने का इरादा करे तो अल्लाह तआला उसकी बदबख़्ती को खुशबख़्ती में बदल देता है हमेशा की नेकी और बुराई वो अलग है जो इन्सान की किस्मत में लिखी जा चुकी है जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ नैक अपनी माँ के पेट में नेक होता है और बुरा अपनी माँ के पेट में बुरा होता है ”

इस बारे में ज्यादा बात करने की इजाज़त नहीं है क्योंकि ये राज़ तकदीर से ताल्लुक रखता है इस पर बहस नहीं हो सकती !

बुख़ारी की तफसीर करने वाले फरमाते हैं बहुत से राज़ ऐसे हैं जिन्हे समझा तो जा सकता है लेकिन इनको बताया नहीं जा सकता जैसे के तकदीर का राज़ - इब्लीस ने अपने खुद, हृद से बाहर जाने को, तकदीर के सर पर थोप दिया इसीलिये इस पर लानत की गयी जबकि आदम अ.स. ने अपनी ख़ुता को अपनी तरफ से ही समझा इसी बजह वो कामयाब हुए और इन पर रहम किया गया !

रिवायत में आया है के किसी आरिफ कामिल ने बारगाहे खुदावन्दी में अर्जु किया - तूने ही फैसला फरमाया तूने ही इरादा किया तूने ही मेरे नफ्स में कमी पैदा की - गैब से आवाज़ आई ए मेरे बन्दे ! ये तो

तौहीद की शर्त है - बता अबदियत की शर्त क्या है ?  
 उस आरिफ ने फिर इल्लजा की और अर्ज किया मौला -  
 मैंने ख़ता की - मैं गुनाहों में शामिल हुआ - मैंने अपनी  
 जान पर जुल्म किये - गैब से फिर आवाज़ आई - मैंने  
 तेरे गुनाह माफ कर दिये - तेरी ख़ताओं को नज़र अन्दाज  
 किया और तुझ पर रहम और करम फरमाया !

किताबे अल्लाह में है -

“ वो ही है जो तुम्हें दिखाता है कभी बिजली  
 डराने के लिये और कभी उम्मीद दिलाने के लिये और  
 उठाता है हवा के कन्धों पर भारी बादल ”

{ سُرہِ آلِ اَنْبَاب ۱۳  
 آیات ۱۲ }

अल्लाह के बली से पूछा गया के  
 अल्लाह तआला की पहचान का तरीका क्या है ?  
 फरमाया मुख़ालिफ चीजों को एक जगह जमा करना -  
 इसीलिये इन्सान किताब की माँ, का नुस्खा अल्लाह  
 तआला के जलाल और जमाल का आईना और पुरी  
 कायनात का मजमुआ है इन्सान पुरी कायनात और बड़ी  
 दुनिया कहलाता है क्योंकि अल्लाह तआला ने इसे अपने  
 दोनों हाथों यानि कहर की सिफ्त वा लतीफ की सिफ्त से  
 पैदा फरमाया है कहर और लतीफ की दो मुख़ालिफ  
 सिफात की वजह ये है के आईने में दो जहत ( जानिब )  
 होती है एक ठोस और दुसरी लतीफ - बस इन्सान बाकी

सभी चीजों से अलग, अल्लाह तआला के तमाम नामों को ज़ाहिर करने वाला है क्योंकि बाकी तमाम चीजों को बनना एक हाथ यानि एक सिफ्ट से हुआ है रही सिफ्ट लतीफ की तो इससे सिर्फ फरिश्ते जैसी मख़्लूक की पैदायश अमल में आई है और फरिश्ते इस्म सुबूआ और कुहुस को ही ज़ाहिर करने वाले हैं !

इबलीस और उसकी औलाद की पैदायश की सिफ्ट कहर से है जो कि इस्म - “जबर-दस्ती करने वाला” को ज़ाहिर करने वाला है !

इसीलिये इसने आदम अ.स. को सजदा करने से इन्कार किया और तकब्बुर वालों में हो गया !

जब इन्सान पुरी कायनात उपर वाली और नीचे वाली की तमाम ख़ासियतों को इकट्ठा करने वाला है तो ये नहीं हो सकता के नबी और औलिया गलती करने से ख़ाली हो बस अम्बिया नबुवत और रिसालत के बाद बड़े गुनाहों से मासूम होते हैं छोटे गुनाहों से नहीं जबकि औलिया मासूम नहीं हैं ये कहा गया है के विलायत के पुरा हो जाने के बाद औलिया बड़े गुनाहों से महफुज़ हो जाते हैं !

हज़रत शफीक बल्खी ने फरमाया नेकी की पाँच निशानियाँ होती हैं दिल की नरमी - ज्यादा रोना - दुनिया से ताल्लुक खत्म होना - उम्मीदों का कम होना और शर्म व हया का बढ़ना और बुराई की भी पाँच

निशानियाँ हैं - दिल का सख्त होना - आखों का आसुओं से खाली होना - दुनिया से लगाव - बड़ी उम्मीदें और शर्म और हया की कमी !

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

नेकी करने वाले की चार निशानियाँ हैं - जब कोई अमानत सुपुर्द हो तो इन्साफ करेगा - बादा करेगा तो पुरा करेगा - बोलेगा तो सच कहेगा - झगड़ेगा तो गाली ना देगा और बुरे - बदबख्त की भी चार निशानियाँ हैं जब इसे अमानत रखने वाला बनाया जायेगा तो उसमें ख्यानत करेगा - बादा करेगा तो पुरा नहीं करेगा - बोलेगा तो झुठ बोलेगा - किसी से लड़ेगा तो गालियाँ देगा और लोगों को माफ नहीं करेगा - जैसा के अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ बस जो माफ कर दे और सुधार कर दे तो उस का बदला अल्लाह तआला पर है ” { किताबे अल्लाह }

याद रहे के बुराई बदबख्ती का नेकी - नेकबख्ती में बदल जाना और भलाई का बुराई की जगह ले लेना तरबियत और सोहबत के बिना मुमाकिन नहीं जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ हर बच्चा फितरते इस्लाम पर पैदा होता है लेकिन उसके माँ - बाप उसे यहुदी बना देते हैं नसरानी बना देते हैं या मजुसी (आतिश परस्त) बना देते हैं ”

इस हदीस से ये हकीकत ज़ाहिर होती है के हर एक इन्सान में नेकी करने और बुराई करने दोनों की काबिलियत होती है ये नहीं कहना चाहिये के ये इन्सान सिर्फ अच्छा ही है या सिर्फ बुरा ही है हाँ ये कहना सही है

के वो इन्सान खुशनसीब हैं जबकि उसकी निगाह इस पर है के उसकी नेकियाँ उसकी बुराईयों से ज्यादा हैं यही मामला बदबख़्त के लिये भी है जो शख्स इस ठसुल को तोड़ेगा गुमराह हो जायेगा क्योंकि उसका ये यकीन हो गया के कुछ लोग नेक अमल और तौबा के बिना भी जनत में जा सकते हैं या कुछ लोग बुराईयों के बिना भी दोजख़्त में जा सकते हैं ऐसा कहना किताबे अल्लाह और सुन्नत के खिलाफ है क्योंकि अल्लाह तआला का नेक लोगों से जनत का बादा है और कुफर करने वालों, यकीन ना करने वालों से जहन्नुम की आग और बदले के दिन का बादा है ! जैसा किताबे अल्लाह में है -

“ जो नेक अमल करता है तो वो अपने भले के लिये और जो बुराई करता है उसका बवाल उस पर है ”

{ سुरह-फसलत-हा-मीम سज्जदा 41  
आयत 46 }

“ आज बदला दिया जायेगा हर नफस को जो उसने कमाया था आज जरा भी जुल्म ना होगा ”

{ سुरह ग़ाफिर-मोमिन 40  
आयत 17 }

इन्सान को वो ही मिलता है जिसकी वो कोशिश करता है और उस की कोशिश का नतीजा जल्द सामने आ जायेगा ।

{ سुरह अल नज्म 53  
आयत 39-40 }

“ जो कुछ आगे भेजोगे अपने लिये नेकियों की शक्ति में, जरूर पाओगे उसका बदला अल्लाह के यहाँ ”

{ سुरह अल बकरा 2  
आयत 110 }

# बाहुरवाँ हिस्सा

## फुकरों का बयान

कुछ आलिम कहते हैं के फकीर - याद रहे फकीर, भिखारी नहीं, फकीर और भिखारी में जमीन - आसमान का फर्क है कुछ लोग फकीर और भिखारी को एक ही समझते हैं ये उनकी बहुत बड़ी भुल है - भिखारी इस दुनिया की चीजों की भीख़ लेता है जबकि फकीर रुहानी भीख़ - रुहानी अन्दर का इल्म बाँटता है भिखारी लेता है फकीर देता है फकीर का मकाम बहुत बड़ा है इसीलिये सरकारे दो आलम ने फरमाया "फकर मेरा फखर है" यानि हकीकत में फकीर होना सरकारे दो आलम के नजदीक फखर करने लायक मकाम है (मुतर्जिम) (फकीर तो अमीर है)

बहरहाल कुछ लोगों का कहना है के फकीर ऊन का लिबास पहनने वाले को कहते हैं कुछ लोग ये बजह बताते हैं के ये अल्लाह के गैर से दिल को पाक कर लेते हैं यानि सिर्फ अल्लाह तआला के ही हो रहते हैं इसलिये इन्हें फकीर कहा जाता है कुछ लोगों का कहना है के ये कथामत के दिन अब्वल सफ में रहेंगे इसलिये इनको सूफी या फकीर कहा जाता है।

## गुजारिश-मुर्तजा

जिन लोगों ने ये कहा या लिखा के सूफी और फकीर ऊन के कपड़े पहनने वाले को कहते हैं वो कम नज़र रखते हैं उन्होंने सिर्फ बाहर - बाहर देखा ऊन या पश्मीना के कपड़े पहन लेने से कोई सूफी या फकीर नहीं हो जाता वो बात अलग है के सूफी का मकाम हासिल हो जाने के बाद कोई अपनी मर्जी से ऊन का लिबास पहनने लगे सूफी या फकीर होना ऊन के लिबास का मोहताज नहीं है !

हकीकत में तो सूफी या फकीर होने की कोई तारीफ या परिभाषा हो ही नहीं सकती जो भी परिभाषा या तारीफ लप्जों से बनाओगे सूफी या फकीर होना उस से बाहर हो जायेगा क्योंकि सूफी या फकीर होना एक कैफियत का नाम है और कैफियत और हालत लप्जों के जरिये पुरी - पुरी बयान नहीं हो सकती लेकिन फिर भी अपने आपको अन्दर - बाहर से जो इन्सान पुरा - पुरा पाक कर ले वो सूफी या फकीर होने की राह पर चल निकला ये है एक हकीकत का पहलु !

जो ज़ाहिरी आलिम ये कहते हैं के अल्लाह के सिवा या अल्लाह के गैर - अलग को दिल से निकाल देने का नाम सूफी या फकीर होना है - उन्हें ये पता होना चाहिये के उनकी ये बात बाहर के इलम की है ये बात ज़ाहिरी आलिम करते हैं क्योंकि ज़ाहिरी आलिम ये मानते हैं के

अल्लाह के सिवा - अल्लाह से गैर - अल्लाह से अलग भी कोई है वरना वो इस से बचने को क्यों कहते । और उनका ये कहना और मानना के अल्लाह के सिवा भी कोई है अल्लाह तआला की किताब के सख्त ख़िलाफ है ।

हकीकत में तो अल्लाह के सिवा कोई और मौजूद ही नहीं है कायनात की हर शै उसकी सिफ़ात को ज़ाहिर कर रही है सिफ़ात ज़ात के बिना नहीं हो सकती और इन्सान अशरफ उल मख़्लुकात - बनने वालों में सबसे बेहतर इसलिये है के वो अल्लाह तआला को ज़ाहिर करने वाला है ।

जिन ज़ाहिरी आलिमों का ये कहना है के सूफी या फकीर उसको कहते हैं जो कयामत के दिन अब्बल सफ में होगा उन्हे समझाना चाहिये के “कयामत का दिन” वक्त के एतबार से मुस्तकबिल - भविष्य - आने वाले वक्त में होने वाले काम का नाम है अब जबकि गैब की दुनिया में वक्त नाम की कोई चीज़ ही नहीं है तो मुस्तकबिल और माज़ी कैसे होगा गैब की दुनिया में तो बस मौजूद हाल है जब वक्त ही नहीं है तो आने वाला वक्त कैसे होगा, वक्त सिर्फ इस दुनिया में ही है वहाँ नहीं, तसव्युफ में, फकीरी में सब कुछ नकद और हाथो - हाथ है - शुक्रिया

बहरहाल सफे अब्बल से मकसद अल्लाह तआला के करीब होना है क्योंकि आलम चार है आलम मुल्क जिसे आलमे नासूत भी कहा जाता है आलमे मलकूत

फरिश्तों की दुनिया - आलमे जबरूत और आलमे लाहूत -  
आलमे लाहूत ही हकीकत का आलम है !

इसी तरह इल्म भी चार है - इल्मे शरीयत -  
इल्मे तरीकत - इल्मे मआरफत - इल्मे हकीकत इसी  
तरह रूह के भी चार मकाम है - रूहे जिस्मानी - रूहे  
रखानी या रूहे सैरानी - रूहे सुलतानी - रूहे कुदसी -  
बिलकुल इसी तरह तजल्ली ( रोशनी - जलवा ) भी चार  
है तजल्ली आसार - तजल्ली अफआल - तजल्ली सिफात  
- तजल्ली जात और अकल भी चार हैं अकले मआशी -  
अकले मआवी - अकले जवानी - अकले कुल -

लोग चार आलमों के मुकाबले में चार  
किस्म की कैद लगाते हैं यानि - चार का इल्म - रूह का  
इल्म - रोशनी या जलने का इल्म - अकल का इल्म कुछ  
लोग पहले इल्म - पहली रूह - पहली जन्त यानि जन्ते  
मावा के साथ कैद है एसा ख्याल करते हैं कुछ दुसरी किस्म  
को दुसरी जन्त के साथ कैद करते हैं दुसरी जन्त से  
मकसद जन्ते नईम है कुछ तीसरी किस्म को तीसरी जन्त  
यानि जन्ते फिरदोस के साथ कैद करते हैं ये लोग हकीकत  
से वाकिफ नहीं हैं !

अहले हक - फुकरा - कामिल सूफी  
पहचान हो गई जिनको, इन सब कामों से आगे अल्लाह  
तआला के करीब होने की तरफ निकल गये, वो अल्लाह के  
सिवा किसी से ताल्लुक नहीं रखते वो अल्लाह तआला के  
इस हुक्म को ही मानकर इसी पर चलते हैं !

“ बस दोड़ो, अल्लाह की तरफ ”

{ ‘ सुरुज जार्यात ५१  
आयत ५०

और सरकारे दो आलम ने फरमाया –

“ ये दुनिया और आख़रत दोनों अल्लाह को चाहने वालों पर हराम है ”

और हदीसे कुदसी के जरिये अल्लाह तआला ने फरमाया –

“ मेरी मोहब्बत फुकरों की मोहब्बत में है ”

और सरकारे दो आलम ने फरमाया –

“ फकर मेरा फखर है ”

फकर से मकसद अल्लाह तआला मैं फना हो जाना, डूब जाना है ! जिस के दिल में कोई अपनी ख़ाहिश नहीं होती और ना ही इसके दिल में कोई गैर या किसी गैर की मोहब्बत समा सकती है जैसा कि अल्लाह तआला ने हदीसे कुदसी के जरिये फरमाया –

“ मैं अपनी ज़मीन और अपने आसमान में नहीं समा सकता मगर अपने बन्दाये मोमिन के दिल में समा जाता हूँ ! ”

यानि ऐसा बन्दा ए मोमिन जिस का दिल इन्सानी सिफात से पाक – साफ हो किसी गैर का ख्याल भी इस में ना रहे बस ऐसे दिल में अल्लाह तआला का नूर का अक्स असर आ जाता है और फिर वो इस दिल में समा जाता है !

हज़रत बा - यजीद बस्तामी फरमाते हैं के बन्दा ए मोमिन के दिल में एक कोने में अगर अर्श और लुभाने वाली चीजों को रखा जाये तो उसे अहसास तक ना हो जो इन अल्लाह वालों के ताल्लुक और सोहबत में रहते हैं आख़रत में उनके साथ होंगे फकीरों की निशानी ये है के इन्सान उनके साथ बैठना पसंद करे हमेशा अल्लाह तआला को चाहने वाला रहे और इस के दिल में अल्लाह तआला से मिलने की तलब और तड़प हमेशा कायम रहे जैसा बारीये तआला ने फरमाया -

“ नैक बन्दो ने मेरी मुलाकात का शौक एक अरसे से दिल में पाल रखा है मैं इन से कहीं ज्यादा इन से मुलाकात का शौक रखता हूँ ”

### सूफियों का लिबास

सूफियों का लिबास तीन तरह का होता है शुरूआत में बकरी की ऊन का, और आगे पहुँच गये इन्सान के लिये भेड़ की ऊन का और इन्तहा पर पहुँचने वाले के लिये पश्च, इसमें चार किस्म की ऊन मिली होती है !

लिखा गया है के कोशिश करने वाले के लिये सख्त लिबास और सख्त खाना पीना है क्योंकि वो शुरूआत में है बीच वाले सुफी के लिबास में अच्छाई के अलग - अलग रंग होते हैं हकीकत की शरीयत का रंग, तरीकत का रंग, अल्लाह तआला को पहचान लेने का रंग,

इसलिये इन के लिबास में सफेद नीला और सब्ज़ रंग होते हैं जबकि इन्तहा यानि मंजिल पर पहुँच जाने वाले का अमल तमाम रंगों से खाली होता है जिस तरह सूरज की रोशनी में जाहिरी तौर पर कोई रंग नहीं और इस का नूर रंगों को कुबूल नहीं करता इसी तरह मंजिल पर पहुँच जाने वाले लोगों का लिबास भी रोशनी की तरह किसी रंग को कुबूल नहीं करता ये फना की निशानी है और इन की पहचान के नूर के लिये नकाब है जिस तरह रात सूरज की रोशनी के लिये नकाब का काम देती है !

किताबे अल्लाह में फरमाया गया है –

“ ढांकता है रात से दिन को ” { सुरुह अल आराफ 7  
आयत 54 }

इसी तरह फरमाया गया है –

“ हम ने बना दिया रात को परदा पौश ” { سुरुह नबा 78  
आयत 10 }

तरीकत की समझ रखने वालों के लिये इस में बारीक इशारा है !

एक दुसरी वजह भी है के जो अल्लाह के करीब हो गये हैं वो इस दुनिया में मुसाफिर हैं उनके लिये ये दुनिया ग़म - मलाल - मेहनत की दुनिया है जैसा के सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ दुनिया मोमिन के लिये कैद खाना है ”

इसीलिये इस ज़ालिम दुनिया में जुलम का लिबास ही सजता है सही हीदीसों से साबित है कि सरकारे दो आलम काला लिबास पहनते थे और काला अमामा ( पाड़ी ) बांधा - काला लिबास मुसीबत का लिबास है ये उन लोगों के जिस्म पर सजता है जो मुसीबत ज़दा हों और ग्रम में हों सूफी हज़रात ग्रम में है क्योंकि वो शाहिद होने के ज़रिये अल्लाह के सामने हैं और इसी हालत की वजह से हमेशा की मौत में है और ग्रम की हालत में है इसलिये मोहब्बत इमरान रखने वालों के लिये ग्रम का लिबास बेहतर है !

क्योंकि उन लोगों को आख्यरत के मुनाफे या फायदे में कोई दिलचस्पी नहीं होती !

जिस औरत का ख़ाविन्द फौत हो जाये उसके लिये हुक्म है के वो चार महीने दस दिन तक ग्रम में रहे क्योंकि इस से दुनिया का फायदा और मुनाफा छिन गया है !

सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ सबसे ज्यादा तकलीफ का सामना नबियों को करना पड़ता है फिर उनके सहाबी और फिर उन के दोस्त ”

और सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ सच्चा खुलूस रखने वालों को बड़े-बड़े खतरों का सामना करना पड़ता है ”

**नोट**

सच्चा खुलूस अखलास के मायने होते हैं

“ जो भी किया जाये बिना किसी लालच के, सिर्फ अल्लाह

तआला के लिये किया जाये ”

ये सारी चीज़े फक्र और फना से ताल्लुक  
रखती है हदीस पाक है

“ फक्र दोनों जहाँ में स्याह रवी है ”

इस के मायने ये हैं के फक्र मुजलिफ़ रंगों  
को कुबूल नहीं करता वो सिर्फ़ नूरे ज़ात को कुबूल करता है  
स्याही की हैसियत खुबसूरत चेहरे पर तिल की तरह है जो  
हुस्न को और बढ़ाता है अल्लाह के करीब हो जाने वाले जब  
अल्लाह तआला की खुबसूरती को देखते हैं फिर उन की  
आँखों का नूर किसी और को कुबूल नहीं करता और वो ना  
किसी और को मोहब्बत की निगाह से देखते हैं बस इनका  
एक ही महबूब और एक ही मतलूब होता है इन की मंजिल  
अल्लाह तआला के करीब होना होती है क्योंकि अल्लाह  
तआला ने इन्सान को अपनी मआरफत - पहचानने और  
अपने में मिल जाने के लिये पैदा फरमाया है !

इन्सान पर जरूरी है के वो जिंदगी के  
मकसद को पाने की कोशिश करे बस कहाँ ऐसा ना हो के वो  
अपनी उमर बेकार के कामों में गवां दे और बाद में अपनी  
जिंदगी बेकार के कामों में गवां देने के लिये पछताये !

# तेहरवाँ हिस्सा

## तहारत यानि पाकी का बयान

तहारत यानि पाक होना दो किस्म का होता है बाहर से पाक होना - अन्दर से पाक होना बाहर की पाकी हकीकत की जो शरीयत है उसके पानी से होती है !

जबकि अन्दर की पाकी जो ज्यादा कीमती है वो हासिल करने के सच्ची - दिल से की गई तौबा, अन्दर की सफाई - बारीय तआला की पहचान करने के रास्ते पर चलना जरूरी है !

जिस्म के बाहर का बुजू टूट जाता है अगर जिस्म से कोई गन्दगी बाहर निकल जाये तो दोबारा ताज़ा बुजू करना जरूरी हो जाता है जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ जो लोग ताज़ा बुजू करे तो अल्लाह तआला उसके यकीन को ताज़गी बख्श देता है ”

बुरे आमाल और बुरी आदतें जैसे तकब्बुर - हसद - कीना - खुद पसन्दी - ग़ीबत - झूठ और ख़्यानत, चाहे ख़्यानत आँख की हो - हाथों की हो - पांवों की हो या

कानों की हो - जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ औंख भी जिना करती है और कान भी ”

जब इन आदतों से अन्दर का बुजू टूट जाता है तो अन्दर फसाद पैदा करने वाली बुरी आदतों से सच्ची - ना टूटने वाली तौबा करके और अपनी अन्दर की बुरी हालत को कुबूल करके सिर्फ अल्लाह तआला की तरफ तबज्जोह देना जरूरी हो जाता है ! साथ ही साथ, अन्दर फसाद पैदा करने वाली आदतों को अपने अन्दर से दूर करना जरूरी है जिससे अन्दर का बुजू और अन्दर की पाकी हासिल हो सके !

“ चुल्लु भर पानी दिल पे ना डाला तन पर दरिया बहाया रे ” “ रहा तू गन्दे का गन्दा ऐसा - कैसा नहाया रे ”

अल्लाह तआला की पहचान हासिल करने के रस्ते पर चलने वाले को चाहिये के इन आफतों से अपनी तौबा की हिफाज़त करे ! तब ही तो इसकी नमाज़ पूरी और कामिल होगी जैसा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

“ यही है जिस का तुम से बादा फरमाया गया ये हर उस शख्स के लिये है जो अल्लाह की तरफ रुजू करने वाला और अपनी तौबा की हिफाज़त करने वाला है ”

{ ‘ सुझ काफ 50  
आयत 32

बाहर की नमाज़ और बुजू के लिये वक्त  
मुकर्र है मगर अन्दर के बुजू और अन्दर की नमाज़ के लिये  
पुरी उमर लगातार - हर वक्त याद जरूरी है !

मरकज़ तसवीफ़



[ Kneq Qq j Kc Uhk sfe Ld hu d erj hu

सख्त ग़या सुदीन शाह

d knj h] ' kq k h] fp r h] gK ke h gq Sh e g c wh

[www.sufismofbaikhtiyarkaki.org](http://www.sufismofbaikhtiyarkaki.org)  
facebook : sufi ghyasuddin

blogger : arise sufism-markazelasawwuf  
facebook page: sufism of baikhtiyar kaki

# चौहुदवाँ हिस्सा

## शरीयत और तरीकत की नमाज़

शरीयत की नमाज़

इस नमाज़ के बारे में आयत है !

हिफाज्जत करो सब नमाजों की

{ सुरु अल बकर्य 2  
आयत 238

इस नमाज़ से मकसद ज़ाहिरी नमाज़  
हिस्सों से अदा होने वाले काम है जिसमें जिसमें हरकत करता  
है इन्सान एक ख़ास तरीके से खड़ा होता है आयतें पढ़ता है  
रुकू और सजदा करता है आयतें पढ़ने में आवाज़ होती है !

तरीकत का नमाज़

ये हकीकत के दिल की नमाज़  
है ये नमाज़ हमेशा की है इस का सुबूत अल्लाह तआला का  
ये फरमान है !

और ख़ास तौर पर बीच की नमाज़ की

{ सुरु अल बकर्य 2  
आयत 238

इस “ बीच ” की नमाज़ से मकसद हकीकत के दिल की नमाज़ है याद रहे के हमारे सीने में जो गोश्त का लोथड़ा है वो सिर्फ जिस्म का दिल है हकीकत का दिल नहीं है हकीकत का दिल तो ना उपर है ना नीचे, ना दाये ना बाये ! हकीकत का दिल तो अच्छाई और बुराई के बीच बनाया गया है जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ दिल रहमान की दो ऊंगलियों के बीच में है वो इसे जैसे चाहे फेर देता है ”

दो ऊंगलियों से मकसद लुत्फ देने वाली सिफ्ट और कहर देने वाली सिफ्ट है इस आयत और हदीस को दलील बनाकर मालूम हो जाता है कि असली नमाज़ तो हकीकत के दिल की नमाज़ ही है और इसके लिये पहले हकीकत के दिल की तलाश जरूरी है !

जब कोई इन्सान हकीकत के दिल की नमाज़ से ग्राफिल हो जाता है कायम नहीं करता तो उस की सब नमाजें बेकार हो जाती हैं दिल की नमाज़ भी और जिस्म की नमाज़ भी जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ हकीकत का दिल ( कल्ब ) हाजिर रहे बिन नमाज़ नहीं ”

इसकी वजह ये है कि नमाज़ी, नमाज़ में अपने रब से बात करता है और बात हकीकत में वो हैं जो दिल से हो जब दिल मौजूद नहीं तो बात झुठी - जब बात

झुठी तो नमाज़ भी सच्ची, हकीकत में जैसी होनी चाहिये वैसी नहीं रहती क्योंकि दिल असल है और बाकी सब हिस्से उसका हुक्म मानने वाले - इस बारे में सरकारे दो आलम का फरमान है -

“ हाँ - हाँ, जिस्म में एक हिस्सा ऐसा भी है के अगर वो सही है तो सारा बदन सही है अगर वो ग़लत तो सब ग़लत - याद रहे वो हकीकत का दिल है ”!

### शरीयत का नमाज़

इस नमाज़ के लिये वक्त मुकर्र है ये दिन रात में पाँच बार अदा होती है बेहतर है के ये नमाज़ मस्जिद में जमाअत के साथ अदा की जाये रुख़ काबे की तरफ हो और इन्सान बिना किसी नकलीपन और दिखावे के इमाम की इत्तबाअ करे !

### तरीकत का नमाज़

ये नमाज़ पुरी जिन्दगी की है इसके लिये जिस्म मस्जिद है और दिल सजदा करने की जगह, इसमें जिस्म की और अन्दर की सब ताकतें मिल कर अल्लाह की याद में झूब जाती हैं और ये याद बाहर से नहीं अन्दर से की जाती है इस नमाज़ में इश्क इमाम होता है जो जान की महराब में खड़ा होता है इस नमाज़ का किबला अल्लाह का एक होना और बेनियाज़ होना है और ये ही तो असली काबा है दिल और रुह दोनों इस

نماज़ को अदा करते हैं दिल ना तो सोता है - ना मरता है वो हमेशा बिना किसी रुकू या सजदे के हमेशा नमाज़ में मशगूल रहता है और इसी हाल में रहता है !

“ तेरी ही इबादत करते हैं और तुझ ही से मदद चाहते हैं ”

{ سُرہ فاتحہ ۱  
آیت ۵ }

ये दुआ और हालत सरकारे दो आलम की इत्तबाअ में होती है इस आयत में जिसको अल्लाह की पहचान हासिल हो गयी, उसकी अन्दर की कैफियत की तरफ इशारा है । इस हालत में, इस नमाज़ में इन्सान का दिल पूरी तरह हाजिर रहता है कोई ख्याल या कोई वसवसा पैदा ही नहीं होता और वो मकाम और हाल और कैफियत अता होती है जिसकी तरफ सरकारे दो आलम का ये फरमान इशारा कर रहा है ।

“ अम्बिया और औलिया अपनी कबरों में भी इसी तरह नमाज़ अदा करते हैं जिस तरह अपने घरों में नमाज़ अदा करते हैं ।

मतलब ये है के इन के दिल जिन्दा है इसलिये वो अल्लाह की ज़ात और उसकी याद में डूबे

रहते हैं जब तरीकत की नमाज़ अदा होने लगे तब ही नमाज़ मुकम्मल हुई यानि तरीकत की नमाज़ कायम करने वाले की ही नमाज़ हुई ऐसे आदमी को अल्लाह तआला अपने नज़्दीक और करीब करता है ये ही सबसे बड़ा इनाम है !

एसा इन्सान बाहर से दिखने में सादगी भरा और अन्दर से अल्लाह तआला की पहचान हासिल कर लेने वाला होता है और जब तरीकत की नमाज़ हकीकत के जिन्दा दिल को बिना हाजिर रखे अदा की जाती है तो बदले में ना सवाब मिलता है ना ही अल्लाह तआला की नज़्दीकी, तो ये साबित हुआ के पहले हकीकत का दिल तलाश किया जाये फिर उसे जिन्दा किया जाये और उसके बाद हकीकत के जिन्दा, दिल को हाजिर रखकर तरीकत की नमाज़ अदा की जाये !

## पुढ़ुरहुवाँ हिस्सा

पहचान हासिल कर लेने में, थोड़ा - थोड़ा - दरजा  
वा दरजा आगे बढ़ने की पाकी

पहचान लेने की पाकी दो किस्म की है

① सिफात की पहचान की पाकी

② जात की पहचान की पाकी

सिफात की पहचान की पाकी } ये पाकी सिर्फ समझ लेने,  
अमल करने और जिक वा याद के जरिये, अपने अन्दर से  
जानवर होने की सिफत, बशर होने की सिफत से, पाक हो  
जाने से हासिल होती है बस जब हकीकत का दिल साफ हो  
जाता है और अल्लाह तआला के नूर के जरिये आँख देखने  
वाली बन जाती है ! तो इन्सान, हकीकत के दिल के आँखें  
में अल्लाह तआला की खुबसूरती के अक्स को नूर की  
सिफत से देखने लगता है !

जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ मौमिन अल्लाह के नूर से देखता है ”

“ मौमिन - मौमिन का आईना है ”

जब नामों के लगातार विर्द से अन्दर की सफाई पुरी हो जाती है तो सिफात यानि ख़ासियत - गुण की पहचान पुरी हो जाती है क्योंकि इन्सान इन सिफात को दिल के आईने में देखने वाला बन जाता है !

**ज़ात की पहचान की पाकी**) ये पाकी राज् है इसे हासिल करने का एक ही तरीका है के इन्सान अल्लाह तआला के एक होने को जानने वाले ख़ास बारह नामों में से आख़री तीन नामों को तौहीद के नूर के जरिये अन्दर की आँख से लगातार देखता रहे बस जब ज़ात के नूर की तजल्ली होगी तो इन्सान का इन्सान होना खत्म होकर फना होना पूरा हो जायेगा ये मकाम फना - ए - फना है ये तजल्ली बाकी सब कुछ मिटा देती है जैसा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया !

“ हर चीज़ हलाक होने वाली है सिवा उस की ज़ात के ”

{  
‘सुरह अलकस्स 28  
आयत 88

जब सब कुछ फना हो जाता है तो पाक नूर के साथ सिर्फ पाक रूह बाकी रह जाती है और हमेशा देखती ही रहती है ये रूह इसी के साथ इस से, इसी की तरफ देखने वाली होती है बस वो ही इस रूह

को राह दिखाता है क्योंकि

“ नहीं है उस की तरह कोई चीज़ ”

सुरह अल शौरा 42  
आयत 11

बस नूर बाकी रह जाता है इस से आगे  
की कोई ख़बर नहीं दे सकता क्योंकि वो खो जाने वाला  
आलम है वहाँ अकल नहीं रह सकती के कुछ ख़बर दे  
और ना वहाँ अल्लाह के सिवा की पहुँच है जैसा सरकारे  
वो आलम ने फरमाया -

“ अल्लाह तआला के नजदीक मेरे लिये एक  
एसा वक्त भी होता है जिस में ना ही कोई करीबी  
फरिश्ता होता है नबी ना और कोई रूसूल !

ये दरज़ा बा दरज़ा - थोड़ा थोड़ा आगे  
बढ़ते रहने का आलम है यहाँ कोई गैर नहीं होता जैसा  
हदीसे कुदसी की शब्ल में अल्लाह तआला का फरमान  
है -

“ बशर होने की सिफात से, दरज़ा बा दरज़ा -  
थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ - मंज़िल तक - मकसद तक  
पहुँच जायेगा ”

तजरद

तजरद के मायने हैं दरज़ा बा दरज़ा -  
थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ना और बशर होने की सिफात से

मुकम्मल फना हो जाना !

बस वो आलमे तजरीद में खुदाई सिफात  
के असर में आकर - मुतसफ हो जायेगा जैसा सरकारे दो  
आलम ने फरमाया -

खुदाई - अख्लाक को अपना लो  
यानि सिफाते खुदावन्दी से मुतसफ हो जाओ  
सिफाते खुदावन्दी अपना लो

# सोहलवाँ हिस्सा

## शरीयत और तरीकत की ज़कात

**शरीयत की ज़कात**

इस से मकसद दुनिया के माल से  
एक मुकर्रर हिस्सा, माल में सिर्फ एक बार, तय हिसाब से  
देना, ज़कात कहा जाता है !

**तरीकत की ज़कात**

दुनिया के, और आख़रत के ग़रीबों में  
सिर्फ अल्लाह के लिये, आख़रत के भी आमालों को लुटा  
देना तरीकत की ज़कात है शरीयत की किताब को अल्लाह  
की किताब में सदका कहा गया है जैसा फरमाया गया है -

“ ज़कात ( सदका ) तो सिर्फ उनके लिये है जो  
फ़कीर हों - मिस्कीन हों ! ”

{ سُرْهُ الْتَّابُور ۹  
آيَةٌ ۶۰ }

इसे सदका इस लिये कहा गया है के ये  
माल मिस्कीन के हाथ में जाने से पहले अल्लाह तआला के  
सख़ी और करम करने वाले हाथों में पहुँचता है और अल्लाह  
तआला इसे फौरन कुबूल फरमा लेता है !

रही तरीकत की ज़कात तो वो हमेशा के

लिये है इसमें दुनिया का माल नहीं बल्कि अल्लाह तआला की रज़ा और खुशी के लिये, आख़रत को बेहतर बनाने की कोशिश का जरिया गुनाह गारों को दे दिया जाता है बस तरीकत की ज़कात निकालने वाला अपने सब नेक आमाल अल्लाह की रज़ा और खुशी के लिये, गुनाहगारों को दे देता है ! और खुद मुफलिस हो जाता है और गुनाहगारों के गुनाह माफ हो सके इसका जरिया और बहाना बन जाता है खुद मुफलिस ( नेक आमाल से ख़ाली ) हो जाने की वजह से अल्लाह तआला की नज़र में पसंद हो जाता है !

**जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया –**

**“ मुफलिस दोनों जहान में अल्लाह तआला की पनाह में होता है ”**

इन्सान और जो कुछ भी उसके पास है वो उसके हकीकी मालिक अल्लाह तआला का है कयामत के दिन उसे हर नेकी पर दस गुना अच्छा बदला मिलेगा तो तरीकत की ज़कात निकालने वाले उस इन्सान को मिलने वाला बदला कितना अज़ीम और बड़ा होगा जिसने अपने सब नेक आमाल ही सिर्फ अल्लाह के लिये, अल्लाह की मख़्लूक को दे दिये ! अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया –

**“ जो कोई लायेगा एक नेकी तो उसके लिये होगी दस, उसी की तरह ”**

{  
‘सुलْطَنُ الْأَنْبَاءِ’ 6  
آيات 160}

ज़कात के एक मायने ये भी है के दिल को  
नफ्से अम्मारा ( बुरी आदतों ) से पाक किया जाये जैसा  
अल्लाह तआला ने अपने कलाम में फरमाया -

“ है कोई जो अल्लाह तआला को अच्छा कर्ज दे फिर  
वो उसके बदले कई गुना ज्यादा देगा ” { सुरह अल बकरा 2  
आयत 245 }

इस कर्ज से मकसद ये है के इन्सान अपनी  
सब नेकियाँ अल्लाह की रज़ा और खुशी के लिये अल्लाह  
की मख़्लूक को दे दे और अल्लाह की मख़्लूक पर किसी  
किस्म का कोई अहसान ना दिखाये ना जतलाये - जैसा  
अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ मत करो बेकार अपने अच्छे कामों को, ( सदके  
को ज़कात को, ) अहसान जतला कर, दुख पहुँचाकर ”

{ सुरह अल बकरा 2  
आयत 265 }

और ना ही दुनिया में किसी बदले का चाहने  
वाला हो, ये खर्च करना सिर्फ अल्लाह के लिये, एक किस्म  
है !

“ हर गिज़ ना पा सकोगे तुम पुरी नेकी का  
मकाम जब तक राहे खुदा मैं अपनी सब से प्यारी चीज़ खर्च  
ना करो ”

{ सुरह आले हमरान 3  
आयत 92 }

# सहतरवाँ हिस्सा

## शरीयत और तरीकत का रोज़ा

### शरीयत का रोज़ा

दिन के बक्त खाने - पीने और औरत से मिलने या किसी दुसरे तरीके से शहवत को पुरा करने से रुकने का नाम शरीयत का रोज़ा है !

### तरीकत का रोज़ा

अन्दर और बाहर के, जिस्म के सब हिस्सों को - हराम और मना की चीजों से बचाना तरीकत का रोज़ा है खुद को अच्छा समझकर पसंद करना, गुरुर - तकब्बुर - कंजुसी तरीकत के रोज़े को खराब कर देने वाली चीज़े हैं !

शरीयत के रोज़े के लिये बक्त मुकर्रर है जबकि तरीकत का रोज़ा पुरी उम्र का है हमेशा का है इसीलिये सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ कई रोज़ा रखने वाले एसे हैं जिन्हें रोज़े से भुख और प्यास के सिवा कुछ नहीं मिलता ”

और इसीलिये ये कौल मशहुर है कई रोज़ा ना रखने वाले, रोज़ा रखने वाले होते हैं और कई रोज़ा रखने

वाले, रोज़े से ना रहने वाले होते हैं हकीकत में रोज़े में रहने वाले लोग अपने तमाम हिस्सों को हर गुनाह और बुराइ से बचाये रखते हैं और किसी को कोई तकलीफ नहीं देते !

हदीसे कुदसी की शकल में अल्लाह तआला ने फरमाया –

“ बेशक रोज़ा मेरे लिये है और मैं ही इसका बदला हूँ ”

एक और जगह हदीसे कुदसी के जरिये अल्लाह तआला ने फरमाया –

“ हकीकत में रोज़े में रहने वाले के लिये दो खुशियाँ हैं एक इफ्तार के वक्त और दूसरी मुझे देखने के वक्त की है ”

अब मौजुद शरीयत के मानने वालों के लिये इफ्तार सुरज, दूबते वक्त कुछ खा-पी लेना है और इद की रात चाँद का नज़र आना है लेकिन तरीकत वालों का कहना है कि इफ्तार जन्नत की नेमतों में से एक नेमत है और इस से भी ज्यादा बढ़ कर हकीकत के रोज़ा रखने वाले के लिये इफ्तार तो इसी जिंदगी में अल्लाह तआला की झलक के दीदार का नाम है !

रोज़े की एक तीसरी किस्म भी है जिसे हकीकत का रोज़ा कहा जाता है !

**हकीकत का रोज़ा**

हकीकत के रोज़े का मकसद

है के इन्सान की जान अल्लाह के सिवा किसी से, किसी से भी मौहब्बत ना करे क्योंकि अल्लाह तआला ने हदीसे कुदसी के जरिये फरमाया -

“ इन्सान मेरा राजू है और मै इन्सान का राजू हूँ ”

ये राजू अल्लाह के नूर से है ये किसी गैर की तरफ तवज्जोह नहीं देता अल्लाह तआला ही इसका महबुब है इसे सिर्फ अल्लाह ही से मतलब है ये सिर्फ अल्लाह तआला की तरफ ही तवज्जोह देता है ! दुनिया और आखरत में इसे किसी से कोई मतलब नहीं !

अगर अल्लाह के सिवा किसी की मौहब्बत आ गयी तो हकीकत का रोज़ा ख़राब हो जाता है इस हकीकत के रोज़े की काज़ा सिर्फ ये है के इन्सान अल्लाह करीम की तरफ लौट आये और इस से मुलाकात करने की कोशिश करे इस हकीकत के रोज़े का बदला अल्लाह से मुलाकात है !

# अद्भुतर्वीं फ़सल

## शरीयत और तरीकत का हज

हज की दो किसमें है

( शरीयत का हज  
तरीकत का हज )

शरीयत का हज

ये हज अल्लाह के घर से  
ताल्लुक रखता है इसके ख़ास तरीके और शर्तें हैं इन शर्तों  
और कामों को अदा करने से हज का सवाब मिलता है और  
जब कोई शर्त पुरी ना हो सके तो सवाब में कमी आ जाती है  
क्योंकि अल्लाह तआला ने अपने कलाम में फरमाया –

“ पुरा हज करो और उमरा अल्लाह के लिये ”

{ سुरह अल बकरा 2  
आयत 196 }

शरीयत के हज की शर्तों में पहली शर्त  
अहराम है मक्का में दाखिल होना है फिर तवाफे कुदूम,  
फिर अरफा में ठहरना और मुज़ल्फा फिर मीनाह में कुरबानी  
इस के बाद हरम पाक में दोबारा हाजिरी और फिर अल्लाह  
के घर का सात चक्करों में तवाफ है फिर हाजी ज़मज़ूम का  
पानी पीते हैं और मकामे इब्राहीम अ.स. पर दो रकात नफिल

अदा करते हैं आखिर में अहराम खोल दिया जाता है और अब शिकार बगैर अहराम की हालात में जो चीज़ें अल्लाह तआला ने हराम करार दे दी थीं हलाल हो जाती है इस हज का बदला जहन्नुम से आज़ादी और अल्लाह तआला की नाराज़गी से अमन है !

जैसा अल्लाह तआला ने अपने कलाम में फरमाया -

“ जो भी दखिल हो इसमें, हो जाता है हर ख़तरे से महफूज़ ”

{ ‘ सुरह आले इमरान 3  
आयत 97 }

तबाफे सुदूर के बाद लोग अपने वतन लौटते हैं !

### तरीकत का हज

तरीकत के हज की राह में राह का खर्चा और सवारी, कामिल पीर की तलाश और उससे फैज़ हासिल करना है इसके बाद लगातार जबान से जिक्र और इस जिक्र के मायनों को सामने रखकर दिल को जिन्दा करना है इसके बाद अन्दर के जिक्र की बारी आती है यहाँ तक के सिफाती नामों के लगातार विर्द से मन साफ हो जाता है एसी हालत में काबे का राज़ सिफात के नूर के जरिये सामने आ जाता है जैसा अल्लाह तआला ने हज़रत इब्राहीम अ.स. और हज़रत इस्माइल अ.स. को हुक्म दिया था के सब से पहले अल्लाह के घर को साफ सुथरा करो !

“ हम ने ताकीद कर दी हज़रत इब्राहीम और हज़रत इस्माईल अ.स. को के खूब साफ सुधारा रखना, तवाफ करने वालों के लिये ”

ज़ाहिरी काबा इस लिये साफ किया जाता है के तवाफ करने वाले लोग आयेंगे जो कि मख़्लूक हैं जबकि अन्दर का हकीकत का काबा अल्लाह तआला के लिये साफ होता है जो सब कुछ बनाने वाला है !

हकीकत के काबे को किसी भी और ख़ाल से पाक करके अल्लाह तआला की तजल्ली के काबिल बनाया जाता है फिर पाक रूह का अहराम बँधा जाता है फिर दिल के काबे में हाज़री दी जाती है तीन नामों के विर्द से तवाफे कुदूम होता है हकीकत के दिल अराफ़ात में हाज़री होती है जो कि अल्लाह तआला से बात होने की जगह है यहाँ तीन और चौथा नाम का विर्द करके ठहरा जाता है फिर पहचान कर लेने वाला जान के मुज़ल्फ़े में जाता है पाचवें और छठे नाम का एक साथ विर्द करता है इस के बाद राज़ के मीनाह में जाता है जो कि दोनों हरम के बीच में है यहाँ कुछ देर के लिये ठहरता है फिर सातवें नाम के साथ नफ्से मुतमईना की भी कुरबानी दे देता है क्योंकि सातवाँ नाम - नामे फना है कुफ़ के परदे उठ जाते हैं जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“कुफ्र और इमान अर्श के आगे दो मकाम हैं यही  
हक और इन्सान के बीच दो परदे हैं इनमें से एक का रंग  
काला है और दुसरे का रंग सफेद ”

इसके बाद तरीकत का हज करने वाला  
आठवें नाम के मकाम पर मौजुद होकर रूह को बशर होने  
की सिफात से पाक करता है फिर नवें नाम के मकाम पर  
मौजुद रह कर अन्दर के हरम में दाखिल हो जाता है फिर वो  
तन्हाई इख्लार करने वालों को देखता है और रूके रहने  
वालों को देखता है !

और दसवें नाम के लगातार विर्द से  
अल्लाह तआला के करीब होने और लगाव के मकाम पर  
तन्हाई पा लेने वाला हो जाता है फिर इन्सान अल्लाह  
तआला की खूबसुरती और बेनियाजी को बिना किसी सुरुर  
या मस्ती के देखता है ! सात चक्कर लगा कर तबाफ  
करता है इस ग्याहवें नाम के साथ, फैलाव के छः नाम और  
होते हैं तबाफ करने के बाद वो कुदरत के हाथों ख़ास पाक  
शराब पीता है जैसा अल्लाह तआला का फरमान है –

“पिलायेगा इन्हें – इन का पालने वाला पाक शराब”

ये पाक शराब बाहरवें नाम के मकाम के  
प्याले में भरी होगी अल्लाह तआला अपने पाक चेहरे से  
नकाब उलट देता है और इन्सान उसके नूर के साथ दीदार  
करता है यही मायने हैं इस हड्डीसे कुदसी का के “ ना किसी  
आँख ने देखा होगा ”

यानि अल्लाह तआला से मुलाकात का नज़ारा “ ना किसी कान ने सुना होगा ” यानि बिना आवाज़ और अलफाज़ के बातचीत “ ना किसी बशर के दिल में इसका ख़्याल गुज़रा होगा ” यानि अल्लाह तआला से बात करने और देखने का जौक - शौक - फिर अल्लाह तआला की हराम करदा चीज़े हलाल हो जाती है यानि बुराईयाँ - नेकियों में बदल जाती है ! यहाँ तौहीद के नामों तकरार होता है जैसा पाक रब ने फरमाया -

“ मगर वो जिसने तौबा की और इमान ले आया और नेक अमल किये तो ये वो लोग हैं, बदल देगा अल्लाह तआला इन की बुराईयों को नेकियों से ” {‘सुख अल फुरकान 25  
आयत 70}

फिर इन्सान अन्दर से पुरी तरह पाक हो जाता है और इसे कोई ख़ौफ या ग़म नहीं रहता जैसा पाक रब ने फरमाया -

“ सुनो औलिया अल्लाह को ना कोई ख़ौफ  
है ना ग़म ” {‘सुख यूनुस 10  
आयत 62}

फिर तमाम नामों का विर्द करके तवाफे सुदूर करता है और आखिर में अपने असली वतन लौट आता है जो पाक आलम में है और जहाँ इसे बदल देने वाली सुरत में पैदा किया गया है ये आलम हकीकत के यकीन से

ताल्लुक रखता है ये हकीकत - बात और अकल के दायरे में आ जाने वाली है इस से आगे की खबर देना मुमकिन नहीं क्योंकि इस से आगे अकल मज़बुर है के वो नहीं समझ सकती और ख्यालात वहाँ तक पहुँच नहीं सकते जैसा हुजूर स.अ.व. ने फरमाया -

“ एक इल्म वो भी है जो छुपे हुए खजाने की तरह है जिसके बारे में सिर्फ अल्लाह तआला की रोशनी रखने वाले ही वाकिफ हैं जब ये रोशनी रखने वाले इस इल्म के बारे में बात करते हैं तो कोई इन्कार नहीं करता सिवा उन लोगों के जो सीधी राह से भटके हुए हैं ”

पहचान रखने वाला इस से कम की बात करता है और ज़ाहिरी आलिम इस से आगे की बात करता है पहचान कर लेने वाले का इल्म अल्लाह तआला का राज है जिसे सिर्फ अल्लाह तआला ही जानता है जैसा फरमाया गया है -

“ नहीं घेर सकते उसके इल्म को मगर जितना वो चाहे ” और

“ वो तो जानता है राजों को भी और दिल के भेदों को भी - अल्लाह वो है के उसके सिवा कोई इबादत के लायक नहीं, इसके लिये बड़े खूबसुरत नाम है ”

## उज्जीसवाँ हिस्सा

### वज्द और सफा

पाक रब ने फरमाया -

“ काँपने लगते हैं उन के बदन जो डरते हैं अपने परवरदिगार से, फिर नरम हो जाते हैं इनके बदन और इनके दिल अल्लाह के ज़िकर की तरफ ” { سुरह अलज़मर 39  
आयत 23 }

“ भला है वो खुशनसीब, बड़ा कर दिया हो जिसका सीना - अल्लाह ने इस्लाम के लिये तो वो अपने रब के दिये हुए नूर पर है बस हलाकत है उन सख्त दिलों के लिये जो अल्लाह के ज़िकर से असर में नहीं आते ” { سुरह अलज़मर 39  
आयत 22 }

“ अल्लाह तआला से इश्क जिन और इन्सानों की इबादत के बराबर है ”

हज़रत अली क.व.क. का फरमान है -

“ जिस में वज्द नहीं उसका कोई दीन नहीं ”

“ हज़रत जुनैद बग्रदादी के मुताबिक वज्द से मकसद, अन्दर में अल्लाह करीम के लिये अचानक एसी

कैफियत का पैदा होना है जो सुरूर और गम का वारिस बना दे ”

**वज्द की दो किस्में हैं -**

- 1 जिस्मानी नफसानी वज्द
- 2 रुहानी रहमानी वज्द

### (1) नफसानी वज्द

नफसानी वज्द ये है के इन्सान अपने ऊपर तकलीफ की वजह से वज्द जैसी हालात को हाबी कर ले लेकिन कोई ऐसा जज्बा पैदा ना हो जिसका ताल्लुक रुहानियत से हो ये वज्द सिर्फ नुमायशा और शौहरत के लिये किया जाता है वज्द की ये हालत सही नहीं है क्योंकि इस में इन्सान बे-इख़्यार नहीं होता ना ही उस इन्सान की कुवत - कुदरत के जरिये ली जाती है ऐसे वज्द की हालत की मुआफकत करना सही नहीं है !

### (2) रुहानी वज्द

इस हालत में इश्क अपना काम करता है मसलन कोई शख्स खुशहाली से कुरान पढ़ता है कोई अच्छा शेर पढ़ता है या जिक करता है जिससे दिल की हालत अचानक बदल जाती है और जिस पर से इख़्यार उठ जाता है तो ये हालत रुहानी और रहमानी वज्द है ऐसे वज्द की मुआफकत बेहतर है आयत करीम में इस तरफ इशारा है !

“आप खुशखबरी सुना दे मेरे उन बन्दों को, जो बात को गौर से सुनते हैं और फिर पैरवी करते हैं अच्छी बात की”

{ سुر ۳۹  
آیت ۱۷-۱۸

इसी तरह आशिकों और परिन्दों की बेहतरीन आवाज़ रूह की कुवत की वजह बनती है शैतान और नफसे अम्मारा एसे वज्द में दखल अन्दाज़ी नहीं कर सकते क्योंकि शैतान जुल्म और नफसे अम्मारा की हालत पसंद करता है और रूहानियत और नुरानियत की हालत में इसका कोई दखल नहीं मुमकिन नहीं क्योंकि रूहानियत और नुरानियत से वो इस तरह पिघल जाता है जिस तरह नमक पानी में हृदीस पाक से भी यही साबित है क्यूंकि आप ने फरमाया, आयते करीमा की तिलावत - हिकमत - मोहब्बत और इश्क पर कहे गये शेर और गम भरी, मीठी आवाज़ रूह के लिये नुरानी कुवत है इस लिये जरूरी है के नूर - नूर से मिले क्योंकि -

“पाक - पाक के लिये है ” { سुر ۲۴  
آیت ۲۶

मगर जब वज्द शैतानी और नफसानी हो तो इस में नुरानियत नहीं होती बल्कि इसमें अंधेरा और कुफ होता है जुल्म का अंधेरा, नफसे अम्मारा को पहुँचता

है और इस की सरकशी को बढ़ाता है जैसा फरमाया गया  
है !

“ नापाक - नापाक के लिये है ”

{ सुरह बूर 24  
आयत 26

इस वज्द में रुह के लिये कोई कुवत नहीं  
होती ! वज्द में जो कैफियत बनती है उसकी दो हालतें हैं एक  
जो इख्त्यार में, काबू में होती है दुसरी बे - इख्त्यारी यानि जब  
इन्सान बे - इख्त्यार हो जाता है अपने काबू में ही नहीं रह  
पाता !

पहली हालत काबू में रहते हुए हरकत  
ज़ाहिर होने की है इसकी मिसाल एक तन्द्ररुस्त - सेहतमन्द  
आदमी से ज़ाहिर होने वाली हरकत जैसी है जिसे ना कोई दर्द  
हो ना बीमारी - इन हरकात को खोलकर बयान नहीं किया  
जा सकता जैसा पहले जिक्र किया जा चुका है !

दुसरी हालत वो है जब इन्सान बे - इख्त्यार  
हो जाता है काबू से बाहर हो जाता है इस की वजह दुसरी है  
यानि रुह में अचानक एक ज़ज्बा पैदा होता है जिसे नफ्से  
अम्मारा रोक नहीं पाता क्योंकि ये कैफियत जिसम की  
हालात पर छा जाती है इस की मिसाल बुख़ार जैसी है जब  
बुख़ार ज्यादा हो जाये तो नफ्स इसे बरदाश्त ना कर पाने की  
हालत में आकर थक जाता है तंग हो जाता है एसे ही वज्द में  
इन्सान भी - बे इख्त्यार और काबू से बाहर हो जाता है !

वज्द में जब रुहानी हरकत छा जाये तो

तो एसा वज्द हकीकत का और रहमानी होता है वज्द और समाँ ( कव्वालियों की महफिल ) एक एसा आईना है जो जिसमें हरकत पैदा कर देता है जिस तरह आशिकों और पहचान रखने वालों के दिलोंमें ज़ज्बात उमड़ आते हैं !

“वज्द मोहब्बत वालों की खुराक है और सीखने वालों के लिये ताकत है ”

एक कौल के मुताबिक समाँ (कव्वालियाँ) ख़ास लोगों के लिये फर्ज, मोहब्बत वालों के लिये सुन्नत और ग्राफिलों - बेहोशी में जीने वालों के लिये एक नया काम है यही वजह है के हज़रत दाऊद अ.स. के सर पर परिन्दे ठहर जाते के आप की आवाज़ सुन सके !

वज्द में होने वाली हालत की दस किस्में है कुछ ज़ाहिर और खुली हुई हैं जिन का असर जिसमें की हरकतों से ज़ाहिर होता है और कुछ छुपी हुई हैं इन का असर जिसमें से ज़ाहिर नहीं होता यानि दिल अल्लाह की याद में झूब जाता है इन्सान खुबसुरत आवाज़ में अल्लाह तआला की तारीफ बयान करने लगता है ! उसकी तारीफ में उसके फज़्ल - करम - रहमत और इनाम को देखकर खुशी और ग़ृम में रोने लगता है !

तलब - शैक - ग़ृम वज्द ही की किस्में हैं !

# बीसवाँ हिस्सा

## तन्हाई और गोशानशीनी खिलवत वा अज्ञलत

तन्हाई और गोशानशीनी की दो किसमें हैं

- 1 ज़ाहिरी
- 2 बातनी

**(1) ज़ाहिरी खिलवत (तन्हाई)** ज़ाहिरी तन्हाई ये हैं के कोई इन्सान किसी कोने में बैठ जाये और अपने आप को लोगों से अलग कर ले जिससे लोग उसकी बुरी आदतों से बचे रहे नफसे अम्मारा को उसकी आफतों से छुड़वा कर और ज़ाहिरी हवास को काबू में रखकर सच्ची नियत से इरादे को छोड़कर, इरादे को दफन कर दे जिससे अन्दर की हवास पर फतह हासिल हो जाये इस सब मामले में सिर्फ अल्लाह की रज़ा पर ही सब कुछ नज़र रहनी चाहिये के दूसरे मुसलमानों से बुराई दूर हो जाये जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ मुसलमान वो है जिसकी ज़बान और हाथ से दुसरे लोगों को नुकसान ना हो ”

बेकार और फिजुल बातों से ज़बान को रोके

जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ इन्सान की सलामती ज़बान की तरफ से है ”

आँखों को ख़्यानत और हराम की तरफ देखने से रोके और इसी तरह कानों - हाथों और पाँव को हराम के करीब भी ना फटकाने दे जैसा के सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ आँखें भी ज़िना करती है ! ”

जो इन्सान हाथ - पाँव - कान - ज़बान - आँख जिस्म के हिस्सों से ज़िना करता है क्यामत के रोज़ कबर से उसके साथ एक ख़राब - बुरी सुरत में शख्स उठेगा - ये शख्स ऐसे ज़िना करने वाले के खिलाफ गवाही देगा के ये इन्सान ज़िना करता रहा और मैं इसके ऊंचे बुरे आमाल की सुरत हूँ अल्लाह तआला इस की गवाही पर ज़िना करने वाले को जहन्नुम भेजेगा हाँ जो तौबा कर ले और अपने आप को इस बुरी - ख़राब हरकत से रोक ले तो बेहतर है जैसा फरमान है !

“ नपस को रोकता रहा होगा हर बुरी ख्वाहिश से तो यकीनन जन्नत उसका ठिकाना है ” { ‘ सुल्त अल नाज़्यात 79  
आयत 40-41 }

तो बुरी - ख़राब सुरत वाला वो शख्स खबसुरत नौजवान की सुरत में ज़ाहिर होगा और तौबा करने वाले इन्सान का हाथ पकड़कर उसे जन्नत में ले जायेगा इस

तौबा की वजह से वो बुरे आमल की बुराई से बच जायेगा जैसा के तन्हाई ने उसे अपने फायदा देने वाले दायरे में ले लिया और वो लोगों से बचा रहने की वजह से गुनाहों से बच गया उस के अमल अच्छे बने वो अहसान करने वालों में शामिल होने लगा जैसा फरमान है –

“ बेशक अल्लाह तआला बेकार नहीं करता नेक काम करने वालों का बदला ” { سुख तौबा ۹ آयत ۱۲۰ }

“ बेशक अल्लाह की रहमत करीब है नेक काम करने वालों के ” { سुख अल आराफ ۷ آयत ۵۶ }

“ बस जो शख्स उम्मीद रखता हो अपने रब से मिलने की तो उसे चाहिये के वो नेक अमल करे ” { किताबे अल्लाह }

**(२) अन्दर की तन्हाई** } अन्दर की तन्हाई ये है के इन्सान अच्छे और बुरे दोनों ही ख्यालात को अपने अन्दर जगह ना दे दिल को ख्यालात से खाली कर दे मसलन – खाने – पीने की मोहब्बत – घर वालों से प्यार – हँसी मज़ाक – नकलीपन – शौहरत – जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया –

“ शौहरत आफत है और हर आदमी इस का चाहने वाला है, गुमनामी राहत है और हर कोई इस से बचता है ”!

और अपने दिल में घमण्ड - खुदपसन्दी -  
कंजुसी जैसी बुराईयों को आने भी ना दे तन्हा रहने वाले के  
दिल में अगर इन बुराईयों का ख्याल भी आया तो उसकी  
तन्हाई बेकार हो गयी अच्छे आमाल और नेक कामों का  
किला टूट गया जैसा फरमान है !

“ बेशक अल्लाह नहीं संवारता फसाद करने वाले के  
कामों को ”

{ سुरह यूनुس ۱۰  
आयत ۸۱ }

जिस इन्सान में ये बुराईयाँ होगी वो फसाद  
करने वाला है चाहे उसने अच्छे लोगों का लबादा क्यों ना  
ओढ़ रखा हो ! सरकार दो आलम का फरमान है -

“ गुस्सा ईमान को इस तरह खराब कर देता है जैसे  
शहद को सिरका ”

“ हसद नेकियों को युँ खा जाती है जैसे आग ईधन  
को ”

“ ग़ीबत - ज़िना से भी बड़ी बुराई है ”

“ ये सोया हुआ फितना है अल्लाह की उस पर  
लानत हो जो इस को जगाये ”

“ कंजुस अगर इबाद करने वाला और कोशिश करने  
वाला भी हो तब भी जन्नत में नहीं जायेगा ”

“ दिखावा करना छुपा हुआ शिर्क है ”

“ नकलीपन - पाखण्ड को छोड़ना ही इस गुनाह का कफारा है ”!

“ चुगलखोर जन्त में दाखिल ही नहीं होगा ”

इन सब के अलावा बुरी आदतों से बचने के लिये और बहुत सी हड्डीसें हैं बुरी आदतों से बचना बेहद जरूरी है तसव्युफ की तालीम का पहला हिस्सा अपने आपको अन्दर से साफ करना है ! एक तन्हाई पसन्द सूफी - मुरीद - अहले सिलसिला के लिये ये जरूरी है के वो तन्हाई - रियाज़त - खामोशी - लगातार ज़िक्र और फ़िक्र - मोहब्बत खुलूस - तौबा को अपनाये और अपना बर्ताव बलियों जैसा बनाये और नफ्सानी ख़ाहिशात को जड़ से उखाड़ फेंके जब अल्लाह तआला पर पुरा - पुरा यकीन रखने वाला मोमिन तौबा और नेक अमल के जरिये और एक अच्छा - सच्चा मुरीद बनकर अन्दर से तन्हा हो जाता है तो अल्लाह तआला उसके अमल में खुलूस पैदा फरमा देता है इस के दिल में नूर पैदा फरमा देता है इस की शख्सियत नर्म और मुलायम हो जाती है ज़बान पाक हो जाती है वो बाहर और अन्दर से एक हो जाता है उस का अमल अल्लाह तआला तक पहुँचता है और जब वो दुआ करता है कुबूल

होती है जब वो हकीकत की नमाज़ में कहता है के

“ अल्लाह ने तारीफ सुनी ” तो उस की आह और दुआ कुबूल होती है अल्लाह तआला उसके तारीफ के अलफाज़ों को रहमत की नज़र से देखता है और उसे अपने करीब कर लेता है जैसा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में

फरमाया -

“ उसी की तरफ चढ़ता है पाक कलाम – और नेक अमल पाक कलाम को ऊँचा करता है ”

{ सुरुह फातिर 25  
आयत 10 }

पाक कलाम से मक्सद ज़बान को फालतु और बुरी आदतों से बचाना है क्योंकि अल्लाह तआला के ज़िकर और उसके एक होने का बयान करने ज़रिया है जैसा अल्लाह तआला ने अपनी किताब में फरमाया -

“ बेशक दोनों जहाँ में मुराद पाने वाले हो गये ईमान वाले - वो ईमान वाले जो अपनी सलात में आजजी और शुक्रिया का जज्बा रखते हैं और वो हर गलत काम से मुँह फेर लेते हैं ”

{ सुरुह अलमोमेनून 23  
आयत 1-3 }

अल्लाह तआला इल्म यानि रोशनी, अमल और अमल करने वालों को अपनी तरफ खेचता है और उसके दर्जे और मकाम को ऊँचा करता है!

तन्हा होने वाले को जब ये मकाम हासिल हो जाये तो उसका दिल समन्दर जैसा हो जाता है और वो

लोगों को तकलीफ देने से परेशान नहीं होता जैसा सरकारे दो  
आलम ने फरमाया –

समन्दर की तरह हो जाओ इसमें ना जाने  
कितनी बुरी जाने गर्क हो गयी जैसे फिर औन और उसके  
साथी, लेकिन समन्दर में कोई तब्दीली नहीं होती अहले  
तरीकत की कश्ती इसी में तैरती है और उसके मुसाफिर  
समन्दर से मोती और मरजान पाते हैं जैसा फरमाया गया –

“ निकलते हैं इन से मोती और मरजान ”

{ सुरह अलरहमान 55  
आयत 22 }

क्योंकि ये समन्दर सिर्फ उसे नसीब हो  
सकता जिस ने बाहर और अन्दर के दोनों दरियाओं को जमा  
कर लिया इस मकाम को हासिल करने के बाद हकीकत के  
दिल में कोई फसाद पैदा नहीं होता एसे इन्सान की तौबा  
ख़ालिस तौबा है और इसका अमल फायदा देने वाला है  
एसा इन्सान जान-बुझकर गुनाहों की तरफ नहीं जायेगा  
इसके सभी गुनाह अल्लाह की पनाह में आ जाने और  
शर्मिन्दगी की वजह से माफ हो जायेंगे !



## इुक्की सर्वाँ हिस्सा

### तन्हाई की तकलीफ

रुहानी तरक्की के लिये तन्हा रहने वाले को चाहिये के हकीकत के रोज़े रखे और हकीकत की नमाज़ और बाकी के सब काम वक्त पर, सब अन्दर और बाहर की शर्तों के साथ पुरा करे और बीच में ना छोड़े और रात के तीन हिस्से बीत जाने पर अल्लाह के इस फरमान को पुरा करे !

“ रात के कुछ हिस्से में उठो और सलाते तहज्जुद अदा करो ये सलात ज्यादा है आप के लिये ”

{ सुरह अल असरा/बनी इसराईल 17  
आयत 79 }

“ दूर रहते हैं इनके पहलू अपने बिस्तरों से ”

{ सुरह अल सजदा 32  
आयत 16 }

जब सुरज निकल जाये तो इशराक की नियत से दो रकात सलात अदा करे और दो रकात सलाते अस्तआज़ा की नियत से अदा करे सलाते अस्तआज़ा की हर रकात में एक बार सुरह फातेहा एक बार आयतल कुर्सी और

सात बार सुरह अखलास गौर और फिकर के साथ समझ कर पढ़े इन नवाफिल के बाद सलाते चाशत की छः रकाते पढ़े और इसके बाद कफ्कारा ए बोल ( पैशाब ) की नियत से दो रकाते अदा करे इन दो रकातों में सुरह फातेहा के साथ - सात - सात बार सुरह कौसर को समझ कर पढ़े इन दो रकात का फायदा ये होगा के बिना एहतियात की वजह पैशाब में जो गुनाह हो जाते हैं ये दो रकाते इस का कुफ्कारा बन जायेगी और कब्र के अज़ाब से आज़ादी मिल जायेगी जैसा सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“पैशाब से दामन बचा रखें क्योंकि आम तौर पर अज़ाबे कब्र इसी वजह से होता है ”

चार रकात सलाते - तस्बीह अदा करे इस की अदायगी का तरीका ये है के सुरह फातेहा के बाद और कोई सुरह मिलाने के बाद पन्दरह बार ये पढ़े ( सुब्हानल लाहे वल हम्दो लिल्लाहे वा ला-एलाहा इल्लल लाहो वल्लाहो अकबर ) फिर तकबीर कहे और रुकू में दस बार यही पढ़े तकबीर कह कर रुकू से सर उठाये और फिर दस बार यही पढ़े फिर दोनों सजदों में दस-दस बार दोनों सजदों के बीच में दस बार और दोनों सजदों के बाद बैठे-बैठे यही दस बार पढ़े यही अमल दुसरी तीसरी और चौथी रकात में करें ये सलात हो सके तो दिन रात में एक बार पढ़े नहीं तो हर जुमे को - अगर ये भी ना हो सके तो हर महीने में एक

बार - ये भी ना हो सके तो साल में एक बार - और ये भी ना हो सके तो जिंदगी में एक बार ये अमल तो जरूर करें रसुल करीम स.अ.व. ने अपने चचा हज़रत अब्बास र.अ. से फरमाया था - जो शख्स सलाते तस्बीह अदा करे उस के सारे गुनाह माफ हो जाते हैं चाहे वो रेत के जर्रों से ज्यादा - सितारों की गिनती से बढ़कर और तमाम चीजों की गिनती के बराबर ही क्यों ना हो

हक की राह के तलबगार को रोज़ाना एक या दो बार दुआए सैफी पढ़नी चाहिये इसके अलावा रोज़ाना दो सौ आयत कुरान की समझ कर पढ़ना भी जरूरी है ! फिर अल्लाह तआला का ज्यादा से ज्यादा जिक्र करे, अगर ज़ाहिरी जिक्र पसन्द है तो ज़ाहिरी वरना छुपा हुआ जिक्र करे - याद और जिक्र इतना करें के दिल जिन्दा हो जाये और हमें अन्दर की ज़बान मिल जाये जैसा के पाक रब ने फरमाया -

“ जिक्र करो उसका, जिस तरह उस ने तुम को हिदायत की ”

{ सुरु अलबकरा 2  
आयत 198 }

हर रोज़ ये पढ़े ( बल रब यारिफ अहलह )  
फिर सौ बार सुरह इख़लास, रोज़ाना समझ कर पढ़े फिर एक तस्बीह दस्त पाक पढ़े फिर कहे ( अस्तग फैखल्लाह वा आतुबोह अलैह ) ये भी दिन में सौ बार पढ़े अगर हो सके तो

नवाफिल और कुरान को समझ कर पढ़ने को बढ़ा दे क्योंकि  
अल्लाह तआला किसी का अच्छा बदला बेकार नहीं करता  
उस ने फरमाया -

“ बेशक अल्लाह बेकार नहीं करता नेकों  
का अमल ”

{ سُرہ ال تاؤبہ ۹  
آیت ۱۲۰ }

## SUFISM - THE WAY OF LOVE



**MARKAZE TASAWWUF**

**KHANQAH SHARIF**

**QADRIYA ★ SHUTTARIA ★ CHISHTIA**

Dargah Sarkar Khwaja Qutbuddin Ba-Ikhtiyar Khaki Q.S.A.  
1011/E-1, Ward No. 7, Mehrauli, New Delhi-110030

# बाईसवाँ हिस्सा

## सोते में ख्वाब देखना

नीद में इन्सान जो ख्वाब देखता है उसका जरूर कोई मकसद और मतलब होता है जैसा पाक रब ने फरमाया -

“ यकीनन अल्लाह तआला ने अपने रसुल को सच्चे ख्वाब दिखाया हक के साथ ”

{ سुरुच अल फतह 49  
आयत 27 }

इसी तरह सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ नबुवत में से सिर्फ सच्चे ख्वाब बाकी रह गये हैं ”

ये ख्वाब इन्सान देखता नहीं उसे दिखाये जाते हैं जैसा किताबे अल्लाह में है -

“ इन्हीं के लिये बशारत है दुनियावी जिंदगी में और आखरत में भी ” !

{ سुरुच यूनुस 10  
आयत 64 }

इससे मकसद सच्चे ख्वाब है ! सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ सच्चे ख्वाब नबुवत के छ्यालीस हिस्सों में से एक हिस्सा है !

### सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“जिस ने ख्वाब में मेरी जियारत की यानि देखा उसने जागते हुए भी यकीनन मुझ को देखा क्योंकि शैतान मेरी मिसाली सूरत मे ज़ाहिर नहीं हो सकता ना ही उन लोगों की मिसाली सूरत मे जिन्होंने मेरा कहा माना और उस पर अमल किया ”

यानि हकीकत की जो शरीयत है उस के तरीके से और तरीकत और मआरफत के अमल के नूर से मेरा कहा माना और हकीकत वा देख लेने की रोशनी मे मेरा कहा मानते रहे जैसा किताबे अल्लाह मे है ।

“ मैं तो बोलता हूँ सिर्फ अल्लाह की तरफ, खुली हुई दलील पर हूँ मैं और वो भी जो मेरी पैरवी करते हैं ”

{ سुरह यूسुफ 12  
आयत 108 }

शैतान इन तमाम ना दिखने वाले, सिर्फ महसूस होने वाले नूर की मिसाली सूरत मे नहीं आ सकता !

ये चीज़ सिर्फ सरकारे दो आलम के ही साथ नहीं है शैतान रहमत - लुत्फ - और हिदायत को ज़ाहिर करने वाले की मिसाली शब्द मे नहीं आ सकता मसलन तमाम नबी - औलिया - काबा - सुरज - चाँद - सफेद बादल कुरान शरीफ और ऐसे ही दुसरे हकीकत को ज़ाहिर करने वाले जरियों की शब्द मे नहीं आ सकता क्योंकि शैतान सिफ्त कहर और जुल्म को ज़ाहिर करने वाला

है इस लिये वो सिर्फ ऐसी सुरत में आ सकता है जो गुमराह करने वाली हो जो शख्स हिदायत वाला हो भला, शैतान उस की शक्ति में कैसे आ सकता है !

एक चीज अपने मुखालिफ की सुरत में ज़ाहिर नहीं हो सकती क्योंकि एक दुसरे के मुखालिफ चीजों के बीच में फर्क होता है !

ये इसलिये भी है के सही और गलत के बीच में फर्क कायम रहे जैसा पाक रब ने फरमाया -

“ युँ अल्लाह तआला मिसालें बयान फरमाता है हक और बातिल की ”

سُرہ حِمَد ۱۳  
آیت ۱۷

रही ये बात के वो सिफ्टे रबुबियत की मिसाली सुरत में ज़ाहिर भी हो सकता है और रबुबियत का दावा भी करता है तो इस का जवाब ये है के अल्लाह तआला की एक सिफ्टे जलाल की है और एक जमाल की - शैतान क्योंकि सिफ्ट कहर को ज़ाहिर करने वाला है इस लिये वो सिफ्टे जलाल की मिसाली सुरत अपनायेगा तो रब होने का दावा नहीं कर सकता बल्कि ऐसी सुरत में भी ऐसा दावा करेगा के इस पर गुमराह करने वाले का नाम सच्चा साबित होगा जैसा पहले ज़िकर किया जा चुका है !

शैतान ऐसे नाम की मिसाली सुरत भी नहीं

अपना सकता जो मुकम्मल हो और इसमें हिदायत के मायने भी पाये जाते हों पाक रब का इशारा मुशिदि कामिल की तरफ इशारा है जो नबुवत के इल्म का वारिस हो यानि मेरे बाद आने वाले लोग जो मेरी तरह अन्दर से देखने की काबिलियत रखते होंगे इसके मायने कामिल विलायत के हैं जिस की तरफ पाक रब का ये फरमान इशारा करता है !

“ मद्द गार और राह दिखाने वाला ”

سُرہِ ال کھف ۱۸  
آیت ۱۷

ख़ाब की दो किस्में हैं आँफाकी और अनफसी

**(1) आफाकी** यानि हकीकत के आसमान, जो इन्सान के अन्दर ही है उससे ताल्लुक रखने वाले ख़ाब

**(2) अनफसी** या तो अच्छी आदतों की मिसाली सुरत नज़र आयेगी या बुरी आदतों की - अच्छी आदतें मसलन जन्नत और उसकी नेमतें हूरे - सफेद नुरानी रेगिस्तान - सुरज - चाँद - सितारे और इसी तरह के दिल से ताल्लुक रखने वाले अख़लाक की मिसाली सुरतें - रही नफ्से मुतमईना से ताल्लुक रखने वाले अख़लाक की मिसाली सुरतें मसलन हैवानात और परिदूसे से तैयार होने वाली खुराक तो इस का ताल्लुक भी अनफसी ख़ाब से है क्योंकि नफ्से मुतमईना को जन्नत में ऐसी ही खुराक दी जायेगी जैसे

बकरी और परिन्दो का भुना गोशत - याद रहे - गाय जन्ती जानवर है और ऊँट भी - और ऊँट को ज़ाहिरी काबा और अन्दर के काबे की तरफ सफर करने के लिये भेजा गया है घोड़ा जन्ती जानवर है अल्लाह तआला ने इसे छोटे और बड़े जैहाद का ऑला बनाया है ये तमाम चीज़ें आख़रत से ताल्लुक रखती हैं हदीस शरीफ है -

“ बेशक बकरी जन्त के शहद से पैदा की गई है गाय जन्त के जाफरान से - ऊँट जन्त के नूर से और घोड़ा जन्त की हवा से ”

रही बात खच्चर की - तो खच्चर नपसे मुतमईना की अदना मिसाली सुरत है जो इसे ख्वाब में देखे तो समझ जाये के ख्वाब देखने वाला इबादत में लापरवही करता है एसे इन्सान की इबादत बेकार है तौबा करे तो उसकी कोशिश कामयाब हो सकती है !

“ जो ईमान करेगा और नेक आमाल भी तो उसके लिये अच्छा बदला है ”

{ سुह ۱۸  
آیت ۸۸ }

गधा आदम अ.स. और उनकी औलाद की मसलह के लिये है ये जन्त के पत्थरों से पैदा किया गया है इन्सान को इससे खिदमत लेकर दुनिया में आखरत के लिये सामान तैयार करना चाहिये ।

अगर कोई इन्सान ख्वाब में रूह से ताल्लुक रखने वाली चीजों को देखे तो समझ जाये के इस पर नूर खुदा

की तजल्ली पड़ रही है वजह ये है के जनत वाले सब नौजवानों की सुरत में होंगे जैसा के सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ जनत वाले बिना मूँछ और दाढ़ी के होंगे और इनकी आखे सुरमई होंगी ”

“ मैंने अपने रब को ऐसी सुरत में देखा जिस की मस्त ना भीगी हो ”

कुछ ख़बाब की ताबीर करने वाले फरमाते हैं के एसे ख़बाब की ताबीर ये है के अल्लाह तआला ने इस शख्स के रूह के आँगे पर पालने वाली सिप्त की तजल्ली फरमाई है इसे तिफ्ले मआनी का नाम भी देते हैं !

क्योंकि वो जिस्म की तरबियत करने वाला है रब और बन्दे के दरम्यान वसीला है हज़रत मौला अली क.व.क. फरमाते हैं अगर मेरा मुरब्बी ना होता तो मैं अपने रब को ना पहचानता इस मुरब्बी से मक्सद अन्दर का मुरब्बी है और अन्दर के मुरब्बी की तरबियत ज़ाहिर के मुरब्बी का कहा मानने अमल करने से होती है और मुरब्बी के मायने हैं - परवरिश करने वाला - सरपरस्त - तरबियत करने वाला - नबियों और वलियों के जिस्म भी तरबियत पाये हुए होते हैं और दिल भी जो लोग इनकी तरबियत करते हैं इन्हें एक दूसरी रूह नसीब होती है जैसा पहले ज़िकर हो चुका है पाक रब ने फरमाया -

“ नाज़िल फरमाता है वही अपने फज़्ल से अपने  
बन्दों में से जिस पर चाहता है ”

(सुरह मोमिन 40  
आयत 15)

मुर्शिद की तलाश इसलिये जरूरी है के  
इसकी तरबियत में रहकर इन्सान ऐसी रुह हासिल कर ले  
जो दिल को जिन्दा कर दे और मुरीद अपने रब की पहचान  
करने में कामयाब हो जाये इस मामले को समझने की कोशिश  
होनी चाहिये !

ख़बाब में अल्लाह तआला का एक  
खुबसुरत सुरत में दीदार जायज़ है क्योंकि ख़बाब में आने  
वाली सुरत एक मिसाली सुरत है जिसे अल्लाह तआला ने  
देखने वाले के आमादा होने और लगाव से बनाया है ये सुरत  
हकीकत में ज़ात की नहीं है क्योंकि अल्लाह तआला सुरत  
से पाक है !

या वो बा - ज़ातिया दुनिया में दिखाई देगा  
जिस तरह नबी करीम स.अ.व. का दीदार है इस कथास को  
बुनियाद बनाकर ये नज़रिया रखना जायज़ है के अल्लाह  
तआला देखने वाले के हकीकत के इल्म की ओर लगाव  
और आमादा होने के मुताबिक अलग - अलग सुरतों में नज़र  
आ सकता है हकीकते मोहम्मदिया को भी सिर्फ वो ही देख  
सकता है जो नेक अमल - हकीकत का इल्म - हाँल -  
कैफियत - देखने में ज़ाहिरी तौर पर और अन्दरूनी तौर पर  
आप का कामिल वारिस हो ना सिर्फ देखने में - इस कथास  
की बिना पर हर एक सिफ्ट इसी तरह की तजल्ली डालती

है जिस तरह हज़रत मुसा अ.स. के लिये अंगुर के दरख्त में  
आग की सुरत में सिफ्टे खुदा बन्दी ज़ाहिर हुई जैसा अल्लाह  
की किताब में है !

“तो अपने घर बालों से कहा तुम ठहरो मैंने आग  
देखी है शायद मैं ले आऊँ तुम्हारे लिये इस से चिंगारी ”

{ سुरह تاؤہا 20  
आयत 10 }

इसी तरह सिफ्टे कलाम से निदा फरमाई !

“ये तुम्हारे दायें हाथ में क्या है ए मुसा ”

{ سुरह تاؤہا 20  
आयत 17 }

ये आग दर असल नूर था लेकिन इसे  
हज़रत मुसा अ.स. के गुमान और तलब के मुताबिक आग  
कहा गया है दरख्त को इन्सान से ज़रा सी भी निस्बत नहीं तो  
क्या अजब के सिफाते खुदाबन्दी में से कोई सिफत हकीकते  
इन्सानी में ज़ाहिर हो जबकि इन्सान ने सिफाते हैवानिया से  
दिल को पाक करके, सिफाते इन्सानिया कुबूल कर ली हों  
जैसे कई बलियों पर सिफाती तजल्ली ज़ाहिर हुई मसलन  
सरकार बा-यज़ीद बस्तामी ने फरमाया -

“वाह मेरी क्या शान है ”

और सरकार जुनैद बग़दादी ने फरमाया -  
 "मैंरे ज्ञुब्बे में अल्लाह के सिवा कुछ नहीं है"  
 इस मकाम पर अजीब - अजीब बारीक  
 गहराईयाँ हैं जिन्हें सूफियों ने बयान किया है इन गहराईयों की  
 तफसील बहुत बड़ी है !

तरबियत में लगाव बहुत जरूरी है शुरूआत  
 करने वाले को पहले अल्लाह तआला और नबी करीम स.  
 अ.व. से कोई लगाव या प्यार नहीं होता इसके लिये इसे  
 कामिल मुर्शिद की सोहबत में रहना जरूरी है क्योंकि  
 शुरूआत करने वाले और कामिल मुर्शिद के बीच मोहब्बत  
 और लगाव होता है क्योंकि दोनों बशर हैं इसी तरह जब  
 सरकारे दो आलम हयात जाहिरी में थे तो किसी और की  
 तालीम और तरबियत की जरूरत नहीं थी मगर जब आलमे  
 आख़रत की तरफ चले गये तो ताल्लुक की सिप्त कट गयी  
 और आप तन्हाई और कोरापन के मकाम पर पहुँच गये इसी  
 तरह जब औलिया और आख़रत को रहलत फरमा जाये तो  
 इन की राहनुमाई किसी को मंजिले - मकसूद तक नहीं पहुँचा  
 सकती अगर तू अकलमन्द है तो इसे समझने की कोशिश  
 कर और अगर एसा नहीं तो फिर नूरानी रियाज़त के जरिये  
 तरबियत हासिल कर जो नप्सानियत पर ग़ालिब आ जाये  
 क्योंकि अकल मन्दी नुरानियत से हासिल होती है ना कि

जूल्मानियत से और इसलिये के नूर सिर्फ इस जगह से आता है जो करीब हो और रोशन भी हो – बस शुरू करने वाले की साहबे मज़ार वली से कोई लगाव या मोहब्बत नहीं है !

एक कामिल वली जब तक इस दुनिया में है शुरूआत करने वाले को उस से एक लगाव है क्योंकि इस के दो पहलु हैं जिसमानी लगाव और रूह की तन्हाई क्योंकि वो पुरी विरासत रखता है बस इसी रुहानियत की वजह से कामिल मुर्शिद को नबी करीम स.अ.व. की मदद लगातार पहुँचती रहती है और वो इससे दुसरे लोगों को फैज़ और पहचान करता रहता है इसे समझे इससे आगे गहरा राज़ है जिसे सिर्फ पहचान हो गई जिनको अल्लाह की वो ही समझ सकते हैं पाक रब ने फरमाया –

“सारी इज्ज़त तो सिर्फ अल्लाह के लिये है उसके रसुल के लिये है और इमान वालों के लिये है”!

{‘सुरह मुनाफेकून ٦٣  
आयत ٨’}

जिसके अन्दर रूह के सीखने का तरीका ये है के रूहे जिसमानी सबसे पहले जिसमें सीखती है फिर रूहे रवानी हकीकत के दिल में तरबियत पाती है इसके बाद रूहे सुल्तानी जान में तरबियत पाती है फिर रूहे कुदसी है जो राज़ में तरबियत पाती है ये राज़ अल्लाह तआला और बन्दे के बीच रिश्ता है यही हक और बन्दे के बीच बयान है

क्योंकि ये अल्लाह का राज़ जानने वाली है और उस से ख़ास ताल्लुक रखती है ! रहा ख़ाब जो बुरी आदतों से ताल्लुक रखता है ये सिफत नफ्से अम्मारा की मिसाली सुरत हो या नफ्से लब्बामा की तो ये दरिद्रों की सुरत में सामने आती है मसलन चीता - शेर - भेड़िया - कुत्ता - ख़ंजीर - लोमड़ी - बिल्ली - साँप वगैरा ये चीज़े ख़ाब में नज़र आये तो समझ लेना चाहिये बुरी आदतें हैं और फिर इन चीज़ों को ख़ाब में देखने वाले को अपनी आदतें बदलना जरूरी है !

चीता खुदपसन्दी और अल्लाह तआला पर तकब्बुर करने की सिफत की मिसाली सुरत होगा शेर तकब्बुर और अल्लाह की मख़्लूक से अपने आप को बड़ा समझने से ताल्लुक रखता है रीछ का ताल्लुक सिफते गज़ब और अपने से छोटो पर जुल्म से है भेड़िया हराम - दुनिया पाने के लालच और उसके लिये कहर और गज़ब को ज़ाहिर करता है !

**ख़ंजीर :** कीना - हसद - जिस्मानी हवस की निशानी है !

**ख़रगोश :** ख़ाब में देखना, ख़यानत - दुनिया का मकर - फरेब का पता देता है ! लोमड़ी भी कभी- कभी ये ही निशानी ज़ाहिर करती है लेकिन ख़रगोश ज्यादा ग़फलत की निशानी है मिलावट है !

**तेंदुआ :** जहालत - इज्जत चाहना और जायदाद से लगाव की निशानी है !

**बिल्ली** : कंजुसी और निफाक - फर्क रखने को ज़ाहिर करती है !

**साँप** : गाली - ग़ीबत चुगली - झुठ जैसी बुरी आदतों की निशानी है !

**बिच्छु** : सब के सामने लोगों की बुराई बयान करना - चुगलखोरी की निशानी है !

**धेढ़** : छुप कर अपनी जबान से दुसरों को तकलीफ देने की निशानी है !

खाब में इन चीजों को देखने के कभी - कभी मिसाली नहीं हकीकत के मायने भी होते हैं जिन्हें सिर्फ हकीकत समझ लेने वाले ही समझते हैं !

साँप कभी ज़ाहिरी दुश्मनी को ज़ाहिर करता है ! जब मुरीद देखे के बो किसी नुकसान देने वाली चीज़ से लड़ रहा है और उस से जीत नहीं पा रहा तो इसका मतलब है बुरी आदते छोड़नी है अन्दर से पाक होना है अगर मुरीद ये देखे के बो किसी नुकसान देने वाली चीज़ से जीत गया है उस पर हावी हो गया है तो समझे के बेहतर है अच्छा है ! जिस तरह अल्लाह तआला ने फरमाया -

“ अल्लाह तआला ने दूर कर दी इन से इन की बुराई और सवाँर दिया इन के हालात को ” {‘सुरह मोहम्मद 47  
आयत 2

अगर मुरीद ये देखे के नुकसान देने वाली चीज़ इन्सान की शक्ति में बदल गयी है तो ये इस बात की निशानी है के अल्लाह तआला ने उसकी बुराईयों को नेकी से बदल दिया है जैसा अल्लाह तआला ने तौबा करने वालों के बारे में फरमाया –

“ मगर वो जिस ने तौबा की और इमान ले आया और नेक अमल किये तो ये वो लोग हैं बदल देगा अल्लाह तआला इन की बुराईयों को नेकियों से ”

‘सुरह अल फुरकान 25  
आयत 70

बस इस बार तो वो इन बुराईयों से छुटकारा पा गया मगर ग़ाफिल ना रहे क्योंकि ग़ाफिल होते ही दोबारा भटक जाने का खतरा है इसी लिये अल्लाह तआला ने हुक्म दिया है के इन्सान जब तक इस दुनिया में रहे – मना किये कामों से बचता रहे !

कभी एसा भी होता है के नफ्से अम्मारा काफिर की सुरत में, नफ्से लव्वामा यहुदी की सुरत में नज़र आता है और इसी तरह ये कभी दीन में नई बात पैदा करने वाले की सुरत में नज़र आता है !

# तुईसवाँ हिस्सा

## अहले तसव्वुफ

**तशीरीह**

तसव्वुफ अन्दर के पाक इलम को हासिल करने का नाम है इसकी बहुत सारी शाखे हैं लेकिन सब की मंजिल एक ही है अल्लाह तआला की पहचान हासिल करना, आगर किसी मुरीद के दिल में अन्दर से कोई और मकसद है तो वो मुरीद ही नहीं है बस नाम का मुरीद है और वो गुमराह और भटका हुआ माना जायेगा !

सच्चा और कामिल मुरीद तो ज़ाहिर के लफजों के मुताबिक बिना किसी हिसाब - किताब के जन्त में जायेगा !

“ दख़ालल जनता बिला हिसाब वल अज़ाब ”

अहले तसव्वुफ के बहुत गिरोह हैं और जिस तरफ एक मज़हब के लोग, दुसरे मज़हब को और एक फिरके के लोग दुसरे फिरके को बिदअती और काफिर कहते हैं इसी तरह गहराई को ना जान पाने लोग सिर्फ अलफाजों और लगे - बधें कानूनों को ही सब कुछ मान लेने वाले लोग कुछ तसव्वुफ के गिरोहों को अच्छा नहीं समझते जिन गिरोहों को अच्छा नहीं समझा जाता वो नीचे दिये गये हैं

- ① हलविया
- ② हालिया
- ③ औलियाईया
- ④ रामराखिया
- ⑤ हलबिंया
- ⑥ हूरिया

- अबाहिया ⑦
- मतकासलह ⑧
- मतजाहला ⑨
- वकफिया ⑩
- हामिया ⑪

इन गिरोहों में ज्यादातर ख़त्म हो चुके हैं बस  
इनकी कुछ रस्में कहीं - कहीं बाकी रह गई हैं !

हकीकत के सुफियों की जो अन्दर के राज़  
जान चुके हैं उनकी निशानी तो ये है के उन्हें देखकर नेक  
ख़ाल पैदा होता है शैतान इनकी सुरत में नहीं आ सकता  
क्योंकि ये लोग अल्लाह तआला की राह दिखाने वाले होते  
हैं और अपने मुरीदों को हकीकत की मंजिल तक पहुँचा देने  
वाले होते हैं इन की और भी निशानियाँ हैं जिन्हें सिर्फ कम  
लोग ही समझ सकते हैं !

# तौबीसवाँ हिस्सा

## मौत का वक्त

मुरीद को दूर अन्देश होना चाहिये उसे  
चाहिये के वो अपने कामों पर नज़र रखे और उन कामों के  
अन्जाम पर भी नज़र रखे जो उसका ज़ाहिरी हाल है उस पर  
ना इतराये ना घमण्ड करे मुरीद शुरू मैं अपने कामों के  
अंजाम से ग़ाफ़िल होता है जैसा पाक रब ने फरमाया -

“ बस नहीं बे खौफ होते अल्लाह की छुपी हुई  
तदबीर से सिवाय उस कौम के जो नुकसान उठाने वाली होती  
है ”

{ سुरु ۱۷  
آیات ۹۹

हदीस कुदसी है -

“ ए मोहम्मद गुनाहगारों को ये सुना दो के मैं बड़ा  
बख्शने वाला हूँ और सच्चों को ख़बरदार किजिये के मैं बहुत  
गैरत मन्द हूँ ”!

औलियाओं की करामात और हालत,  
काफिर से जो करिश्मे ज़ाहिर होते हैं उनसे हमेशा के लिये  
हिफाज़त में नहीं है हाँ नबियों को ये डर नहीं वो हमेशा हमेशा  
के लिये इनसे हिफाज़त में हैं !

सूफी हज़रात फरमाते हैं के सेहत में ख़ौफ हो और बीमारी में रज़ा की कैफियत, सरकारे दो आलम ने फरमाया -

“ मोमिन के ख़ौफ और उम्मीद का मुकाबला किया जाये तो दोनों बराबर होंगे ”

हाँ मौत के वक्त मोमिन को चाहिये के अल्लाह के फज़्लों करम पर ज्यादा उम्मीद रखे क्योंकि नबी करीम ने फरमाया -

“ तुम मैं से जब किसी को मौत आये तो जरूरी यानि वो सोचे के अल्लाह तआला की रहमत उसके गज़ब से बड़ी है और अल्लाह तआला की रहमत की कोई हद नहीं वो ही सबसे बड़ा रहम करने वाला है उसके कहर से उसके लुतफ की मांगे आजज़ी और नरमी अपनाये - गुनाहों पर शर्मिन्दा होता हुआ अपनी गलतियों को कुबूल करे और यकीन रखे के अल्लाह की जरूरत उसके गुनाहों को छुपा लेगी वो बहुत रहम करने वाला - करम करने वाला है उस के दरवाज़े से कोई ख़ाली नहीं जाता, वो दाता है सब पर करम करने वाला है !

ए अल्लाह - ए गुम हो गयी राहों पर चलने की हिदायत देने वाले ए गुनाहगारों पर रहम फरमाने वाले, तेरी रोशनी की कोई हद नहीं, ज़बान इसे बयान नहीं कर सकती, तेरा करम सबाल का मोहताज नहीं, ए मैरे अल्लाह सब्दुल मुरसल पर रहमतें नाज़िल फरमा इन औलादों पर और ख़ास असहायियों पर ए रब्बुल आलमीन - आमीन

तू वो चाहे तो हर तरफ उजाला कर दे  
तेज हवाओं को चरागों का दुशाला कर दे!

मैं मुसाफिर हूँ कड़ी धूप का मुझको क्या ग्राम  
तेरी रहमत-ओ-शफ़कत, जो मुझपे साया कर दे!

तोड़ कर आजा मेरे पास ये रिश्तों का हिसार  
या अपनी यादें भी लिए जा मुझे तन्हा कर दे!

फिर मेरे अश्क का काजल से लिपटकर गिरना  
डर है कहीं प्यासे को और ना प्यासा कर दे!

ये भी अब सूख गया है किसी साहिल की तरह  
कोई मौज आए मेरे कल्ब को बस नम कर दे!

गर उठे हाथ तो लब से नहीं दिल से माँग  
मेरे महबूब मेरा इश्क निराला कर दे!

तेरी तारीफ ब्याँ कैसे करूँ रब्बुल आलामीन  
तू अगर चाहे तो अदना को भी आला कर दे!

छीन ले मुझसे तू ये कासा-ए-दुनिया लेकिन  
हाँ इनायत मुझे कौसर का प्याला कर दे!

इस कमतरीन को महफिल से उठा दो यही बेहतर  
वरना दीवानी कहीं फिर ना तमाशा कर दे!!!

द्विष्टिया दीपिका खिंच  
(द्वीषियारपुर)

नूर की अपने रोशनी बख़्शी  
तेरा अहसान बन्दगी बख़्शी!

मैं रहूँ सुरख़ुरु तो इस ख़ातिर  
इस तबियत में सादगी बख़्शी!

जिस से मैं शुक्र तेरा करती हूँ  
ये जुबाँ भी तो हैं तेरी बख़्शी!

मेरे कदमों में थी कहाँ कुव्वत  
इश्क ने तेरे हिम्मत बख़्शी!

मुश्किलों “दीपिका” को हल करने  
जात-ए-मुश्दि, मुश्किल कुशा बख़्शी!!!

सदियों से होती आई है बहस वो है तो कहाँ है  
दूँह पाया नहीं उसको बुतखाने या मस्जिद में  
फिर भी सभी का दावा है वो यहाँ है वो वहाँ है  
गफ्तार में कोई जीता रहेगा कब तक  
खुदा को कोई कब तक ढैंडेगा मज़ाहब की किताबों में  
भूल गया इन्सान कि कुदरत ही रक्स-ए-खुदा है  
बंदापरवर तो खुद ही है बन्दे के अन्दर  
भूल बैठा है तू कि तू तुझमें ही निहाँ है!

सूफिया दीपिका सिंह  
(होशिरामपुर)

जहन उसका बे नूर हुआ है  
इल्म पर जो मगरुर हुआ है!

आखिर खुदा मजबूर हुआ है  
मेरा कहा फिर मंजूर हुआ है!

अपनी बदनामी की बदौलत  
कोई बहुत मशहूर हुआ है!

आईना दिखाने मे है जो माहिर  
शहर का वो मंसूर हुआ है!

शर्मसार वो होगा यकीनन  
ज़रा भी जो मगरुर हुआ है!

याद तेरी रेज़ आने लगी है  
जाखा इस तरह नासूर हुआ है!

बोलकर सच ईमान यहाँ भी  
सबके दिलों से दूर हुआ है!!!

दिल की दुनिया को जगमगाना है  
इश्क़ का एक दिया जलाना है!

किस्सा-ए-हीर तो पुराना है  
ये नए इश्क़ का ज़माना है!

रात भर खाब के हसीन मंजर  
देखना और मुस्कुराना है!

इसकी बुसअत न पूछिए मुझसे  
दिल मेरा इश्क़ का ख़जाना है!

जो बड़ा होकर छाँव दे सबको  
ऐसा पौधा मुझे लगाना है!

मुझको राही, राह-ए-मोहब्बत में  
मआरफत का दिया जलाना है!!!

सूफिया दीपिका सिंह  
(होशियारपुर)

कभी सोचता हूँ जिंदगी का क्या होता  
 जो वो ना राहों में यूँ मिला होता!  
 आती जाती रहती साँसे यूँ बेमक्सद  
 मगर मैं न इनमें कभी जिया होता!  
 हालात भी ऐसे थे दिल भी ऐसा  
 भीड़ में मैं भी खो गया होता!  
 वो तेरा मस्त नज़रों से पिलाना ज़ालिम  
 बा-खुदानपीतागर, तो मरगया होता!  
 देखा है दर्द को हमदम की तरह मैं  
 न देखता तो शायद यूँ ही गुज़र गया होता!  
 बनाता न गरचे राज़ झुट ही को अल्लाह  
 तो सब को ही ज़माने में मिल गया होता!  
 जिंदगी की किताब अधूरी ही रहती “आकाश”  
 गर मरने से पहले न मुर्शिद मिला होता!!!

सुनना चाहता है गर कोई इस सूफी का हाल-ए-दिल  
 तो आओ आज तुमसे कुछ बातें दो-चार करता हूँ!  
 जिसने खोला राज़-ए-हक़ इस तमाम दुनिया पर  
 उस मोहम्मद(ع.अ.ب.) पर जान कुर्बान करता हूँ।  
 आज ये बात सरे आम करता हूँ  
 मौला अली का प्यारा हूँ ये ऐलान करता हूँ!  
 हक़ और बातिल का सबाल हो तो है गर्दन हाज़िर  
 हक़ पर आँच गर जो आए हुसैनियत का निज़ाम रखता हूँ!  
 लिख दिया जिस मुर्शिद ने कल्ब पर अलिफ-लाम-मीम  
 उस मुर्शिद के नाम जिंदगी तमाम करता हूँ!!!

सूफी आकाश दाका  
 Mob : 9910587808

कौन कहता है ज़माने में खुदा नहीं मिलता  
दर हकीकत आदमी को अपना पता नहीं मिलता!

उलझा रहता है कशमकश में जिंदगी भर  
सजदे करता फिरता है छ्यालों में दर-बदर!

नहीं मालूम अपनी नफ्स परस्ती और बुत परस्ती का  
पाना चाहता है पता ठिकाना अल्लाह की हस्ती का!

ना जाने पेंच-ओ-ख़म इश्क और अल्लाह के दरम्यान  
मुर्दा दिलों पे कहाँ होते हैं ऐसे राज अयाँ!

जिसको देखा जाना उसी को अल्लाह माना भी "आकाश"  
कुर्बान जाए हज़ार जिंदगी मुर्शिद की चश्म-ए-ख़ास!!!

जुगनू चमकता फिरे रात ऐलान क्या है  
रोशनी चाहिए रस्मों से काम क्या है?

जिसे तू चुनकर कर दे दीवाना अपना  
वो तन्हा नाचे फिरे, सरे आम क्या है?

सर्द रातें बने शोलों का गुलिस्ताँ  
इश्क पर ज़माने का इल्ज़ाम क्या है?

लाखों मिट गए इक तेरी निगाह के सदके  
उज़ड़ के बस गए लाखों, और इनाम क्या है?

बा-इख्यार तेरा इस्म हर सूफी पर ता-महशर  
रहे कायम, और नियाम क्या है???

मिले जो इश्क से तबाह हो गए  
कुछ पागल कुछ बङ्का हो गए!

मयकश डूब कर रंग-ए-तौहीद में  
मैखाने की आब-ओ-हवा हो गए!

गुजरे जो कूचा-ए-मैखाने से  
लड़खड़ा के जलवा-ए-खुदा हो गए !

तराशे गए जो सोज-ए-हिज्र से  
वो बुत खुदा का आईना हो गए!

हटा जब गिलाफ-ए-हिजाब-ए-खुदी  
“आकाश” खुद हक के रू-ब-रू हो गए!!!

करार भी हम हैं जानिसार भी हम हैं  
लुटे हैं जो सरेबाजार वो तलबगार भी हम हैं !

गुलाम भी हम हैं शाह भी हम हैं  
बरबाद दस्त-ए-इश्क से हुए खाकसार भी हम हैं!

गुलाम भी हम हैं शाह भी हम हैं  
तौहीद के राज़दार भी हम हैं !

मोमिन भी हम हैं मुसलमान भी हम हैं  
शहीद-ए-करबला की यादगार भी हम हैं !

ऐलान भी हम हैं कलाम भी हम हैं  
पा गए जो राजे खुदाई वो असरार भी हम हैं !!!

सुफी आकाश डाका  
Mob. 9910567808

ज़ाहिद नमाज़ की तलाश क्या है ?  
तितली की उड़ान की बिसात क्या है ?

इबादत वो जो पंख लगा दे  
बाज़ की उड़ान की मिसाल क्या है ?

जो है, जिसमें है, है उसी को ढूँढ़ता  
गफ्तार से बढ़कर और बवाल क्या है ?

आइना-ए-तमाशा है ये सारी दुनिया  
बचना है इसी से और कमाल क्या है ?

मिटाता चला गया निशान-ए-राह  
“आकाश”को आकाश का ख्याल क्या है ???

खामोशियों से अक्सर मैं काम करता हूँ  
हर लम्हे में नई मैं शान रखता हूँ !

जो मेरे हुक्म से होकर आ पहुँचे मुझ तक  
सूली हर ज़माने मैं उसके नाम रखता हूँ !

ज़ाहिर भी मैं हूँ छुपा भी मैं ही हूँ  
बस एक परदा दोनों के दरम्यान रखता हूँ !

जो तैयार हो मिटने को बिना सोचो ख्याल के  
उसकी हस्ती को मिटा उसमें क्याम करता हूँ !

वाहिद इश्क ही हो जिसका पैगम्बर, अल्लाह और किताब  
बनाके सूफी उसमें रक्स सर-ए-आम करता हूँ !!!

सुणी आकाश डाका  
Mob. : 9910567808

जब तक यज्ञीदियत मौजूद है जर्मां पर  
हर एक हुसैनी के लिए एक करबला बाकी है !

एक साजिश जो सच के साथ सदियों से हुई  
उसका समझना ज़माने को अभी बाकी है !

शहीदाने करबला ने बहाया जो लहू  
उन कतरों से पैदा बाज़ की उड़ान बाकी है !

चूम कर मौत जिसने भी ज़िन्दा रखा दीन  
उननकशे-पाका अभी तो कर्ज़ चुकाना बाकी है !

मिली थी तोहफे में जो, वो सूली मंसूर को  
हुसैनियत इन्ही मिसालों से "आकाश" बाकी है !!!

रंगों में एक रंग तेरा भी है  
रोशनी के साथ एक सवेरा भी है !

यूँ तो चलता हूँ मैं तन्हा हर सफर  
हर रास्ते पर एक निशां तेरा भी है !

देखता हूँ दूर तलक जब माझी अपना  
मुस्तकबिल दिखाता है कोई मेरा भी है !

गुज़रता हूँ चेहरों की इक भीड़ से रोज़  
हर सूरत में अब आईना तेरा भी है !

ध्यास ने गुजर कर देखा सहरा से "आकाश"  
ये इश्क का समंदर अब मेरा भी है !!!

सुफी आकाश बाका  
Mob : 9910587908



*to know  
the real sufism...  
to come...*



# MARKAZE TASAWWUF

مرکزت صوف  
मरकजे तस्वुफ

**KHANQAH SHARIF**  
QADRIYA ★ SHUTTARIYA ★ CHISHTIYA

DARGAH HAZRAT KHWAJA QUTUBUDDIN BA-IKHTIYAR KHAKI Q.S.A.  
1011/E-1, WARD NO. 7, MEHARAVLI, NEW DELHI-110030

**BA-IKHTIYAR**  
THE SUFIS SOCIETY  
(Reg. No. 5375, Dist. Delhi/3010)  
MARKAZ-E-TASAWWUF  
DARGAH SHAJWAT WARD NO. 7  
MEHRAULI, NEW DELHI-110030



**MARKAZ-E-TASAWWUF**  
KHANKAH SHARIF  
QADARIA - SHUTTAMA - CHISHTIA

## मरकजे तसब्बुफ कन्दिरबुशान

मुझे हिस्सा लेना ही चाहिये! मुझे शामिल होना ही चाहिये!

मरकजे तसब्बुफ, दरगाह खाना कुतबुद्दीन बा-इख्यार काकी कु.सि.अ.  
नहरौली, नई दिल्ली-110030 में लगातार होने वाले इन कामों में।

- ① हर जुमेरात को होने वाली नियाज़-खत्म शरीफ और लंगर में !
- ② मरकजे तसब्बुफ से जो सुफिज़ की किलावें छप रही हैं जिनमें सरकार कुतबुद्दीन बा-इख्यार काकी कु.सि.अ. का उद्दूदीवान है इस काम में !
- ③ यहाँ आने वाले सभी अहले सिलसिला और मेहमानों का स्वेच्छा और ठहरने का बेहतरीन इन्तजाम हो सके इसके लिये !
- ④ मरकजे तसब्बुफ में मौजूद लायब्रेरी की तरक्की के लिये !
- ⑤ मरकजे तसब्बुफ में जो भी माहाना नियाज़ और लंगर होता है, उसमें हिस्सा लेने के लिये !
- ⑥ मरकजे तसब्बुफ का इरादा है कि गरीब-मिस्कीन और आने वाले मेहमानों के लिये एक छोटा अस्पताल खोला जाये इसके लिये !
- ⑦ सुफिज़ और इसानियत-हमदर्दी-मोहब्बत की तरक्की हो इसके लिये होने वाले सभी कामों के लिये !

शुक्रिया

**Syed Amiruddin**  
Account No. : 20211645260  
IFSC CODE No. : SBIN0008442  
State Bank of India  
J-20, SAKET, NEW DELHI-110017

**Syed Ghayassuddin**  
Account No. : 1125190876  
IFSC CODE No. : CBIN0281268  
Central Bank of India  
Mehrauli Branch

The collections from this token are meant to be used for the purpose of Mazar, Library, Library, printing of books on Sufism, monthly held grand Jalsa, providing better amenities for the pilgrims & all basic works for the development of Sufism planned & organized by "Markaz-e-Tasawwuf", Khanqah Sharif.

Please do not accept any token without an authorized stamp.

Markaz-e-Tasawwuf is an independent entity which has no other linkage or association with any other body/organization/entity.

